देहाती

अनुभूत योग संग्रह

(द्वितीय भाग)

जिसमें हर प्रकार के रोगों को जड़ से मिटाने वाले,
देश भर के सफल चिकित्सकों, संन्यासियों
हकीमों द्वारा प्रदत्त विशेषातिविशेष योगों
का उत्तम विधि से सविस्तार वर्णन
किया गया है।

❀

अनुवादक—
अमोलकचन्द्र शुक्ला

पृष्ठ संख्या ३२०

प्रकाशक—
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : २२००३०

मूल्य ५)] दूसरी बार [पाँच रुपया

प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

मुद्रक :
यादव प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार सीताराम, दिल्ली ६

प्राक्कथन

प्रिय पाठकों !

यह पुस्तक श्रीयुत मुहम्मद अब्दुल्ला-कृत सुविख्यात पुस्तक 'कंजुल मुजर्रबात' द्वितीय भाग का हिन्दी भाषान्तर 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' द्वितीय भाग है। पहला संस्करण हाथों हाथ बिक गया अब यह दूसरा संस्करण आप के हाथ में है। 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग का जैसा हार्दिक स्वागत चिकित्सकों, वैद्यों, हकीमों तथा पाठक जनों ने किया है, वह शब्द बद्ध नहीं किया जा सकता और उससे हमें जो प्रसन्नता और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, वह भी निस्सन्देह अकथनीय है। हम आप सब के चिर कृतज्ञ हैं। और आशा करते हैं कि इसी प्रकार यदि आप सब हमें प्रोत्साहित करते रहे, तो विविध पुस्तकों के प्रकाशन द्वारा हम आपकी सेवा चिरकाल तक करते रहेंगे। हमारे पास आए हुए पत्रों से कुछ बड़े ही मनोरंजक रहस्य प्रकट हुए हैं। उदाहरण के तौर पर एक सज्जन ने प्रथम भाग का ऊपर का पृष्ठ ही फाड़ दिया, ताकि कोई यह न जान सके कि

यह कौनसी पुस्तक है ? और कहीं जान कर वे भी उसे मंगाकर लाभ न उठालें। देखा भाइयो ! आपने बड़े बड़े कंजूस देखे होंगे, लेकिन ऐसा उदाहरण आपने सुना भी न होगा। लेकिन मैं समझदार भाइयों से यह आशा करता हूँ, कि जिन योगों को मैंने कैसे-कैसे यत्नों से प्राप्त करके आपकी सेवा में बिना किसी लोभ या कृपणता के भेंटकर दिए, उनसे अधिक से अधिक भाइयों को लाभ पहुंचाने के लिए आप इन पुस्तकों का अधिक से अधिक प्रचार करेंगे।

जिस प्रकार एक से एक बढ़कर उत्तम योग हमने प्रथम भाग में प्रकाशित किए थे, उनसे कहीं बढ़ चढ़कर इस द्वितीय भाग में संग्रहीत किए हैं। मुझे विश्वास है कि आप इसे भी उतना ही पसन्द करके हमारे परिश्रम और सेवा को सफल करेंगे।

एक विशेष सूचना—

हमारी हाल ही में प्रकाशित 'देहाती प्राकृतिक चिकित्सा' और 'संन्यासी चिकित्सा शास्त्र' नामक दो नई पुस्तकें, जो कि श्री अमोलचन्द्र जी शुक्ला, भूतपूर्व सम्पादक चान्दनी मासिक व चित्रकार साप्ताहिक दिल्ली, के सहयोग से हम आपको भेंट कर रहे हैं, जिस समय आप

देखेंगे, तो निश्चय ही प्रसन्नता से खिल उठेंगे। इन पुस्तकों में ऐसे २ अनमोल योग लिखे गए हैं, जिनके द्वारा एक भी पैसा व्यय किए बिना आप गांव २ में पाई जाने वाली प्राकृतिक वनस्पतियों और बूटियों द्वारा ही असंख्या रोगों की चिकित्सा करके अपूर्व ख्याति व धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ आवश्यक संकेत

शाही संचिका—एक प्रसिद्ध शाही हकीम की हस्त-लिखित संचिका है। हमने इस पुस्तक में उसके कुछ चुने हुए योग अङ्कित किए हैं और उनके नीचे (शा० सं०) लिख दिया है।

संन्यासी संचिका—एक अति वयोवृद्ध संन्यासी की हस्त-लिखित संचिका है, कुछ उत्तम योग उसके भी भेंट कर दिए हैं। संकेत रूपमें (स० सं०) लिख दिया है।

शताब्दी संचिका—यह संचिका हमारे एक मित्र ने जिला वेस्ट गोदावरी से भेजी है, जो एक शताब्दी से भी पुरानी है। फारसी भाषा में है। कुछ योग उसमें से भी लिए हैं।

——प्रकाशक

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या

देहाती

अनुभूत योग संग्रह

द्वितीय भाग

मस्तिष्क-रोग

मस्तिष्क का परिचय और शरीरांग साम्राज्य में उसका महत्वपूर्ण स्थान प्रथम भाग में लिख चुके हैं, अस्तु पुनः लिखना अनावश्यक सा है। हाँ उसके अतिरिक्त अन्य वर्णनीय विवरण व योग आदि यथा स्थान अङ्कित कर दिए जायेंगे। —लेखक

मानसिक-शक्तिहीनता

(स्वदेशी दवाखाना का विशेष गुप्त योग)

मूल कारण—इस रोग के मूल कारण प्रथम भाग में लिखे जा चुके हैं, उनके अतिरिक्त चाय पीना आदि भी प्रमुख कारण हैं। इनकी पहिचान के लिए कृपया प्रथम भाग देखें।

'मस्तिष्क-रक्षक'

इस सुप्रसिद्ध औषधि का विज्ञापन आप भी प्रायः जंत्रियों व पंचांगों में देखते होंगे। हम उसी विज्ञापन को पुनः आपके सन्मुख रख रहे हैं, ताकि आप समझ सकें, कि यह औषधि कितने रोगों के लिए कितनी अपूर्व गुणकारी है सम्भवतः उपर्युक्त औषधालय के अध्यक्ष इस बात पर मुझसे असन्तुष्ट हो जायें, किन्तु मैं अपने असंख्य पाठकों की प्रसन्नता के लिए उसे निःसंकोच भाव से अवश्य प्रकट करूंगा।

विज्ञापन का मुख्य सार

नया मस्तिष्क प्रदान करने वाली महौषधि बीसवीं शताब्दी का अद्भुत चमत्कार।

संसार को आश्चर्य-चकित कर देने वाला आविष्कार।

'मस्तिष्क-रक्षक'

जो कि स्मरण शक्ति बढ़ाने और मस्तिष्क को पुष्ट बनाने में अद्वितीय औषधि है। कुछ दिन के सेवन मात्र से वर्षों की विस्मृत बातें स्मरण हो आती हैं।

मानसिक परिश्रम करने वालों के लिए ईश्वरीय देन है।

मस्तिष्क की क्षीण शक्तियों को पुनः उत्पन्न करती है।

एक बार के सेवनोपरान्त ही स्वाध्याय के हेतु प्रेरित करेगी।

शरीर को स्फूर्त, हृदय को उल्लसित, और मस्तिष्क को गतिवान् बनाती है।

भूख को बढ़ाती है, पाचन शक्ति प्रबल करके भोजन को रक्त के रूप में परिणित कर देती है।

जीवन के लिए अमृत, स्वास्थ्य के लिए महौषधि, और मस्तिष्क के लिए ईश्वरीय देन है।

सतर्कता पूर्वक हृदयाङ्कित कर लीजिए—

कि यदि आपका मन व्याकुल रहता है, तो आपको शान्ति प्रदान करने वाली एकमात्र औषधि 'मस्तिष्क-रक्षक' है।

यदि आप शीघ्र ही किसी बात को भूल जाते हैं, तो 'मस्तिष्क-रक्षक' का सेवन नितान्त आवश्यक है।

यदि आप पूर्णतः सफल मनोरथ होना चाहते हैं, तो आपके लिए 'मस्तिष्क-रक्षक' से बढ़कर कोई औषधि नहीं।

'मस्तिष्क-रक्षक' मनुष्य मात्र के लिए उपयोगी है।

उत्तम मस्तिष्क ही संसार की श्रेष्ठतम सम्पत्ति है। 'मस्तिष्क रक्षक' ही आपको उस सम्पत्ति से माला-माल कर सकती है। विद्यार्थियों, वकीलों, सम्पादकों, व्याख्यान-दाताओं तथा अध्यापकों के लिए बड़े काम की वस्तु है।

(१) मस्तिष्क-रक्षक का योग

त्रिफला क्षार १ तोला, रजत भस्म १ तोला, दोनों को कांच या चीनी की खरल में घोंटकर मिला लें और ४ तोला शूगर ऑफ मिल्क (Suggar of Milk) मिलाकर शीशी में रख लें।

सेवन विधि—४ रत्ती औषधि १ तोला गाय के मक्खन में मिलाकर नित्य प्रातः सेवन करें। एक मास के निरन्तर सेवन से मस्तिष्क की सारी दुर्बलता दूर होकर स्मरण-शक्ति तीव्र हो जायगी, जैसा कि विज्ञापन में वर्णित है।

(२) त्रिफला क्षार की निर्माण विधि

हड़, बहेड़ा, आमला, प्रत्येक १-१ सेर लेकर जलाएं, और उनकी भस्म को एक स्वच्छ लौह पात्र में डालकर ८ गुना पानी मिलालें तथा २-३ दिन पड़ा रहने दें। प्रतिदिन २-३ बार वट वृक्ष की लकड़ी से हिलाते रहें। ३ दिन पश्चात् निथरा हुआ पानी स्वच्छ कलईदार पात्र में डाल कर मन्द २ आंच में पकावें, यहां तक कि सारा पानी जल कर क्षार ही शेष रह जाय। इस क्षार को चीनी के पात्र में डाल कर स्वच्छ जल से तीन बार निथार कर चीनी के प्याले में ही कोयलों की आग पर पकावें। सारा

पानी जलने के बाद श्वेत रंग की जो वस्तु रह जायगी, वही त्रिफला क्षार है। पूर्वोक्त योग में इसी क्षार को मिश्रित किया जाता है। इसे आप स्वयं बना लें।

(३) रजत भस्म की निर्माण-विधि

शुद्ध रजत-पत्र १ तोला, पीपला मूल गंठिया २४ तोला, अनार दाना ५ तोला, आक के पत्तों का जल यथावश्यक।

सर्व प्रथम ८ तो० पीपलामूल बारीक पीस कर आक के पत्तों के रस में गूंधकर चटनी के समान बनालें और उसके बीच में चाँदी के पत्र रख कर लपेट दें। तथा उसके ऊपर ५ तो० अनारदाना की चटनी बनाकर लपेट दें। सारांश यह कि पीपला मूल के ऊपर दूसरा लेप आनारदाने का करदें। अब उस पर कपड़ा लपेट कर ३ सेर उपलों के बीच में निर्वात स्थान पर रख कर आग लगादें। इसी विधि से ३ बार आग देने से उत्तम भस्म तैयार हो जायगी। यही भस्म 'मस्तिष्क रक्षक' में डाली जाती है। अथवा प्रथम भाग में रजत-भस्म बनाने की जो विधि निरुपित की गई है उस विधि से बनाकर भी प्रयोग कर सकते हैं।

(४) अक्सीर औषधि

यह योग मेरे कृपालु मौलवी अब्दुलरशीद जी ने

प्रदान किया है, जो कि प्रतिश्याय, नज़ला तथा मानसिक दुर्बलता को नितान्त दूर करने के लिए अक्सीर है। जो लोग सदैव ही नजला आदि में ग्रस्त रहते हैं, उनके लिए तो अद्भुत औषधि है। अवश्य सेवन करें।

योग—चाँदी का चूरा १ तो०, शुद्धपारा १ तोला। दोनों को कुरंड बूटी के १० तोला रस में भलीभांति खरल करके टिकिया बनालें और २ पतले सरावों में सम्पुट करके ३ सेर उपलों की निर्वात् स्थान में आंच दें। औषधि बन गई।

सेवन विधि—२ से ४ चावल तक की मात्रा मक्खन या मलाई में वा खमीरा मस्तिष्क पुष्टि (जिसका वर्णन आगे अंकित किया जायेगा) में मिला कर प्रयोग में लाएं। १५ दिन तक विधिवत् सेवन करने से मस्तिष्क पुष्ट होकर स्मरण-शक्ति विशेष बढ़ जाती है और नज़ला जुकाम को भी तुरन्त ठीक कर देती है। प्रमेह रोग के लिए भी अति लाभकारी औषधि है।

(५) पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण भी मस्तिष्क पुष्टि के लिए अति गुणप्रद तथा सुगमता से बन जाने वाला है। यह योग मेरे कृपालु मित्र हकीम आलम खां साहब, फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट लद्दाख ने प्रधान किया है।

योगः—सौंफ के चावल, धनिया के चावल, बड़ी इलायची के बीज, बादाम की कतरी हुई मिंगी, तथा मिश्री सब चीजें सम भाग लेकर मिलालें और डिब्बे में भरलें। चूर्ण तैयार है।

सेवन विधि—१ तो० चूर्ण रात्रि को सोते समय बिना भोजन किए सेवन करें और प्रातःकाल भी कुछ न खाएं। अपूर्व लाभ दृष्टिगोचर होगा।

(६) अपूर्व पौष्टिक शर्बत

योग—ब्राह्मी व शंखाहूली बूटियां प्रत्येक ५ तो०, इलायची श्वेत छिलके समेत १ तोला। इलायची को छिलकों सहित कूटकर तीनों दवाइयों को ५ सेर पानी में रात भर भिगो, प्रातः कलईदार देगची में डालकर मन्द २ आग पर पकावे। जब आधा पानी जल जाय, तो शेष को छान कर ५ सेर मिश्री डालकर, शर्बत बन जायगा।

सेवन विधि—ग्रीष्म ऋतु में प्रातः सायं पानी मिलाकर शर्बत के समान पियें। मस्तिष्क को पुष्ट करके स्मरण शक्ति बढ़ा देगा। स्वरभंग के लिए भी गुणप्रद है।

(७) खमीरा अम्बरी गावजवां

योगः—गावजवां ५ तोला, गावजवाँ पुष्प २ तो०

कतरी हुई अबरेशम २ तोला, धनिया, चन्दनश्वेत व लाल, दोनों बहमन, इस्तखुदुस, बावरंजबोया, तुख्यवालगू फरंज मश्क, दोनों तोदरी, प्रत्येक २-२ तोला; अम्बर अशहदब १ तो०, चांदी के वर्क १ तो०, मिश्री २ सेर, विशुद्ध मधु आधा सेर। इन सबका प्रचलित विधि से खमीरा बना लें।

सेवन विधि—५ माशा खमीरा अर्क गावजवां के साथ रात्रि को सोने से पूर्व सेवन करें। अद्वितीय मास्तिष्क पौष्टिक है।

विशेष सूचना—चूंकि यह यूनानी चिकित्सा का योग है, अतः इसकी औषधियां किसी यूनानी दवाखाने से ही खरीदें। साथ ही कुछ औषधियां विशेष मूल्यवान भी हैं, अतः जो सज्जन थोड़ी मात्रा में चाहते हों, वे बनी बनाई औषधि 'देहाती फार्मेसी, मु० पो० कासन, जि०-गुड़गावां (ई० पी०)' से मंगा सकते हैं। विश्वस्त औषधि प्राप्त होगी।

प्रतिश्याय (नज़ला व ज़ुकाम)

इस रोग का विस्तृत अर्थात् रोगोत्पादक कारण, लक्षण, औषधियां, पथ्य, आदि इसी पुस्तक के प्रथम भाग में लिख चुके हैं, उनके पुनः दुहराने की विशेष आवश्य-

कता नहीं । हां कुछ चिकित्सासिद्धान्त अवश्य वर्णनीय व चिर-स्मरणीय हैं, नोट करलें—

चिकित्सा सिद्धान्त—(१) नैत्यिक प्रतिश्याय के रोगी को मस्तिष्क को पुष्ट करने वाली औषधियाँ ही विशेष लाभ पहुंचाती हैं, अस्तु अन्यान्य उपचार व्यर्थ है।

(२) प्रतिश्याय की प्रारम्भिक अवस्था में छींक लाने वाली नस्य आदि का प्रयोग हानिकारक होता है, अतः उनका प्रयोग प्रतिश्याय पक जाने पर ही करना श्रेय-स्कर है।

(३) चिकित्सकों को यह विशेष रूप से स्मरण रखना चाहिये कि वह प्रतिश्याय के रोगी को दिन में, विशेष कर भोजन के उपरान्त, कदापि सोने न दें, अन्यथा चिकित्सा निष्फल होगी।

(४) नज़ला और प्रतिश्याय के रोगी को यदि अजीर्ण अथवा मैथुनाधिक्य की शिकायत हो तो सर्व प्रथम इनकी चिकित्सा करें, अन्यथा रोगी कदापि निरोग न हो सकेगा।

(५) नज़ला की आर्द्रता को अन्दर रोक देना अति हानिकर है। अतः प्रथम उसे निकाल कर तब रोकने की औषधि सेवन करानी चाहिए। इसीलिए हम पहिले आर्द्रता निकालने वाले योग और तदनन्तर रोकने वाले योग लिखेंगे।

(८) प्रतिश्याय नाशक चटनी

(आर्द्रता निकालने वाली)

योग—१ तो० लहसुड़िया जौकुट करके १ सेर पानी में पका कर उतार लें और उसमें ५ तो० अमलतास का गूदा भिगो दें, जब भली प्रकार मिल जावे तो छान कर १ तो० बादाम की गिरी कतर कर डालें और खूब घोटें। तदनन्तर पाव भर मिश्री मिलाकर मन्द मन्द अग्नि पर चाशनी बनालें और उसमें कतीरा, गोंद कीकर, और बाकला प्रत्येक ८ माशा पीस कर मिलालें और आग पर से उतार लें। तथा २॥ तोला असली बादाम तैल मिला कर चीनी या काँच पात्र में सुरक्षित रखें। प्रतिश्याय की आर्द्रता निकालने के लिये थोड़ी २ देर के अन्तर से दो एक दिन बराबर चाटें। सारी आर्द्रता निकल जायेगी। यह औषधि खांसी को भी अतीव लाभ पहुंचाती है।

(९) द्वितीय योग (खमीरा)

गावजवां के पत्ते १ तो०, गावजवां के फूल, बनफशा के पत्ते, उन्नाब, अबरेशम बारीक कतरा हुआ प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों को रात्रि के समय १॥ सेर पानी में भिगोदें और प्रातः छान कर १।

सेर बूरा मिला कर पकावें। जब खमीरा की चाशनी बन जाय तो रूमी मस्तंगी ५ माशा बारीक पीस कर मिला दें और उतार लें, खमीरा बन गया।

सेवन विधि—१ तो० खमीरा अर्क गावजवां के साथ दें। हर प्रकार के प्रतिश्याय व नजला के लिए अत्युत्तम है। कुछ दिनों तक निरंतर सेवन करने से नैत्यिक प्रतिश्याय भी मिट जाता है।

(१०) नए नज़ले की उत्तम वटी

यह योग शाही संचिका से उद्धृत किया गया है। जो कि नए प्रतिश्याय नज़ला तथा नैत्यिक सिरपीड़ा के लिए अतीव लाभकारी है।

योग—केशर ६ माशा, जायफल ६ माशा, बीज रहित मुनक्का १ तोला, अफीम दो रत्ती। सबको बारीक पीस कर शहद के साथ खरल करके चने के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—नित्य एक गोली पाव भर दूध के साथ भोजनोपरांत दें।

(११) विकृत प्रतिश्याय की उत्तम वटी

यह योग हमारे मित्र हकीम महबूब आलमखां फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट लद्दाख द्वारा प्रदत्त है जोकि बिगड़े

हुए प्रतिश्याय के लिए विशेष रूप से लाभकारी है यही नहीं खांसी जुकाम, कफ आदि सब रोगों के लिए रामबाण है ।

योग—बबूल का गोंद, मुलहठी का चूर्ण, निशास्ता, मिश्री प्रत्येक १-१ तोला । सबसे पहिले निशास्ता को सूखा ही भून लें, ताकि लाल हो जावे । फिर मुलहठी को छील कर तथा कूट कर निकाला हुआ चूर्ण मिश्री और गोंद मिला कर सूक्ष्म पीस कर मिलालें और दो बूँद पानी डाल भली प्रकार घोटें । फिर एक एक माशा की टिकियां बनाकर रखें । घन्टे २ के कालान्तर से एक २ टिक्की मुंह में रखकर चूसते रहें । एक दो दिन में ही नज़ला, खांसी आदि को पूर्ण लाभ हो जायगा ।

(१२) अनुपम कोष्ठबद्धता नाशक वटी

जो सज्जन प्रायः प्रतिश्याय नज़ला आदि से पीड़ित रहते हों, उनके लिए ये गोलियां सर्वोपरि औषधि हैं ३-४ दिन सेवन मात्र से नितान्त रोग मिट जाता है । किन्तु ये गोलियां केवल पित्तज प्रतिश्याय के रोगी के लिए ही हैं । यह योग श्री नूर साहब बोला द्वारा प्रदत्त है ।

योग—तिरवी, एलुआ, सत्त मुलहटी, गोंद कतीरा, के साथ सबको बराबर २ कूट छानलें और मिला कर तेल बादाम के साथ १-१ माशा की गोलियां बनालें ।

सेवन विधि—दो गोली सोते समय ताजा जल से खिलाएं। पूर्ण लाभप्रद है।

(१३) नज़लाहारी वटी

(यह योग भी शाही संचिका से लिया गया है)

योग—विशुद्ध मीठा तेलिया ६ मा०, जायफल, जावित्री, शिलाजीत, प्रत्येक ६ माशा; अफीम ३ माशा, केशर ३ माशा। सब को अर्क गुलाब में खरल करके चने के परिमाण की गोलियां बनालें।

सेवन विधि—हर तीन घंटे पश्चात् १ गोली दें। एक ही दिन में लाभ हो जायगा।

(१४) एक और प्रशंसनीय वटी

यह योग हमें परम मित्र व कुशल चिकित्सक डा० विशनसिंह जी ने प्रदान किया है। आप के औषधालय में रोगियों की भीड़ लगी रहती है। मुझ से उनका कोई छुपाव नहीं है। अस्तु अपने विशेषातिविशेष योग वह हमें बता देते हैं। प्रतिश्याय व नजला को जड़ से मिटा देने के लिये यह योग सर्वोत्तम है प्रतिश्याय के नैत्यिक रोगी इसे बनाकर अवश्य सेवन करें और एक दो सप्ताह में सदा के लिये रोग मुक्त हों।

योग—श्वेत संखिया, मीठा तेलिया व शिंगरफ ये तीनों शुद्ध की हुई ६-६ माशा लेकर बारीक पीस लें और फिर धतूरे के बीज, रेवन्दचीनी, अफीम, केशर, लौंग, जायफल, जावित्री, सोंठ प्रत्येक ६ माशा, कुटकी २ तोला मिलाकर दो दिन अदरक के रस में तथा १ दिन पान के रस में क्रमशः खरल करके काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—नित्य १ गोली प्रातःकाल बिना कुछ खाये चाय के साथ दें। दमा, खांसी, प्रतिश्याय, नज़ला आदि के लिए अनुपम वटी है। दो सप्ताह के निरंतर सेवन से पुराने से पुराना प्रतिश्याय जड़ से नष्ट हो जाता है।

(१५) नैत्यिक प्रतिश्याय के लिए विशेष योग

आरम्भ में भी हम बता चुके हैं, कि नैत्यिक प्रतिश्याय के लिए मस्तिष्क पुष्ट करना ही सर्वोत्तम उपचार है। जब मस्तिष्क शक्तिशाली होगा, तो प्रतिश्याय स्वतः ही नष्ट हो जायगा। अस्तु यह औषधि प्रतिश्याय नाशक होने के साथ ही मस्तिष्क को पुष्ट और स्मरण-शक्ति को तीव्र करने में भी अद्भुत गुणकारी है। योग नं० ४ 'अक्सीर औषधि' देखिए।

प्रतिश्याय नाशक नस्यावली

यह बताया जा चुका है, कि प्रतिश्याय व नज़ला की प्रारम्भिक अवस्था में नस्य हानिकर सिद्ध होती है, किन्तु पक जाने पर नस्य-प्रयोग द्वारा आर्द्रता निकाल देना अति उत्तम होता है। अस्तु हम नीचे कुछ ऐसी ही विशेष नस्यों के योग अङ्कित करते हैं, जो कि प्रतिश्याय की आर्द्रता को शीघ्र ही निकाल देते हैं।

(१६) राजसी नस्य

यह अपूर्व नस्य प्रतिश्याय के अतिरिक्त शिर-पीड़ा को भी त्वरित लाभ पहुंचाती है।

योग—कायफल १ तोला, कश्मीरी पत्र १ तोला, छोटी इलायची के बीज ३ माशा, कलौंजी, छड़ छड़ीला, कचूर, श्वेत चन्दन का बुरादा, लाल चन्दन का बुरादा, कपूर, नौशादर प्रत्येक ३-३ माशा, कटेरी ४ माशा।

निर्माण-विधि—सब औषधियों को सूक्ष्म पीस कर कपड़ छन करलें। बस राजसी नस्य तैयार है। आवश्यकता के समय सूंघ कर लाभ उठावें।

(१७) द्वितीय नस्य योग

कायफल १ तोला बारीक पीसकर कुछ बूंद 'अमृत धारा' की डाल रगड़ लें और फिर काम में लायें।

(१८) शिर-पीड़ा नाशक सर्वोत्तम योग

शिर-पीड़ा की विविध किस्में और अनेक योग भी प्रथम भाग में लिखे जा चुके हैं, तथापि यह योग हर प्रकार की शिर-पीड़ा को अतीव लाभकारी सिद्ध हुआ है।

योग—मुरस (बोल), अफीम, खुरासानी अजवायन, कपूर, केशर प्रत्येक ५ माशा, कुन्दर Coceina Indica) गिले अरमनी प्रत्येक ६ माशा। सबको बारीक पीसकर थोड़ी देर तेज़ सिरका में खरल करके टिकियां बनालें। आवश्यकता के समय सिरके में घोलकर मस्तक पर लेप करें। तत्काल आराम हो जायगा। भिड़, ततैया, बिच्छू आदि के विष को दूर कर देता है।

शिर पीड़ा प्रतिश्याय व नजला के लिए
(१६) एक प्रशंसनीय नस्य

यह अद्‌भुत नस्य मस्तिष्क सम्बन्धी समस्त रोगों के लिये राम बाण है।

योग–केशर काशमीरी, कायफल, काशमीरी पत्र, श्वेत कनेर पुष्प, कटेरी के बीज, अकरकरा, सब बराबर २ लेकर बारीक पीस लें और रोगी को सुंघाएं। तत्क्षण आराम होगा। यह औषधि दन्त पीड़ा को भी आराम कर देती है।

(२०) आधाशीशी का उत्तम योग

यह योग एक ऐसे चिकित्सक महोदय से प्राप्त हुआ है, जो स्वयं एक बार आधाशीशी पीड़ा से ग्रस्त हो गए थे। उन्होंने बताया कि संयोगवश वह मोगा गए, वहां एक लाला जी इस रोग के सुविख्यात चिकित्सक थे। जब ये महाशय उनके पास चिकित्सार्थ पहुंचे, तो उन्होंने भी बताया कि कुछ दिन पूर्व वे लाला जी भी १५ वर्ष से इसी रोग से पीड़ित थे। अचानक एक सन्यासी ने उन्हें यह योग बताया। प्रयोग करने पर केवल ३ दिन में ही उनका रोग समूल नष्ट हो गया। तदनन्तर लगभग २०० रोगियों पर परीक्षा करके उन्होंने उन्हें पूर्ण लाभ

पहुंचाया। नीचे हम पाठकों की सेवा में वही योग उपस्थित करते हैं जिससे पुराने से पुराना आधाशीशी रोग ३ दिन में नितान्त दूर हो जाता है।

योग—पोस्त के अनपछ, नए डोडे २ तोले, गेहूँ की भूसी ४ तोले, पुराना गुड़ ४ तोले। सबको उबाल कर सोते समय पिलाया करें। तीन दिन में पीड़ा का नाम मात्र भी न रह जायगा।

अनन्त वात

यद्यपि अनन्त वात पीड़ा (दर्देउल) के विशेषतम योग इस पुस्तक के प्रथम भाग में लिखे जा चुके हैं तथापि रोग वृद्धि से त्रस्त जनता को अभी और भी योगों की आवश्यकता है। अतः एक अनुभूत लेप का योग अंकित कर रहे हैं जो कि ईश्वरानुकम्पा से अद्भुत लाभकारी है।

(२१) अनन्त वातहारी लेप

योग—मीठा तेलिया, हीरागुग्गुल, अफ़ीम पका हुआ तीनों को बराबर २ लेकर धीरे २ दवा पिलाते जांय और खरल करते जांय, स्वतः ही नरम हो जायगा। फिर लम्बी लम्बी वत्तियां बनालें।

सेवन विधि—आवश्यकता पड़ने पर पत्थर पर घिस कर एक कागज़ लपेट करके रोगी की कनपटी पर

चिपका दें। यदि ईश्वर की कृपा हुई तो १५ मिनट में पीड़ा शांत हो जायगी।

(२२) एक आश्चर्यजनक चुटकला

इस चुटकुले की हमारे एक चिकित्सक मित्र बड़ी प्रशंसा किया करते थे। बड़े दिनों तक घोर प्रयत्न करने के पश्चात् यह योग मुझे प्राप्त हो ही गया। अस्तु सेवार्पित है।

योग--तूतिया भूनकर व पीसकर रख लें, और रोगी का गला कपड़े से इतना रगड़ें कि कनपटी की रगें फूल आएं। फिर जो तड़पती हुई रग हो, उस पर १ रत्ती दवा रख कर एक बूंद पानी डालें। ऐसा करने से रोगी चीख उठेगा। किन्तु कुछ ही मिनटों में छाला उत्पन्न होकर पीड़ा शान्त हो जायगी।

(२३) भ्रू पीड़ा के लिए टोटका.

यह योग उस समय अक्सीर सिद्ध होता है, जबकि अन्य औषधियां निष्फल हो जांय।

योग--सोडाबाई कार्ब ४ ग्रेन, क्वीनाइन सल्फास १० ग्रेन, एन्टीफैब्रीन ३ ग्रेन। सब औषधियां मिलालें और सूर्योदय से २ घन्टे पूर्व एक पुड़िया खिला दें। इसी

प्रकार ३ दिन खिलाने से पीड़ा रुक जायगी। प्रायः दो ही दिन में रुक जाती है।

भ्रू-पीड़ा और आधाशीशी के लिए

(२४) अभूतपूर्व वटी

ज्वरघ्न गुटी—जिसका योग ज्वर प्रकरण में आएगा, भ्रू पीड़ा और आधाशीशी के लिए अभूत पूर्व वटी है।

सेवन विधि—तीन गोलियां जलके साथ पीड़ा आरम्भ होने से दो घंटे पूर्व दें, और ३ गोलियां एक घंटे पश्चात् पुनः दें। सम्भवतः प्रथम दिवस ही पूर्ण आराम हो जायेगा, नचेत् दूसरे दिन पुनः इसी प्रकार सेवन कराएं।

शिर पीड़ा, नजला, प्रतिश्याय के लिए—

(२५) अक्सीर गोलियां

फेनस्टीन ३ ग्रेन, कुनैन ३ ग्रेन, कीकर का गोंद ४ ग्रेन, सबको खरल करके चने के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१ गोली पीड़ा आरम्भ होने से पूर्व गर्म पानी के साथ खिलाएं। प्रथम दिन नहीं तो दूसरे दिन अवश्य लाभ हो जायेगा।

(२६) भस्म फिटकरी

चिकित्सक समुदाय में यह भस्म प्रतिश्याय नज़ला नए व बिगड़े हुए दोनों के लिए अक्सीर समझी जाती

है । इससे प्रायः शीतकाल में ही प्रतिश्याय ग्रस्त रहने वाले रोगी भी ३-४ दिन के सेवन मात्र से रोग मुक्त हो गए । इसके अतिरिक्त हर प्रकार के ज्वर यथा तिजारी, चौथिया, आदि के लिए भी रसायनोपम है । इसका योग देहाती अनुभूत योग संग्रह के प्रथम भाग में योग नं० २८ देखें ।

उन्माद-रोग (जनून)

यह एक अद्भुत बेढंगा सा रोग है । रोगी शारीरिक रूप से तो पूर्ण स्वस्थ सा रहता है, किन्तु मानसिक रोग में ग्रस्त हो जाता है, कभी २ अपने को बादशाह समझता है, और उसी उन्मादवश अनुचित कर्म कर बैठता है । जिसके दुष्परिणाम से आप पूर्ण परिचित होंगे ही, अतः विशेष न लिख कर कुछ विशेष योग लिखूं ।

चिकित्सा सिद्धान्त—इसकी चिकित्सा प्रारम्भिक काल में हो जाना ही श्रेष्ठ है, अन्यथा यह रोग मरणोपरांत ही जाता है । पहले हम कुछ विशेष उपाय लिखते हैं, जो कि प्रायः चिकित्सा से अधिक आवश्यक हैं । तदनन्तर कुछ विशेष लाभकारी योग लिखूंगा । ईश्वर कृपा से वे रोगी को पुनः जीवन प्रदान करेंगे । किन्तु निम्न उपाय विशेष स्मरणीय हैं ।

उन्माद रोगी के लिए महत्वपूर्ण उपाय

१. यदि रोगी में रक्त की अधिकता हो, तो फसद खुलवा कर यथोचित रक्त निकलवा देना चाहिए।

२. नित्य प्रातःकाल सिर पर धार बांध कर दो घंटे नहलाना आवश्यक है।

३. उसे सदैव स्वच्छ व श्वेत रंग के कपड़े पहिनाने चाहिए।

४. उच्च कोटि का इत्र लगाए रखना विशेष लाभकारी होगा।

५. उत्तम उद्यानों में भ्रमण करना व आश्चर्यजनक वस्तुएँ दिखलाने से भी परम लाभ पहुंचता है।

६. तर्क पूर्ण ग्रन्थ व दर्शनशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें अध्ययन कराना जिनसे बुद्धि पर जोर पड़े, विशेष हितकर है। कभी २ तो इन विधियों से ही उन्माद का रोगी पूर्णतया ठीक हो जाता है। उदाहरण स्वरूप एक सत्य घटना अंकित करते हैं।

जर्मन डाक्टर का अनूठा प्रयोग

कांच के कारखाने में काम करने वाला एक व्यक्ति इस रोग में ग्रसित हो गया और स्वयं को कांच का ही समझने लगा। उसे हर समय यह भय रहता था कि मैं

जरासी ठेस लगते ही चूर-चूर हो जाऊँगा। अतः बड़ी सतर्कता से अपने को रखता था। अनेक प्रकार की चिकित्सा कराई गई, किन्तु उसका यह उन्माद-भय दूर न हुआ।

अन्त में उसके सम्बन्धी एक प्रसिद्ध डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर उसकी दशा का ध्यान से अवलोकन करके व उसके विषय में यह सारी कहानी सुन कर उसे अलग मकान में लेगया और वहां जाकर रोगी के हाथ को जोर से झटका दिया। वह एक दम चीख उठा--मेरी बांह कांच की है। इस तरह झटकने से टूट जायगी। किन्तु डाक्टर ने उसके चिल्लाने पर ध्यान न देकर दूसरी बार ५-७ डन्डे उसके लगाए। रोगी चिल्ला २ कर जब मौन हुआ तो डाक्टर उससे कहने लगा-कि अब बता तेरा शरीर कांच का है या मांस का? अगर कांच का होता तो अब तक इतने डन्डों में सुरमा बन गया होता। बस रोगी के दिमाग से तत्काल ही भ्रम निकल गया और वह ठीक हो गया। इसी प्रकार के अनेक उदाहरणों ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि रोगी के भ्रमात्मक विचारों को बदल देना ही इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा है।

विशेष सूचना--उन्माद रोगी को भयानक घटनायें सुनाने और बार २ बुलाने व अधिक बात करने से रोग

बढ़ जाता है। तथा ही उसे काले रंग की कोई भी वस्तु प्रयोग कराना भी हानि कर होता है।

एक प्रशंसनीय योग

यह योग श्रीमान् पं० गोवर्धनदास जी जोकि इस रोग के एक विशेष चिकित्सक व 'अक्सीरेजनून' के अन्वेषक हैं, ने प्रदान किया है। यह वही सुविख्यात योग है, जिसके कारण पण्डित जी की लगभग सारे देश में प्रख्याति हुई है।

लोग यह सोच नहीं सकते थे कि पंडित जी 'अक्सीरे जनून' जैसी महान औषधि का योग किसी को बता भी देंगे, किन्तु कृपणता को समूल उखाड़ने वाला दृढ़ प्रतिज्ञ लेखक, और इस योग को साहस और चातुर्य से प्राप्त करके जनता जनार्दन की सेवा में अर्पण कर देना सम्मुक्तकंठ प्रशंसनीय है। बनाकर इससे अपूर्व लाभ उठाइये तथा लेखक व पंडित जी को शुभाशीष दीजिए, जिनके हृदय-कोष का यह बहुमूल्य रत्न है।

(२७) 'अक्सीरे जनून' (उन्माद की महौषधि)

योग—कूठ मीठी व कस्त मीठी, असगन्ध नागौरी, अजमोद, काला जीरा, श्वेत जीरा, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली छोटी, पाढ़ा, सेंधा नमक, शंखाहूली बराबर २

लेकर बारीक पीसकर छान लें। फिर इस छनी हुई औषधि के बराबर पिसा हुआ बच मिला कर दस बार हरी ब्रह्मी के रस की भावना देकर शीशी में रख लें।

सेवन विधि---२ माशा औषधि शुद्ध मधु के साथ चटाएं। उष्ण व शुष्क पदार्थों से परहेज़ रखें। उन्माद, माली खोलिया, जनून आदि के लिए सर्वोपरि प्रभाव कारक औषधि है।

(२८) उन्माद-रसायन

यह योग स्व० हकीम अंसारी साहब देवरिया निवासी ने हमें इस पुस्तक में प्रकाशनार्थ भेजा था। किंतु खेद की बात है, इस पुस्तक का यह द्वितीय भाग प्रकाशित होने से पूर्व ही वे इसे देखने की लालसा हृदय में छुपाए हुए इस असार संसार से विदा हो गए। ईश्वर उनकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे। अंसारी साहब एक कुशल चिकित्सक थे। उनका योग यह है—

योग—विलायती उशवा २ तोला, आधा सेर उबलते हुए पानी में डालें, जब आधा पाव जल रह जाय, तो उतार कर छानकर रख लें।

पोटाशियम ब्रोमाइड रोगी की अवस्थानुसार २० से ४० ग्रेन तक मिलावें। और उसमें से २-२ तो० प्रातः मध्याह्न व सायङ्काल पिलाएं। इसी प्रकार एक या दो सप्ताह तक पिलाते रहें। उन्माद रोग के लिए अत्युत्तम योग है। इसके सेवन से रोगी को प्रतिदिन आराम की नींद आती है, और क्रमशः स्वास्थ्यय लाभ हो जाता है।

(२६) उन्मादहारिणी बूटी

इस अद्भुत प्रभावकारी औषधि की चर्चा भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी पहुंच चुकी है। यह औषधि हिन्दुस्तानी दवाखाने से ८ आने प्रति मात्रा के भाव से धड़ाधड़ विक्रय हो रही है। असंख्य चिकित्सक इसका योग जानने के लिए उद्विग्न हैं। लीजिए हमने इसे भी प्राप्त कर ही लिया और आपकी सेवा में अर्पित कर रहे हैं। यथार्थतः यह एक बूटी है, जो कि बंगाल और बिहार प्रान्तों में 'छोटी चन्दन' के नाम से प्राप्य है। प्रारम्भ में इसको चूर्ण रूप में ही उपयोग में लाते थे, किंतु अब कुछ चिकित्सकों ने इसका सत भी प्राप्त कर लिया है, जिसका अभी तक हमें योग प्राप्त नहीं हो सका। हां प्रथम विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। यह भी परम लाभकारी है।

सेवन-विधि—'छोटी चन्दन' बूटी को छाया में सुखा-कर बारीक पीस लें और २-२ माशा प्रातः सायं ताज़ा पानी

से खिलाएं। ईश्वर कृपासे यह बूटी नकेवल उन्माद, अपितु अपस्मार, हिस्टीरिया, आदि के लिए भी विशेष लाभ-दायक है। इससे भी रोगी को पोटाशियम ब्रोमाइड की भांति अच्छी तरह नींद आने लगती है और नितांत हानि रहित होने के कारण उससे भी अधिक उत्तम है।

वर्जित वस्तुएँ—प्याज़, लहसुन, मसूर की दाल, मटर, आलू, गोभी, अरवी आदि न खिलाएं।

पथ्य—चने की दाल का पानी, हरी तरकारियां, कुल्फा, सेव, अगूर आदि।

अर्द्धाङ्ग व अर्दित रोग

रोग परिचय—अर्द्धाङ्ग रोग में रोगी का आधा शरीर नितांत जड़वत् निश्चेष्ट हो जाता है और अर्दित रोग में मुंह एक ओर को टेढ़ा हो जाता है। चूंकि इन दोनों रोगों के कारण और चिकित्सा एक ही हैं, अतः एक साथ ही वर्णन किया जाता है।

मूलकारण—ये दोनों रोग प्रायः शीतकाल में अधिक हुआ करते हैं प्रायः शीत प्रकृतिवाले दुर्बल और घृद्धजन ही, जिनके शरीर में कफ़ बढ़ जाता है, इस रोग में ग्रसित होते हैं। अधिकतर यह रोग शीत वायु के लगने तथा शीतल जल पीने से हो जाता है।

विशेष सूचना—यदि सिक्ता के पश्चात् अर्द्धांङ्ग हो, तो रोगी के स्वस्थ होने की आशा कम ही रह जाती है।

चिकित्सा-सिद्धान्त

१—जब रोगी अर्द्धाङ्ग वा अर्दित में ग्रसित हो जाय तो सर्व प्रथम उसे भोजन देना बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। केवल शहद में पानी मिलाकर गर्म करके पिलाना चाहिए। एक सप्ताह तक निरंतर यही विधि क्रम रखें। यदि बीच में भूख अधिक ही सताए, तो कबूतर या बटेर का शोरबा देना चाहिए।

२—अर्द्धाङ्ग व अर्दित रोग में ४० दिन तक कैसी भी नस्य प्रयोग कराना सर्वथा हानिकारक है।

३—रोगी को बराबर बन्द कमरे में रखना चाहिए। हवा और प्रकाश दोनों ही उसके लिए हानिकारक होते हैं।

(३०) अर्दित का सरल चुटकुला

जायफल १ नग उसके मुख में रखवाकर अंधकारमय कमरे में रखें और २-३ बार विशुद्ध मधुजल मिला कर गर्म करके पिलाएं। अधिकांशतः बिना किसी चिकित्सा के ही रोगी कुछ दिन में ठीक हो जायगा। अति सरल व अनुभूत योग है।

चिकित्सा-सिद्धान्त--इन दोनों रोगों में खाद्य औषधियां व अभ्यङ्ग (मालिश) औषधियां, दोनों का ही साथ २ प्रयोग करने से शीघ्र ही लाभ होता है। नीचे पहिले कुछ खाद्य औषधियों के विशेष योग अंकित किए जाते हैं, फिर मालिश के। आवश्यकता पड़ने पर दोनों ही सेवन कराएं।

(३१) अर्द्धाङ्गहारिणी वटी

ये गोलियां बनाने में अति सुगम और लाभ में उत्तम हैं इनका योग जिला मुज़फ्फ़रनगर के एक खानबहादुर साहब ने प्रेषित किया था। स्वयं मैंने अनुभव करके इसे अद्भुत गुणप्रद पाया है। और अनेक दयनीय रोगियों को इससे अल्पकाल में ही स्वस्थ किया है। वस्तुतः अपूर्व वटी है।

योग--अकरकरा, कबाबचीनी, श्वेत खशखश, श्यामखशखश, मूसली श्वेतव काली दोनों, पीपल, जावित्री सेमल मूसली, कुलिंजन, लौंग, असगन्धनागौरी, बहुफली दारचीनी, जायफल, बादाम की मींगी, पिस्ता प्रत्येक १-१ तोला। सबको कूट पीसकर शहद के साथ जंगली बेर के परिमाण की गोलियां बनालें और सुरक्षित रखें।

सेवन विधि--एक से २ गोली तक प्रतिदिन सेवन

कराएं और ऊपर से बिना दूध की चाय शहद से मीठी करके पिलाएं। थोड़े दिनों में ही रोगी को पूर्ण लाभ हो जायगा।

(३२) अत्युत्तम औषधि

यह औषधि तनिक परिश्रम से बनती है, किन्तु इसकी समता की अन्य औषधि नहीं है। कतिपय मात्राएं ही रोग नाशन के लिए पर्याप्त हैं। अर्द्धाङ्ग के अतिरिक्त, प्रतिस्याय, नजला, वाजीकरण, मन्दता, शीघ्रपतन आदि के लिए भी अक्सीर है। इसका योग पुरुषों के गुप्त रोगों के प्रकरण में 'शिंगरफ भस्म १२५ आंचवाली' के नाम से अंकित है वहां देखलें।

(३३) कुचले की गोलियाँ

ये गोलियां भी अर्द्धाङ्ग, अर्द्दित, वाजीकरण मन्दता आदि के लिए आश्चर्यजनय गुणकारी हैं।

निर्माण विधि—आवश्यकतानुसार कुचला लेकर आर्द्र भूमि में गाड़ दें और उस पर नित्य पानी छिड़कते रहें। एक सप्ताहोपरांत निकालें और छीलकर उसका पित्ता पृथक कर दें तथा उसके आधे परिमाण में काली मिर्च मिलाकर दो दिन तक अदरक के रस में खरल करें। तत्पश्चात् सोहांजने के पत्तों के रस में खरल करके चने

के बराबर गोलियां बना लें और छाया में सुखा कर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—१ से २ गोली तक कबूतर या बटेर के शोरबे के साथ खिलावें। अर्द्धाङ्ग व अर्द्धित की सर्वोत्तम दवा है।

(३४) विशेष सन्यासी योग

यह योग हमारे एक गुजरात निवासी चिकित्सक मित्र ने भेजा है। उन्हें यह योग एक सन्यासी से प्राप्त हुआ था।

योग—हरमल के बीज पोटली में बांध कर दौलायंत्र की विधि से दो सेर गौ दुग्ध में पकावें। जब आधा सेर दूर रह जाय तो उतारकर पोटली को खूब दूध में निचोड़ दें और १० तोला गाय का घी और ५ तोला देशी खांड मिलाकर रोगी को गरम-गरम ही पिलायें और हिदायत दें कि रोगी गरम कपड़ा ओढ़कर सो जाए। इससे बहुत पसीना आएगा, किन्तु पसीने को कपड़े से अन्दर ही अन्दर पोंछते रहें। इसी प्रकार चार बार सेवन कराने से निश्चय ही लाभ हो जायगा। पूर्ण विश्वस्त योग है।

वर्जित वस्तुयें—दूध, दही, छाछ तथा ठण्डे पदार्थ न खिलायें।

पथ्य—प्रारम्भ में तो मधु और पानी मिलाकरउबाल कर पिलायें। फिर कुछ दिन पश्चात् कबूतर या बटेर का शोरबा दे सकते हैं, अन्य कोई वस्तु न दें, तो ही श्रेष्ठतम है।

सन्निपात रोग

इस रोग के विषय में विस्तृत वर्णन प्रथम भाग में लिख चुके हैं। यहां केवल कुछ विशेषातिविशेष योग लिखे जाते हैं। इसकी विशेष पहिचान इन लक्षणों से करें—

रोग से पूर्व के लक्षण

१—ज्वर की तीव्रता में पीड़ा और श्वेतवर्ण मूत्र आना प्रकट करते हैं कि उसे सन्निपात होने वाला है।

२—यदि रोगी को शिर पीड़ा हो और मूत्र पतला हो जावे तथा रोगी को प्रकाश से घृणा हो, टकटकी लगा कर एक ओर को ही देखता रहे, जिह्वा शुष्क हो, शब्दोच्चारण ठीक से न हो तो समझ लो कि उस पर सन्निपात का आक्रमण होने वाला है।

अशुभ लक्षण—यद्यपि जीवन और मृत्यु का ठीक ठीक पता तो विधाता को ही है, किन्तु अनेक बार अनुभव से चिकित्सकों ने कुछ ऐसे लक्षण निर्धारित किए हैं जो कि मृत्यु के सूचक होते हैं, ऐसे लक्षणों को देख कर

आप उनकी चिकित्सा करना न छोड़ें। किन्तु उसके सम्बन्धियों को सूचित करदें ताकि आप पर अपयश का छींटा न पड़े।

१—रोगी का दम उखड़ जाय और खींच २ कर जल्दी २ सांस ले। नेत्र बाहर को निकल आएँ, मूत्र बूँद २ आवे तो रोगी का जीवित रहना संदिग्ध ही जानिए।

२—यदि सन्निपात के रोगी की आँखें खुली हों और पलकों को न झपकाए। लाल या हरे रंग की वमन करे तो उसी दिन काल-कवल होने की पूर्ण सम्भावना होती है।

३—रोगी के हाथ पांव शीतल हों, नेत्रों में लालामी हो बार २ हिचकी आती हो, शरीर रोमांचित हो जाता हो, तो उसे भी मृत्यु की गोद में जाने वाला ही समझिए।

(३५) अद्भुत यवन चिकित्सा

एक जंगली कबूतर पकड़ कर रोगी के सिर के ऊपर जिबह करें, ताकि उसके गले का गर्म-गर्म रक्त सिर पर पड़े फिर तत्काल ही उसका पेट चीर कर बालों और परों सहित सिर पर बांध दें। किन्तु ध्यान रहे कि कबूतर सर्द न होने पावे, वरना लाभ न होगा। इस प्रकार करने से रोगी चेत में आकर ठीक हो जायेगा।

(२६) चमत्कारी अंजन

यह योग उन चमत्कारों में से है, जिनके बल पर अब भी आयुर्वेदिक व यूनानी चिकित्सा प्रणाली का गौरव अक्षुण्य । है अतीव लाभकारी प्रशंसनीय योग है ।

योग—शुद्ध जायफल १० माशा, फलफलीन, पारद, गन्धक आमलासार प्रत्येक ४-४ माशा ।

निर्माण विधि—सब को सूक्ष्म पीस कर चीनीपात्र में डाल कर खट्टे का रस इतना भरें कि दो अंगुल ऊपर तक आजावे । पानी सूख जाने पर पुनः पीसकर सुरमे की भांति आंखों में डालें । जिस ओर की आंख में डालेंगे उसी ओर का ज्वर व सन्निपात दूर हो जायगा ।

सूचना—यह योग शाही संचिका से उद्धृत किया गया है ।

नेत्र-रोग

नेत्र रोगों के विषय में भी प्रथम भाग में यथेष्ट वर्णन किया जा चुका है। अस्तु यहां नेत्र-रक्षा के कुछ विशेष उपाय लिखकर कतिपय अनुभूत योग अंकित करूंगा।

हानिकारी कारण

हमारे देश के सुशिक्षित युवक इन कारणों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते, इसीलिए उनकी दृष्टि क्षीण होकर चश्मे की अपेक्षित हो जाती है। हम यहां उन हानि कारक कारणों का वर्णन करते हैं:—

१. ऐसे स्थानों पर, जहां प्रकाश का पूर्ण प्रबन्ध न हो, पुस्तकों का अध्ययन करना नेत्रों के लिए हानि-कारक होता है।
२. पुस्तकों और समाचार-पत्रों को निरंतर पढ़ते ही रहना नेत्रों के लिए अत्यधिक हानिकर है।
३. दिन को सोना और रात्रि को जागना आंखों को खराब करने का एकमात्र कारण है।
४. सिनेमा या थियेटर देखना आंखों को कमजोर बनाता है।

५. प्रातःकाल देर से जागना, और आंखों को भली प्रकार स्वच्छ न रखना भी अनेक नेत्र रोगों का उत्पादक होता है।

६. केवल सौन्दर्य के लिए बिना परीक्षा कराए ऐनक प्रयोग करना भी अत्यधिक हानिकारक होता है।

इसके अतिरिक्त हस्त मैथुन, मैथुनाधिक्य, मादक पदार्थों का सेवन, धूम्रपान, मानसिक दुर्बलता होने पर पौष्टिक औषधियों का सेवन न करना, लहसुन, प्याज, बासी मांस खाना, भोजनोपरान्त त्वरित सो जाना, भोजन को भली प्रकार चबाकर न खाना, आदि।

उपरोक्त सभी कारण सीधे नेत्रों पर या मस्तिष्क पर प्रभाव डालकर नेत्रों की ज्योति क्षीण कर देते हैं, अस्तु इनसे नेत्रों को सुरक्षित रखना परमावश्यक है।

नेत्र-रक्षा के विशेष नियम

नेत्रों के हानिकारक कारणों का वर्णन करने के उपरान्त नेत्र-रक्षा के कुछ उत्तम नियम निरूपण करना भी परमावश्यक है। प्रत्यक्ष में तो ये उपाय साधारण से हैं किन्तु यथार्थतः दृष्टि के लिए अतीव हितकर हैं।

१—उपरोक्त हानिकर कारणों से बचना आवश्यक है।

२—प्रातःकाल शौचादि नित्य कर्मों से निवृत्त होने के पश्चात् दातुन करना, जिन्हा व तालु आदि को स्वच्छ

करना दांतों के लिए ही लाभप्रद नहीं है, अपितु नेत्रों की दृष्टि तीव्र करने में परम सहायक होता है।

३—प्रातः सूर्योदय से पूर्व उद्यानों अथवा हरे-भरे खेतों की सैर करना भी दृष्टि को शक्ति प्रदान करता है।

४—निर्मल जल के तालाव में डुबकी लगाकर नेत्रों को खोल देना नेत्रों की सुरक्षा के लिए उत्तम होता है। विशेष कर कुकरे से बचने का एकमात्र उपाय है।

५—भोजनोपरांत हाथों को धोकर मुख पर फेरना दृष्टि को तीव्र करता है।

नेत्र देखकर ही अनेक रोग पहिचानना
कुशल चिकित्सकों के अनुभव

यद्यपि यहां हम नेत्र-रोगों का निरूपण कर रहे थे किन्तु प्रसङ्ग वश ध्यान आ जाने से वे अनुभव भी आपको बताए देता हूं, जिनसे दीर्घ अनुभवी चिकित्सक केवल नेत्रों को देखकर ही अनेक रोगों की पहिचान कर लेते हैं। आशा है पाठक वृन्द इन्हें पढ़कर अतीव हर्षित होंगे।

१—नेत्रों में चिनगारियां सी उठती दृष्टिगोचर हों, तो वे मस्तिष्क व आमाशय की दुर्बलता अथवा प्रमेह रोग को प्रकट करती हैं।

२—चितवन तिरछी हो, तो प्रायः मस्तिष्क रोगों को प्रकट करती है।

३—नेत्रों में धुन्ध का होना सम्भवत, पेट के कीड़े, या मस्तिष्क की रसौली अथवा मोतिया विन्दु को प्रकट करती है ।

४—नेत्रों के सन्मुख तरेरे दृष्टिगोचर हों तो हृदय की दुर्बलता, पट्ठों की दुर्बलता, मस्तिष्क की रसौली, मस्तिष्क में रक्त का एकत्रित हो जाना आदि रोगो में से कोई एक समझना चाहिए ।

५—पलकों का फूल जाना प्रायः खराब, चेचक के आगमन या कण्ठमाला में से कोई रोग प्रकट करते हैं ।

६—नेत्रों की पीतता पाण्डु रोग हो सकती है, चाहे वह किसी प्रकार से उत्पन्न हुआ हो ।

७—नेत्रों के लाल डोरों का लोप हो जाना पुरुषत्व शक्ति की दुर्बलता का द्योतक है ।

८—रोगी यदि चिकित्सक से आँख मिलाकर बातें न कर सके अर्थात् दृष्टि नीची रखे तो समझ लो वह हस्त-मैथुन का रोगी है ।

९—आँखों की पुतली मोटी होना मस्तिष्क की दुर्बलता तथा ज्ञान तन्तुओं की दुर्बलता प्रकट करती है ।

१०—आँखों को बहुत कम झपकने वाला व्यक्ति प्रायः निर्धन और मूर्ख होता है ।

मोतिया बिंदु

यह एक बड़ा ही सांघातिक रोग है जो प्रायः लाखों

मनुष्यों को दृष्टि जैसी अनमोल देन से वंचित करा देता है यदि रोग के प्रारम्भ होते ही यथोचित उपचार द्वारा उतरता हुआ पानी रोक दिया जाय तो ठीक है अन्यथा पूरी तरह उतर आने पर औषधियों द्वारा स्वच्छ करना दुस्साध्य ही है। यहां हम उतरते हुए प्रारम्भिक मोतिया बिन्दु को रोकने और उतरे हुए को साफ़ करने के कुछ ऐसे विशेषातिविशेष योग लिखते हैं जिनके समकक्षीय योग अन्यत्र न मिल सकेंगे। ईश्वर से मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इनसे पूर्ण लाभ प्राप्त करके इस जन-सेवक को आशीर्वाद दें।

(३७) हरीतकी अवलेह

(प्रारम्भिक मोतियाबिन्दु की अद्वितीय दवा)

इस महान औषधि से एक काले मोतियाबिन्दु के रोगी को भी पूर्ण आराम हो गया था। मेरे एक परम मित्र ने बताया है कि एक व्यक्ति मोतियाबिंदु से बिल्कुल अंधा हो गया था, अनेक डाक्टरों ने असाध्य बताकर बेचारे को निराश कर दिया था। उसी समय एक सज्जन पधारे, जिन्हें मैंने धन्वन्तरि का अवतार ही समझा। उन्होंने एक खाद्य योग व एक नेत्रों में डालने वाला योग तैयार करके दिया। ईश्वर की ऐसी कृपा कि उस अंधे

रोगी को पुनः दृष्टि प्राप्त हो गई। वही दोनों महान योग पाठकों के लाभार्थ प्रकट करता हूँ।

खाद्य योग—पीली हरीतकी मोटी २ लेकर दूध के पात्र में दो सेर पानी के साथ डालकर उपलों की आंच पर पकावें। जब सारा पानी जल जाय, तब हरड़ों की गुठलियाँ निकाल लें और भली भाँति कूट लें। फिर उसमें १ सेर देशी खांड और आधासेर विशुद्ध मधु भी सम्मिलित कर दें। फिर किसी चीनी अथवा मिट्टी के पात्र में डालकर मुँह बन्द करके अन्नागार में दबा रखें और प्रति दिन रात्रि को सोने से पूर्व २॥ तोला मात्रा दूध के साथ खिलाया करें। यद्यपि स्वाद कड़ुवा होगा किंतु प्रभाव अत्यन्त मधुर होगा।

प्रभाव—जीर्ण कोष्ठबद्धता व समस्त नेत्र रोगों के लिए परम अक्सीर है। यहां तक कि मोतियाबिंदु के लिए भी परम कल्याणकारी है।

(३८) मोतियाबिंदुनाशक तैल

पूर्वोक्त खाद्य औषधि के साथ यदि इस तैल को भी उपयोग करें तो 'सोने पर सुहागा' जैसा उत्तम सिद्ध हो।

योग—सिरस के बीज एक पाव, एक साल के बकरे की कलेजी मुरारा सहित। दोनों को भली प्रकार कूट कर

पाताल यन्त्र द्वारा तेल खींचलें। यह तैल जलयुक्त होगा, अब इसको कपरौटी किए हुए चीनी पात्र में डाल कर कोयलों की आंच पर पकावें। जब सारा पानी जल कर विशुद्ध तेल मात्र रह जाय तो उतार कर शीशी भर लें।

सेवन विधि--रात को सोने से पूर्व एक २ सलाई आँख में लगावें। मोतियाबिन्दु के लिए लाभदायक है।

(३६) एक अनुपम अंजन

यह योग तनिक परिश्रम से बनता है। किन्तु यदि परिश्रम और सतर्कता से बना लिया जाय तो अभूतपूर्व लाभ पहुंचता है। यह योग मुझे एक बड़े पुराने अनुभवी वैद्य से प्राप्त हुआ था। वे सगर्व कहते थे कि मोतियाबिंदु किसी प्रकार का भी क्यों न हो इससे अवश्य जाता रहेगा।

योग--काले सर्प की वसा २ तोला, शंख २ तोला, निर्विसी १ तो०, कायफल १ तो०, काला सुरमा १ तो०, सबको खरल में डाल कर २ तोला कालीमिर्च के जल से २१ दिन खरल करके शीशी में सुरक्षित रखलें।

सेवन विधि--तांबे या चांदी की सलाई से नित्य १-१ सलाई डालें। कुछ काल के निरन्तर सेवन से मोतिया बिंदु का जाला साफ होकर नितांत अंधा भी पुनः देखने लगेगा।

कालीमिर्च का काजल बनाने की विधि

२ तो० कालीमिर्चें एक शीशी गुलाब जल में उबाल कर उतार लें और छान कर पृथक् शीशी में भरलें। इसी जल में से थोड़ा २ डाल कर निरन्तर २१ दिन तक खरल करते रहें।

(४० प्रारम्भिक मोतियाबिन्दु के लिए सर्वोत्कृष्ट तेल

यह योग बोडियाकलां (जि० अम्बाला) के एक चिकित्सक महोदय ने प्रेपित किया है। योग प्रत्यक्षतः सामान्य सा है, और सुगमता से बन जाता है, किन्तु गुणों में उत्तमोत्तम योगों से भी बढ़ कर है। इससे न केवल उतरता हुआ पानी रुक जाता है अपितु उतरा हुआ भी स्वच्छ हो जाता है।

योग—विशुद्ध सरसों का तेल ५ तोला, शीतल चीनी २॥ तो० दोनों को कांच या चीनी की खरल में डालकर बलवान हाथों से खरल करें और फिर शीशी में रखलें। रात को सोने से पूर्व १-१ सलाई आँखों में लगाले से कुछ ही दिनों में आशातीत लाभ होगा।

(४१) अमेरिकन औषधि

यह औषधि अमेरिका से बन कर आती है, जो कि

होमियोपैथिक वालों ने आविष्कृत की है आज कल अस्प-तालों में भी इसका प्रयोग बहुत होने लगा है। यदि इसकी १-१ बूंद प्रायः सायं नेत्रों में डाली जाय, तो मोतिया बिंदु का उतरना रुक जाता है। और निरंतर कई मास के प्रयोग करने से उतरा हुआ भी साफ़ हो जाता है। मेरे एक मित्र डाक्टर ने सैकड़ों रोगियों पर परीक्षा करके लाभप्रद पाया है वरन् स्वयं अपने ऊपर भी उन्होंने अनु-भव किया है। इस दवा का नाम है—(Cineraria Mar tima)। इसकी कम से कम दो शीशियां सेवन कराने के बाद लाभ प्रतीत होने लगता है। और निरन्तर कई मास इस्तेमाल करना पड़ता है। इस कारण महंगा बहुत पड़ता है। हां है पूर्ण विश्वस्त और शर्तिया दवा।

(४२) सन्यासी-प्रयोग

यह शाही संचिका का एक विलक्षण और अपूर्व प्रयोग है। एक काले सर्प को मार कर उसके मुख में २ तोला काले सुरमे की डली रख कर मुँह बंद करदें। फिर एक खाई ज़रा लम्बी सी खोद कर उसमें ५ सेर बकरी की मेंगनी बिछा दें और उसके ऊपर २ सेर गेहूँ बिछाकर ऊपर सांप को लिटा दें। तथा ऊपर से पुनः २ सेर गेहूं और फिर ५ सेर मेंगनी की तहें बिछा कर आग लगा दें। और आने जाने वालों को धुंए से बचने की हिदायत

कर दें। जब आग ठंडी पड़ जाय तो सुरमे की डली निकालकर बारीक पीसलें। और नित्य रात को दो तीन सलाई आंखों में डालें। मोतिया झड़ जाएगा।

यह योग मेरे कृपालु मित्र दीवान जी को महात्मा पद्मगिरि जी ने प्रदान किया था। उनका कथन था कि इस औषधि से मोतियाबिंदु व अन्यान्य नेत्र रोग शीघ्र ही मिट जाते हैं।

(४३) चमत्कार गुटी

योग--शंख नाभि, प्रवाल, तांबा सबकी भस्म बनालें (भस्म बनाने की विधि नीचे लिखी है।) बहेड़ा, हरड़, हीरा कसीस, सफेद मुर्गी के अण्डे का छिल्का, बरडा बूटी की राख (भस्म) इन सबको बराबर २ लेकर बकरी के कच्चे दूध के साथ तांबे की खरल में सात दिन पर्यन्त घोटें। फिर गोला सा बना कर बकरी के ताज़ा दूध में अंगुली डुबा २ कर लम्बी २ बत्तियां बना लें।

सेवन-विधि---इस बत्ती को बकरी के दूध में घिसकर सलाई से नेत्रों में लगाएं और आंखों पर हरे रंग का कपड़ा बांधकर उसे १२ दिन तक अंधेरे कमरे में रखें। खाने को केवल चावल दें, फूला जाला, परवाल, लाली, कुकरे, मोतियाबिंदु के लिए अक्सीर है।

(४४) शंख भस्म की निर्माण-विधी

शंख को अग्नि में तपाकर गुलाब जल में बुझाते रहें, यहां तक कि चूर २ हो जाए, फिर बारीक पीसलें।

(४५) प्रवाल भस्म

घृत कुमारी के गूदे में आवश्यकतानुसार प्रवाल रखकर कपरोटी करके १० सेर उपलों की आंच दें।

(४६) तांबा भस्म

पीले पुष्पों वाली भत्तलबूटी जलशय के तट पर से लेकर लुगदी बना लें, उसमें १ तोला तांबे का बारीक पत्र रखें और साव सम्पुट करके २० सेर उपलों की आंच दें। काले रंग की भस्म बन जायगी। यदि कुछ कच्चा रहे, तो पुनः इसी भांति आंच दें। भस्म बन जायगी।

सूचना—हीरा कसीस हरे रंग का लेना चाहिए। बरड़ा बूटी डेरा इस्माइल खां जिले में इसी नाम से मिल जाती है। इसमें शाखाएं ही होती हैं, पत्ते, फूल या फल कुछ नहीं होते।

विशेष सूचना—हमारे परम मित्र हकीम महबूब आलम खां साहब ने एक ऐसा महान योग प्रदान किया है जो कि स्वर्गीय महाराजा रणजीतसिंह को एक सन्यासी

ने बताया था। इससे सिर्फ ३ दिन में निश्चय ही मोतिया बिन्दु का सर्वनाश हो जाता है। इस योग का बनाना तनिक कठिन सा है, अतः उसे अन्य पुस्तक में लिखेंगे।

फोला व जाला

अगर आंख की पुतली पर श्वेत बिन्दु हो जावे, तो वह फोला होता है, और श्वेत झिल्ली सी हो जाना 'जाला' कहलाता है। नीचे हम उनके भी अनुभूत योग लिखते हैं।

(४७) फोला व जाले का सर्वश्रेष्ठ योग

योग—लाहौरी नमक, नौसादर, जई, मांसखोरा, जंगार, प्रत्येक ३-३ माशा, कुक्कुडांट पीतता ३ नग। समस्त वस्तुओं को कुक्कुडांट पीतता में इतना खरल करें कि सुरमे के समान बन जाए। नित्य रात को १ सलाई ईश्वर का नाम लेकर आंख में डालें, धुन्ध, जाला व फोला को नितान्त दूर करके आंख को स्वच्छ कर देगा। अक्सीरी योग है।

(४८) द्वितीय चमत्कारी योग

यह योग सोनीपत निवासी ला० रामकिशन गुप्ता ने प्रकाशनार्थ हमें प्रेषित किया है। यह योग निस्संदेह चमत्कारक है, कैसा ही उभरा हुआ या पुराना फोला क्यों न हो एक ही सप्ताह में उड़ जाता है।

योग—आमलासार गंधक १ तोला, नौशादर १ तो० तांबे का चूरा ६ माशा, नींबू का रस ७ तोले।

निर्माण विधि—गंधक और नौशादर को बारीक पीस कर पत्थर की न घिसने वाली खरल में आधी मात्रा बिछा कर ऊपर ताम्र चूर्ण रख कर पुनः अवशिष्ट आधी औषधि बिछा दें। ऊपर से नींबू का रस डाल दें। ३ दिन में सारी औषधि घुल कर तांबा भस्म हो जायगा। फिर उसे उसी खरल में बारीक से बारीक पीस कर शीशी में रखलें।

सेवन विधि—नित्य प्रातः सायं १-१ सलाई आंख में लगाएं। एक सप्ताह में फोले का चिन्ह मात्र भी शेष न रह जायगा।

(४६) पड़वाल नाशक योग

वर्तमान ऐलोपैथिक चिकित्सा में इस रोग की चिकित्साएँ कम हैं, आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा में ऐसे अनेक योग भरे हैं जिनके चमत्कारी प्रभाव इन्हें चकित कर देते हैं। पड़वाल का एक अत्युत्तम योग इसी पुस्तक के प्रथम भाग में लिखा जा चुका है और एक आश्चर्यजनक योग यहां लिखते हैं, बना कर लाभ उठावें।

योग—सरसों के तेल में एक चमगादड़ को जलालें,

यहां तक कि मलहम की भाँति हो जाय। आवश्यकता के समय बाल उखाड़ कर ऊपर लगावें। कुछेक बार के लगाने से बालों का उगना बंद हो जायगा। अनेक बार का अनुभूत योग है। एक बार परीक्षा करके आनन्द प्राप्त करें। यह योग कादिरबादी हकीम अल्लादित्ता साहब का प्रदत्त है।

आंख का कुकरा

यह एक ऐसा रोग है, जो एक बार लगने के पश्चात् साधारणतया पीछा नहीं छोड़ता। क्योंकि मैं स्वयं इस रोग के चंगुल में फंस चुका हूं, इस कारण मुझे इसका व्यक्तिगत अनुभव है। मैंने भांति २ की डाक्टरी चिकित्सा करवाई, किन्तु लाभ तो दूर, किंचित् मात्र भी अन्तर न हुआ। अन्त में परमात्मा की कृपा से स्व-प्रयत्न में ही लाभ पहुंचा। यहां हम कुकरे की अनुभूत औषधियां वर्णन कर रहे हैं, जो कि पाठकों के लिए बहुमूल्य उपहार सिद्ध होंगे।

(५०) प्रथम अनमोल योग

मैं इस औषधि का यथार्थ रहस्य प्रकट नहीं करना चाहता। हां इतना संकेत मात्र पर्याप्त है कि यह अमेरिका की एक मूल्यवान औषधि का प्रत्युत्तर है। इस योग को प्रकट करने में मुझे अपनी अनेक आकांक्षाओं का हनन

करना पड़ा है। विशेषातिविशेष योग है। जिसको अन्य व्यक्ति प्रकाशित करना तो दूर रहा, किसी निकटतम सम्बन्धी को बताने के लिए भी प्रस्तुत न होता। खैर योग इस प्रकार है:—

योग—एक्रीफ्लेविन, पिपरमेंट व कपूर प्रत्येक १-१ ग्रेन, तूतिया ४ रत्ती, ग्लेसरीन १ तोला, गुलाब का अर्क १० तोला।

निर्माण-विधि—प्रथम तूतिया, तत्पश्चात् पिपरमेंट, फिर कपूर और तब एक्रीफ्लेविन क्रमशः खरल करते और मिलाते जायं। जब सब खरल हो जाय तो थोड़ी २ ग्लेसरीन डालकर अर्क गुलाब भी मिला दें। अत्युत्तम हरे रंग की स्वर्णिम औषधि बन जायगी। शीशी में सुरक्षित रखकर ड्रापर द्वारा रोगी की आंखों में डालें।

लाभ—कुकरे के अतिरिक्त अन्य नेत्र रोगों को भी अक्सीर है।

(५१) अपूर्व वटिका

कुकरा का रोगी जब अन्य सभी औषधियों से निराश हो जाए, तो ये गोलियां सेवन कराएं, थोड़े दिनों में ही कुकरा की प्रबलता टूट कर लाभ हो जायगा।

योग-सुहागा ७ माशा, अजवायन खुरासानी ६ मा० काली मिर्च ३॥ तो०, एलुआ ४ तो० ८ माशा। समस्त औषधियों को घी क्वार के गूदे में खरल करके चने के परिमाण की गोलियां बना लें। और २ से ४ गोली तक रात के समय दूध या गर्म पानी के साथ खिलाएं। प्रातः १-२ दस्त खुलकर आयेंगे और साथ ही नेत्र भी खुल जायेंगे। तदनन्तर जिस दिन भी कोष्ठबद्धता या नेत्रों में कष्ट प्रतीत हो, तुरन्त ही इन गोलियों को सेवन करें।

(५२) कुकरों की वैद्यक वत्तियां

निम्नांकित वत्तियां असंख्य रोगियों पर परीक्षित हो चुकी हैं। कैसी ही बिगड़ी दशा हो, तत्काल लाभ पहुंचाती हैं। प्रतिदिन के प्रयोग में आने वाली हैं।

योग--फिटकरी, तूतिया, कल्मीशोरा, प्रत्येक २॥ तोला, मिलाकर बारीक पीसें और लौह-पात्र में डालकर कोयले की आग पर रखें। पिघलने पर २ माशा कपूर मिलाकर सांचों द्वारा लम्बी २ वत्तियां बनालें। रोगी की

पलकों को पलट कर ऊपर फिराएं, कतिपय दिनों में ही निश्चय ही लाभ हो जायगा।

(५३) कक्करे का अपूर्व सुरमा

(पूज्यवर हकीम मौलवी रशीद अहमद साहब प्रोफेसर तिब्बिया कालेज द्वारा प्रदत्त)

योग—तूतिया भुना हुआ ५ रत्ती, जस्त की भस्म १५ रत्ती, रसौंत २५ रत्ती। रसौंत को आग पर रख कर इतना पकाएं कि सारा जल सूख जाय। फिर उतारकर ठंडा होने पर बारीक पीसें। फिर दोनों दवाएं मिलाकर पीसें और रात को १-१ सलाई आँखों में डालें।

(५४) एक और अनुभूत योग

निम्नांकित योग आंखों की कुछ बीमारियों के लिए रसायनोपम है। इसका प्रयोग करने वाले सज्जन रोगियों को लाभ पहुँचा कर अपूर्व यश प्राप्त करेंगे। इसका महत्व अकथनीय है, सुशिक्षित और विज्ञजन इसके द्रव्यों से ही अनुमान लगा सकते हैं। यह योग धुन्ध, जाला, फोला, कुकरा व आँख दुखने पर जादू की भांति लाभकारी प्रभाव दिखाता है।

यह योग मुझे डा० बिशनसिंह जी ने प्रदान किया था। वे एक अनुभवी और प्रख्यात चिकित्सक हैं। उनका

कथन था कि इसके समतुल्य दूसरा कोई अंग्रेजी या देशी लोशन देखने में नहीं आया। एक बार प्रयोग करने वाला सौ बार प्रशंसा करता है। मेरी उपस्थिति में ही अनेक रोगी इस औषधि को ले गए। स्वयं मैंने अपने चिकित्सालय में इसका अनेक रोगियों पर प्रयोग किया है।

योग—कहल अल्जर (जिसका योग आगे 'हमीदिया सुर्मा' के नीचे अंकित है) १॥ माशा, गुलाब का अर्क १ औंस, ग्लिसरीन १ ड्राम, नोवोकेन (Novocain) १ ग्रेन, मिलाकर रखलें और ड्रापर से २-२ बूँद आँखों में डालें।

(५५) अनुपम नेत्र-सुरमा

यह सुरमा मोतियाबिन्द के अतिरिक्त प्रत्येक नेत्र रोग के लिए अनुपम है। इसका योग मुझे श्रीमान् देवराज शर्मा, मालिक शान्ती औषधालय अनाजमंडी पटियाला ने प्रदान किया था, और कई वर्ष से हमारे यहां प्रयुक्त हो रहा है।

योग—कच्ची फिटकरी ८ माशा, जस्ते की भस्म ६ माशा, बोरिकएसिड ६ मा०, कच्चा तूतिया ४ मा०, ग्लिसरीन ४० तो०। सबको पृथक २ खरल करके कपड़छन करलें और मिला कर पुनः खरल करें। खूब बारीक हो जाने पर थोड़ी सी ग्लिसरीन डाल कर एक घंटे तक

खरल करें। फिर सारी ग्लिसरीन डाल कर २ दिन धूप में रखें। तब छान कर शीशियां भरलें। बस दवाई बन गई। सलाई से रोगी की आंखों में लागाएं। धुन्ध, जाला, फोला, कुकरा, रतौंधी आदि में लाभकर है।

(५६) हिन्दुस्तानी आरजीरोल

यह आरजीरोल प्रभाव में विदेशी आरजीरोल को भी पीछे छोड़ गया है। आंख के अनेक रोगों को अक्सीर है। भारत में प्रतिवर्ष लाखों रुपये का विदेशी आरजीरोल बिकता है, जो कि लाभ और गुणों में किसी प्रकार इस हिन्दुस्तानी आरज़ीरोल के समतुल्य नहीं, जो सज्जन परीक्षा करेंगे, अवश्य ही हर्षित हो उठेंगे।

यह योग जनाब शेख मुहमम्द सुल्तान अहमद ने प्रदान किया था। मैं उनकी उदारता के प्रति चिर कृतज्ञ होकर उसे पाठकों को भेंट करता हूँ।

योग—घृत कुमारी का रस १ तो०, सत्यानाशी का दूध १ तोला, अर्क नींबू हरिद्रावाला २ तोला, गुलाबजल १ तो०, बट का दूध १ तो०, कपूर, शुद्ध ३ मा०, अफीम ३ माशा। सब को मिला कर शीशी में रखें। और २-२ ड्रापर से डालें।

लाभ—धुन्द, जाला, आंख आना, फोला, दृष्टिमांद्य,

लाली, पानी जाना, मोतियाबिंदु आदि के लिए सर्वोत्तम दवा है।

(५७) हरिद्रावला नीबू अर्क की निर्माण विधि

हल्दी, हरड़, रसौत, मेंहदी पुष्प, चमेली पुष्प, नीम पुष्प, श्वेत जीरा प्रत्येक १-१ तोला, विशुद्ध केशर ३ मा०। सबको ८ तोला स्वच्छ जल में भिगो कर घन्टे भर पश्चात् आग पर गर्म करें। ४ तो० जल शेष रह जाने पर उतार व छान कर शीशी में भर लें और उपरोक्त योग में डालें। यह अर्क अकेला भी आंखों के लिए लाभप्रद है।

(५८) नेत्र-रोगों के लिए सन्यासी योग

श्री स्वामी सरस्वती आनन्द धर्म-प्रचारक आश्रम सरडासाल [बड़ौदा] द्वारा प्रदत्त)

जिन दिनों मैं कुकरा से पीड़ित था, तभी स्वामी जी ने मुझे यह अनमोल योग निम्नांकित प्रशंसा शब्दों सहित भेजा था।

'आँखों के सब रोगों के लिये अद्वितीय दवा है, प्रत्येक रोगी को लाभ करेगी। अधिक दिनों तक सेवन करने से मोतिया तक उड़ जाता है धुन्ध, फूलधारी आदि को भी लाभकारी है और सहस्रों रोगियों पर अनुभूत है।

योग—दाढ की जड़ें निकाल कर छोटे २ टुकड़े करके मृतिका पात्र में डालें, किन्तु पात्र का एक चौथाई भाग रिक्त रहे उस पर चीनी का प्याला या कलईदार पात्र रख कर ऊपर से मिट्टी के ढकने से मुंह बन्द करके आटे से लेप दें, ताकि भाप निकल न सके। अब इसे निरंतर ३ घन्टे आग पर पकावें। ऊपर के पात्र में ठन्डा पानी भर कर रखें। गर्म होने पर उसे निकाल कर पुनः ठन्डा जल भर दें। ३ घन्टे पश्चात् आग बुझा दें। जब पात्र भी ठंडा हो जाय तो मुंह खोलकर अन्दर से पीत वर्ण अर्क से भरा प्याला निकाल कर शीशी में भरलें और नित्य ड्रापर से २-२ बूंद आँखों में डालें।

लाभ—धुन्ध, जाला, कुकरा, मोतियाबिन्दु इत्यादि को विशेष रूप से लाभ पहुंचाता है।

(५९) हमारी फार्मेसी का सुविख्यात सुरमा

देहाती सुरमा (हमीदिया सुरमा)

यह वह प्रख्यात सुरमा है जो हमारे यहां ३०) तो० बिक रहा है। प्रथम भाग में भी हमने अपने यहां के दो सुरमों के योग लिख दिये थे और यहां तीसरा सुरमा 'देहाती सुरमा' भी प्रकट किया जा रहा है। किंतु यह सुरमा बहुमूल्य वस्तुओं से बनता है, अस्तु धनिकों के ही काम की वस्तु है और अपूर्व गुणकारी है। धुन्ध, जाला,

फोला, दृष्टिमांद्य आदि सभी रोगों के लिए परम लाभकारी है कुछ दिन के सेवन से ऐनक लगाना तक छुड़ा देता है। आँखों को शीतलता प्रदान करता है, सारांश यह कि एक अनुपम उपहार है।

योग—जौहर अरबा ३ माशा, सुरमा अल्पहानी १ तोला, विशुद्ध मुक्ता १ माशा, ममीरा असली १ मा० सबको मिला कर एक न घिसने वाले खरल में डाल कर बारीक पीसें। सुरमा तैयार है।

सेवन-विधि—प्रातः सायं अथवा एक ही समय ३-३ सलाई डालें।

(६०) जौहर अरबा की निर्माण विधि

फिटकरी कच्ची, तूतिया, शोरा, नौशादर प्रत्येक पाव २ भर लेकर सबको अलग २ बारीक पीस कर मिट्टी की इतनी बड़ी हांडी में डालें कि कम से कम ४ गुना भाग खाली रहे। फिर उस पर मिट्टी का ढक्कन लगा कर बिना कपरौटी किए आग पर चढ़ावें और नीचे बेरी की लकड़ी जलावें। लगभग २ घन्टे में सारा जौहर उड़ कर ढक्कन पर लग जायगा। जो कि अनुमानतः १ तोला होगा। उसे खरल करके शीशी में भर लें। यही जौहर अरबा है इसे उपरोक्त योग में मिलालें।

यदि इसे सुरमा में मिलाए बिना ही प्रयोग कराएं तो भी फोला जाला के लिए लाभदायक है। नीचे का हरे रंग का फोक भी पीस कर शीशी में रखलें। यही 'क़हल अरवजर' है। जो योग नं० ५४ में पड़ता है।

(६१) सन्यासियों का सुरमा

यह सुरमा योग जनाब मौलवी अब्दुल क़ादिर साहब का खान्दानी योग है और धुन्ध, जाला, रतौंधी, कुकरा, मोतियाबिन्दु आदि के लिए अक्सीर है। आपकी हस्त-लिखित डायरी से उद्धृत किया गया है।

योग--हरा नीलाथोथा १ तो०, स्त्री के दूध में खरल करते रहें, यहां तक कि पावभर दूध सूख जाय। बस यही सुरमा १-१ सलाई लगाएं।

(६२) अनेक नेत्र-रोगों का लाभदायक सुरमा

इसरारुल मुजर्बात के लेखक हकीम मौलाना गुलाम मुहम्मद साहब ने बताया कि एक बार मोतियाबिन्दु से पीड़ित एक सन्यासी जी मेरे पास आए और नेत्र दिखाकर कहने लगे कि दृष्टि कम हो जानेके कारण मैं बड़ा व्याकुल हो रहा हूं, बूटियाँ पहिचानने में भी असमर्थ हूँ, कृपया शीघ्र ही कुछ उपाय बताइए। मैं यह कह कर कि मोतिया-बिन्दु उतर रहा है, उन्हें यही सुरमा दिया, जिसके कुछ

दिन सेवन मात्र से उनकी दृष्टि ठीक हो गई। प्रत्युपकार स्वरूप उन्होंने मुझे दो तीन अभूतपूर्व योग प्रदान किए, जिन में से एक योग तो अफीम की लत को एक ही दिन में छुड़ा देता है। खैर ! सुरमे का योग अंकित करता हूं:-

योग--मृगांक सत्व (जिसकी निर्माण विधि प्रथम भाग में देखें) १ तोला, सुरमा काला २ तोला, नील के बीज २ तोला, सबको खरल में डालकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म पीसें। बस सुरमा बन गया।

सेवन विधि--सोते समय २-२ सलाई आंख में डाला करें।

लाभ--धुन्ध, जाला, लाली, जलस्राव, प्रारम्भिक मोतियाबिंदु आदि के लिए इससे उत्तम दूसरा सुरमा नहीं है।

१--यदि चेहरा पीला हो, किन्तु नाक उससे भी अधिक पिली हो, नाक की कोंपल पतली होकर एक ओर को मुड़ जाय, तो ऐसे रोगी को कुछ घड़ी का मेहमान ही समझना चाहिये।

२--जिस रोगी की नाक शुष्क या अचानक सिकुड़ कर बैठ जाय, तो ऐसे रोगी को अधिकाधिक १ सप्ताह का मेहमान समझो।

३—यदि रोगी को नस्य आदि प्रयोग कराने से छींक न आएं तो प्रकट है कि उसकी मानसिक शक्तियां निष्क्रय हो चुकी हैं, और यह मृत्यु का प्रत्यक्ष सन्देश है।

कर्ण व नासिका-रोग

इसका पर्याप्त वर्णन 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग में किया जा चुका है अतः अन्य आवश्यक बातों के स्थान पर उसी की पुनरुक्ति करना आवश्यक नहीं हां यह बता देना आवश्यक सा है कि प्रथम भाग में इस रोग का एक अत्यधिक लाभकारी योग अंकित है, जिसे देखकर एक बार अवश्य बना कर लाभ उठावें। वह एक सन्यासी योग है।

दन्त एवं कण्ठ रोग

यद्यपि दांतों के सम्बन्ध में प्रत्येक आवश्यक वर्णन प्रथम भाग में किया जा चुका है तथापि यहां हम कण्ठ माला जैसे घातक रोग के कुछेक अनुभूत योग अंकित कर देना चाहिते हैं। प्रथम भाग में भी कण्ठमाला के विशेषता योग लिखे जा चुके हैं, किन्तु इस भयानक रोग के लिए अधिकाधिक योग भी अपर्याप्त ही हैं। रोग की पहिचान कारण व पथ्यादि तो प्रथम भाग में ही देखने का कष्ट करें।

कण्ठमाला

निम्नांकित चुने हुये उत्तम योगों में से प्रथम तीन योग जनाब हाफिज़ अब्दुलवाहिद साहब द्वारा प्रदत्त हैं जो तत्काल प्रभावकारी होने के कारण अति लोकप्रिय हैं।

(६३) कण्ठमाला नाशक वटी

जो कण्ठमाला अभी फूटने न पाई हो, उसके लिए अत्युत्तम गोलियां हैं।

योग—रस कपूर, दार चिकना, संखिया तीनों बराबर २ लेकर ३ माशा की मात्रा १२ गोरख पान बूटी की लुगदी के मध्य में रखें, और दो कोरे प्यालों में बन्द कर के उनके किनारों को खड़िया से कपरोटी करके दोपहर तक बेरी की लकड़ी की आग पर पकावें और ठंडा होने पर सत्व उतार लें। इसमें से आधा सत्व १ तो० गेहूँ की मैदा में मिलाकर काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन-विधि—प्रतिदिन प्रातःकाल १ गोली ५ तो० गुलाबजल के साथ खिलाएं और प्रतिदिन आधा पाव घृत अवश्य खिलाएं। १ मास तक निरन्तर सेवन कराना चाहिए।

लाभ—कंठमाला की ऐसी गिल्टियां जो अभी फूटी न हों उनके लिए विशेष लाभकारी गोलियां हैं।

वर्जित वस्तुएं---नमक, मिर्च, छाछ आदि से नितान्त परहेज़ रखें।

(६४) फूटी हुई कंठमाला का सन्यासी योग

योग---चारों अजवायन ४-४ तोला, बावची, कबाब चीनी काली मूसली प्रत्येक ४-४ तोला, पारा ६ माशा, भिलावा शुद्ध ६ माशा।

निर्माण विधि---प्रथम सातों औषधियों को बारीक पीसकर इमामदस्ता में डालें और भिलावा मिला कर कूटें। भली प्रकार मिल जाने पर पारा डालकर पूरी ३ लाख चोटें मारें, बस औषधि तैयार है। १-१ मा० की गोलियां बना लें।

सेवन-विधि---३ माशा औषधि प्रथम दिन ही दही में लपेट कर खिला दें, और दूसरे दिन ४ माशा। फिर इसी प्रकार नित्य प्रति खिलाएं। २१ दिन लगातार सेवन कराना चाहिए। और पूरे ३ माह तक नमक मिर्च से नितान्त परहेज़ कराएं। यह परम आवश्यक है।

(६५) संखिया भस्म की निर्माण विधि

३ मा० संखिया को कुक्कुटांग में छिद्र करके डालदें, फिर कड़ाही में छिद्रवाला भाग नीचे की ओर रखकर आग

पर पकावें। अण्डा पूर्णतया जल जाने पर उतार लें, और संखिया की डली लेकर पीस लें। यही भस्म है।

सेवन विधि--कण्ठमाला की गिल्टी पर तनिक सा पच्छ लगा कर उस पर १ चावल जितनी दवा मल दें। इससे पीप निकलती रहेगी। प्रति दिन मक्खन लगाते रहें। आशा है १ सप्ताह में ठीक हो जायगा।

(६६) कंठमाला, अर्श, नकसीर आदि की महोषधि शाही संचिका का अपूर्व योग

योग--लोटाखार, चूना कलई, प्रत्येक आधा सेर, पानी ४ सेर।

निर्माण विधि-- दोनों को अलग २ भिगोकर तीन दिन उपरांत उनका स्वरस प्राप्त करें और कड़ाही में डालकर कलमी शोरा लाल ३ तो०, काही २ तोला, नौशादर रस कपूर, दार चिकना, संखिया, मुर्दासंग, हर्रा, नीला थोथा प्रत्येक १-१ तोला, मिलाकर पकाएं। जब पानी सूख जायगा तो समस्त औषधियां तैल रूप में आ जायेंगी। उसे शीशी में भर कर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि--रुई की फुरेरी से यह तेल गिल्टियों पर लगाएं दो तीन दिन में घाव उत्पन्न होकर सारा दूषित

रक्त निकल जायगा। तत्पश्चात् निम्न वर्णित मलहम लगाने से ठीक हो जायगा।

(६७) मलहम का योग

२ नग *छिपकली २ सेर पानी में डालकर पकावें, जब पाव भर पानी शेष रहे, तो उसमें पाव भर तेल डाल कर आंच तीव्र कर दें। जब छिपकली जल कर कोयला हो जायं तो उन्हें निकाल कर फेंक दें, और तेल में बैल के सींग की भस्म, पुराने चमड़े की भस्म २-२ तोला डाल कर मलहम बना लें। इस मलहम को लगाते रहने से कुछ दिनों में ही नितान्त आराम हो जायगा।

छाती और फेफड़े के रोग

यूं तो विधाता ने प्रत्येक अंग को हमारे शरीर में नियत कार्यों के लिए बनाया है और उनमें से छोटे से छोटा अंग भी निष्प्रयोजन नहीं कहा जा सकता किन्तु फेफड़ों का ठीक होना हमारे जीवन के लिए उतना ही महत्व पूर्ण है, जितना कि मछली के लिए पानी का होना क्योंकि चिकित्सा विज्ञान के अनुसार शरीर का सारा विकृत रक्त फेफड़ों में ही शुद्ध होकर हृद्धमनी (Aorta) द्वारा विभिन्न अंगों में जाता है। अब हर सामान्य व्यक्ति

*छिपकली विषैली होती है बनाने व लगाने में सावधानी बरतें।

भी समझ सकता है कि फेफड़ों का कार्य शिथिल पड़ जाने पर रक्त किस प्रकार शुद्ध हो और यदि अशुद्ध रक्त सारे शरीर में फैलेगा तो अनेक रोग उत्पन्न हो जायेंगे अस्तु फेफड़ों और उनके कार्य की नियमितता के विषय में पूरा २ ध्यान रखा जाय।

यह कथन नितांत सत्य है कि भारत में और विशेष कर पंजाब प्रांत में दमा, खांसी, क्षय व कण्ठमाला आदि रोगों में ग्रस्तित होकर जितने रोगी कष्ट भोगते या स्वर्ग सिधारते हैं, उतने अन्य किसी रोग से नहीं। इन हृदय विदारक दृश्यों को देख कर आगामी पृष्ठों पर हम कुछ ऐसे आदेश निरूपित करेंगे जिन पर आचरण करना इस रोग से नितांत सुरक्षित रहना है।

फेफड़ों के रोगों से सुरक्षित रखने के लिए नवयुवकों को आदेश

यौवन एक अनमोल रत्न है, जिसकी अन्य उपमा नहीं। किंतु खेद का विषय है, कि हमारे देश के नवयुवक उसकी रक्षा की किंचित्मात्र परवाह नहीं करते। जो लोग यौवन विज्ञान की इन सूक्ष्मताओं से परिचित हैं, कि जीवनकाल में यौवन का क्या महत्व है, इसकी रक्षा किस प्रकार हो सकती है, और यौवन रूपी लहलहाती वाटिका को दुर्व्यसनों-रूपी विषैले झोंकों से किस प्रकार सुरक्षित

रखा जा सकता है ? उनका जीवन ही यथार्थ जीवन कहा जा सकता है।

मेरे प्रिय नवयुवको ! आओ हम तुम्हें वे उपाय बताते हैं, जिन पर आचरण करने वाले चिरकाल तक युवक बने रहते हैं। वीर्य वर्द्धक, प्रमेह नाशक और वाजीकरण औषधियों के सेवन मात्र से ही चेहरे का रंग लाल नहीं होता, अपितु सर्व प्रथम अपने फेफड़ों की रक्षा के उपाय सीखो, और उन पर आचरण करो, अन्यथा यौवन ढल जाने पर पश्चाताप करने से तुम्हें क्या लाभ होगा ?

१—व्यायाम तथा भ्रमण इस अवस्था के लिए परमावश्यक है। क्योंकि इससे फेफड़ों को शुद्ध वायु प्राप्त होती है और नया रक्त उत्पन्न होता है।

२—प्रतिदिन प्रातः व सायं खुले मैदान में जाकर खूब गहरे २ सांस लो, और कम से कम १ घन्टा शुद्ध वायु सेवन करो।

३—यथा सम्भव २२ वर्ष से कम आयु में विवाह न करें। जो युवक २० वर्ष की आयु में ही वीर्य नाश करने लगते हैं, वे प्रायः क्षय आदि भयकर रोगों में ग्रसित हो जाते हैं।

४—दूध, दही, मक्खन और फलों का यथा शक्ति सेवन करें। केवल जिह्वा के स्वाद के लिए चटपटी और

खट्टी वस्तुएं अधिक सेवन करना हानिकर है, हां कभी २ खा लेना विशेष हानिकर नहीं ।

५—लिखते, पढ़ते या चलते फिरते समय कमर को सीधा रक्खो, क्योंकि प्रायः कमर झुकाकर काम करने के अभ्यस्त व्यक्ति ही इन रोगों में ग्रस्त दृष्टिगोचर होते हैं ।

६—लिखना पढ़ना व अन्यान्य मनोरंजन यद्यपि आवश्यक हैं, किन्तु उनमें निरंतर लीन रहना भारी भूल है । चाहिए यह कि काम करते समय कुछ रुक कर गहरे २ सांस लें । इस साधारण सी विधि को अपनाने से मनुष्य न केवल रोगों से सुरक्षित रहता है, अपितु मन की चंचलता मिटाकर चित्त को एकाग्रह बनाते हुए सफलता प्राप्ति की भी एकमात्र विधि है ।

श्वांस-रोगों की पहिचान

१—सांस की तंगी का कारण बहुधा दमा बिगड़ना या प्रतिश्याय होता है ।

२—गहरा सांस प्रायः सिल और फेफड़ों के खराब होने से आया करता है ।

३—यदि सांस में दुर्गन्धि है, तो कोष्ठबद्धता, पायरिया, और अजीर्ण अथवा कण्ठ रोग को प्रकट करती है ।

४---यदि सांस छोटे २ आएं, तो अजीर्ण रोग, प्रतिश्याय, यकृत दोष, सिल वा गठिया आदि में से कोई रोग होता है।

५---यदि किसी अजीर्ण रोगी के श्वास में कफ बोलने लगे और दम उखड़ जाय तो रोगी के जीवित रहने की आशा नहीं रह जाती।

चिकित्सा के लिए दो विशेष बातें

प्रथम यह कि छाती के रोगों में प्रायः अवलेह या गोलियां अधिक लाभदायक सिद्ध होती हैं। क्योंकि अवलेह देर तक कण्ठ में ठहर कर शनैः २ गले से उतरते हैं, और गोलियां भी मुंह में रखकर चूसने से विशेष लाभ पहुंचता है क्योंकि इस प्रकार दवा देर से अन्न नली से होकर निकती है।

(६८) सरतान का समकक्षी

छाती के रोगों, विशेष कर सिल में सरतान भस्म बड़ी गुणकारक होती है। किन्तु सरतान न मिलने पर बकरी का फेफड़ा जलाकर सेवन करना भी उतना ही लाभकारी होता है।

शुष्क व नम कास (खांसी)

दोनों प्रकार की खांसी का पूर्ण विवरण व अपने

अपूर्व, और अनुभूतयोग प्रथम भाग में लिख चुका हूं, जो कि सामान्य द्रव्य होकर भी अद्भुत लाभदायक हैं।

एक योग ऐसा है, जो कच्ची और पतली कफ़ को गाढ़ा बना कर निकाल देता है, और दूसरा उसके विपरीत प्रभावोत्पादक है। अर्थात् जब कफ़ आवश्यकता से अधिक गाढ़ा हो, तो उसे पतला करके निकाल देता है। सारांश यह कि पूर्ण वर्णन कर चुका हूं।

श्वास (दमा)

इस रोग की व्याख्या, कारण, लक्षण आदि प्रथम भाग में देखने का कष्ट करें। यहां कुछेक नए प्राप्त अनुभूत योग और लिखता हूँ, जो कि निस्सन्देह अनुपम हैं। और कुछ विशेष योग 'कंजुलमुजरदात' हिन्दी नाम से अंकित किए हैं। उन्हें देख कर लाभ उठावें।

(६६) कफज श्वास की अपूर्व औषधि

पावभर देशी तम्बाकू, पावभर पुराना गुड़, पावभर छोटी मछली। तीनों को मिला कर खूब कूटें और आक के दूध में नम व शुष्क करें। फिर एक बड़े मिट्टी के कोरे कूजे में बन्द करके मन भर उपलों की आंच दें, और ठंडी होने पर सावधानी से कूजे को खोलकर ढक्कन पर से सत्व उतार कर पीसलें और नीचे की दवा पृथक पीस कर रखें।

सत्व की २ माशा मात्रा और दूसरी औषधि की १ माशा मात्रा बताशे में रखकर जल के साथ सेवन कराएं। एक सप्ताह तक सेवन कराने से कफज श्वास समूल नष्ट हो जायगा।

(शाही संचिका)

(७०) अभूतपूर्व श्वास वटी

ये गोलियां कफज श्वास और जीर्ण ज्वरों के लिए अक्सीर हैं। यह योग १२० वर्ष पुरानी संचिका का है।

योग—आक के फूल, काले धतूरे के बीज, प्रत्येक १ तो०, नमक लाहौरी, काली मिर्च, प्रत्येक ६ माशा। सब को खरल में डालकर अदरक के रस में घोटें, और चने के परिमाण की गोलियां बनालें। और १ गोली नित्य प्रातः बासी मुंह खिलाया करें।

(७१) सन्यासियों का अति विशेष योग

सन्यासी रसायन

यह योग श्वास के अतिरिक्त कुष्ट, ज्वर, नपुंसकता आदि रोगों के लिए भी अति लाभकारी है।

योग—रक्त संखिया, हड़ताल गोदन्ती, शुद्धपारा, गंधक आमला सार, शिंगरफ रूमी प्रत्येक २ तोला।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों को किसी

उत्तम खरल में थोहर के दूध के साथ खरल करें, यहां तक कि पूरा ७ पाव (कच्चा) दूध शुष्क हो जाय। फिर ५ तो० की टिकियाँ बना कर जस्त की दो प्यालियों में बन्द करके ऊपर से लोहे का तार लपेट दें, और ऊपर सात वार कपरोटी करें। कपरोटी एक सूखने पर ही दूसरी करें। पूर्णतया शुष्क हो जाने पर निर्वात स्थान में ७ सेर उपलों की अग्नि दें। इसी प्रकार ३ अग्नि देने पर औषधि बन जायेगी।

सेवन विधि--१ चावल बराबर मात्रा मक्खन या मलाई या हलुआ में लपेट कर दें। केवल ३ मात्राएँ देना ही पर्याप्त है।

लाभ--२० वर्ष का पुराना दमा (श्वास) भी समूल उखड़ जायेगा। कुष्ट रोग के लिए तो अक्सीरवत् है, तथा नपुंसकता को भी दूर करने वाली है। ज्वर के रोगी को ताप रहित अवस्था में देने से ज्वर और दुर्बलता नितान्त दूर हो जायेगी।

हकीम इनायतुल्ला खां साहब की चिकित्सा विधि

उक्त हकीम साहब श्वास रोग के सफल चिकित्सक हैं और सुदूर क्षेत्र में विख्यात हैं। अपने जैतो प्रान्त में आपने कई दयनीय रोगियों को रोगमुक्त किया है। वे

मेरे अंतरङ्ग मित्र हैं, अस्तु कल श्वास वर्णन लिखते समय पाठकों के सौभाग्यवश उनके उपस्थित होने से यह योग प्राप्त हो गया।

(७२) वमनकारक योग

हकीम जी की चिकित्सा विधि यह है कि पहले निम्नांकित योग से वमन करालें फिर चिकित्सा प्रारम्भ करें। एक जवान मुर्ग लेकर उसका पेट चीर कर अन्तड़ियां निकाल दें। किन्तु यकृत व पित्ता आदि न निकालें। तथा ऊपर से पर और बाल भी साफ करदें। फिर कड़वा तम्बाकू लेकर (पीसा हुआ हो) मुर्ग के पेट में भर दें और सींकर घी से चिकनाए हुए मृतिका पात्र में डाल कर पाताल यन्त्र से तैल खींच लें। लगभग १० तोला तैल निकलेगा। उसमें २॥ तोला मैनफल बारीक पीस कर मिलाएं और शीशी में रख लें। आवश्यकता के समय शीशी को हिला कर उसमें से ३ अंगुली चटाएं। थोड़ी देर में खुलकर वमन होगी और छाती कफ रहित होकर हल्की हो जाएगी।

विशेष सूचना--वमन कराने से पूर्व रोगी को हलुवा आदि स्निग्ध पदार्थ खिला देना चाहिये।

(७३) समूल श्वासनाशक सन्यासा योग

यह योग भी श्वास रोग को जड़ से उड़ा देता है।

कई बार का अनुभूत है, मेरे एक मित्र को किसी संन्यासी से प्राप्त हुआ था। जो कि केवल एक सींक तैल लगा कर १० तो० पारे को स्वर्ण बना देता था, चमत्कारी संन्यासी था।

योग—लाहौरी, सांभर और सोंचर तीनों नमक ५-५ तो० शोरा, नौशादर, फिटकरी, प्रत्येक १० तो०, पृथक २ पीस कर मिलालें और एक जंगली खरगोश मार कर उसके रक्त में सारी औषधि लथपथ करके अंतड़ियां व मैदा निकले हुए खरगोश के पेट में आधी भरदें। उस पर श्वेत संखिया ६ मा० पीसी हुई डाल कर शेष दवा रखें और पेट को सी दें। अब उसे मिट्टी की बड़ी हांडी में रख कर ऊपर प्याला औंधा कर भली भांति बन्द करदें और बेरी की लकड़ी की तेज आग पर १६ पहर जलावें। ठन्डा होने पर ऊपर व नीचे की दोनों दवाएं मिला कर बारीक पीस लें और चार रत्ती मात्रा देशी खांड के साथ खिलाएं।

पथ्यापथ्य—केवल घी से बनी हुई पूरी। अन्य सब वस्तुओं व ठन्डे पानी से परहेज रखें। सात दिन तक सेवन कराने के पश्चात् दौरा लाने वाली कुपथ्य वस्तुएं खिलाएं। यदि उनसे दौरा न पड़े तो फिर पथ्य रखने की आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार १ मास तक सेवन कराएँ।

अगर दौरा पड़ जाय तो पुनः नए सिरे से प्रयोग शुरू करें और पूरे ४० दिन तक जारी रखें। आजन्म रोग का दौरा नहीं पड़ेगा।

(७४) श्वास की अन्तिम चिकित्सा

(देहाती दमानाशक रसायन)

योग—फिटकरी श्वेत २ सेर, तूतिया २ सेर, नौसादर, हागाश्वेद, शोरा कलमी, प्रत्येक आधा सेर; लोटा सज्जी पावभर, चूना अनबुझा १० तो०, गन्धक आमलासार २ तो०, संखिया श्वेत ५ तोला, उत्तम वरकिया हड़ताल ५ तो०, मैनशिल १० तो०।

निर्माण विधि—सबको बारीक पीस कर मिट्टी या लोहे के पात्र में डालें, और पात्र के मुंह पर एक ऐसी हांडी रख कर मुखबन्द करें, जिसके पेंदे में छोटी अंगुली बराबर २०-२५ छिद्र हों। फिर उस हांडी में लोहे या पत्थर के ३-४ टुकड़े रखकर उन पर चीनी या सिल्वर का ऐसा प्याला रखदें, जिसमें कम से कम १ सेर पानी आ जावे। अब छिद्र वाली हांडी के ऊपर तीसरी हांडी रखें। और तीनों हांडियों की मुखमुद्रा इतनी दृढ़ होनी चाहिए कि प्रचण्डतम अग्नि से भी औषधि की वाष्प निकल न सके। फिर छाया में सुखाकर सावधानी से भट्टी पर चढ़ाएं और ऊपर की हांडी में ठण्डा पानी भर दें। नीचे आग

जलाते रहें। जब ऊपर की हांडी का पानी गर्म हो जाय, तो निकाल कर पुनः ठण्डा पानी भर दें। इसी प्रकार करते हुए लगातार ६ घन्टे तेज़ आग जलाएं। तत्पश्चात् हांडियों के शीतल हो जाने पर सावधानी से ऊपर कीहांडी हटा कर देखें प्याला रस (अर्क़) से भरा मिलेगा। उसे शीशी में भरलें। आवश्यकता के समय ५ तोला अर्क १५ छटांक विशुद्ध मधु में मिलाकर बोतल में डालकर हिलाएं। शहद बिल्कुल पतला हो जायगा। बोतल में कार्क लगाकर सुरक्षित रख लें।

सेवन विधि—पहिले इसकी ३ माशा मात्रा से आरम्भ कर क्रमशः बढ़ाते जाएं, यहां तक कि १ तोला तक देने लगें। सेवन काल के प्रारम्भिक १५ दिन घी न्यूनाति न्यून खिलावें। १५ दिन उपरान्त यथेष्ट घी खिलाएं।

विशेष-सूचना १—औषधि के सेवन काल में रोगी का रंग काला पड़ने लगता है, यहां तक कि सांवला व्यक्ति पूरा हब्शी बन जाता है। किन्तु इससे घबराना न चाहिए। वरन् यह समझिए कि औषधि पूर्ण प्रभाव दिखा रही है। १५ दिन पश्चात् घी खिलाने से रंग पूर्ववत निखर आएगा।

२—अनेक रोगी इसके सेवन से तीव्र गर्मी और खुश्की अनुभव करते हैं, ऐसे अवसर पर घबड़ाएं नहीं,

अपितु अधिकाधिक अर्क गावजबां पिलाएं। इससे रोगी को शांति मिल जायगी, और वह लाभ उठाने योग्य हो सकेगा।

कुशल चिकित्सकों ही के लिए

(७५) निमोनिया व पार्श्वशूल का विशेष संन्यासी योग—शिंगरफ चूर्ण

यह योग निमोनिया, व पार्श्वशूल के अतिरिक्त नपुंसकता की भी एक ही औषधि है।

योग—शिंगरफ रूमी १ तो० की डली के ऊपर मुर्गी के अण्डे की पीतता में १ तोला रजत चूर्ण घोल कर लेप कर दें। तदनन्तर श्वेत धान्यभ्रक को उसी विधि से कुक्टांड पीतता में मिश्रित करके लेप कर दें। फिर काली मिर्च ६ मा०, पिप्पली ६ मा०, बारीक पीसकर कुक्कुटांड पीतता में घोलकर तीसरा लेप कर दें। फिर दृढ़ सराव संपुट करके सुखालें और १ छटांक उपलों का चूरा लेकर उसको आग लगा दें। जब ज्वाला शांत हो जाय तो० उसी प्रकार आंच दें, और नितान्त शीतल होने पर २ तो० बढ़ाते जायं। यहां तक कि आधा सेर तक पहुँचा दें। तत्पश्चात् ५-५ तोला बढ़ा कर २ सेर तक पहुंचा दें। किन्तु आंच सदा ज्वाला शांत होने पर दें।

अन्त में एक आंच २॥ सेर उपलों की दें। औषधि बन जायगी। उसे निकालकर सूक्ष्म पीस लें।

सेवन विधि—४ चावल से १ रत्ती तक मक्खन, मलाई या खांड में मिला कर दें।

लाभ—इसकी एक ही मात्रा से पार्श्व शूल व निमोनिया के रोगी को आराम हो जाता है। नपुंसकता व सुस्ती के लिए अमृत के समान है। प्राकृतिक स्तम्भन उत्पन्न करती है, सारांश यह कि अनुपम औषधि है।

---

(७६) क्रिमोनिया को अंतिम चिकित्सा

योग—संखिया ३ तो०, फिटकरी ५ तोला, दोनों के ३-३ भाग करलें। और एक २ भाग आक के दूध में खरल करें और शुष्क होने पर सेर भर उपलों की आंच दें। फिर उसमें दवा का दूसरा भाग मिलाकर आक के दूध में खरल करें और ३ पाव उपलों की आंच दें। इसी प्रकार तीसरी बार आध सेर उपलों की आंच देकर ठंडा होने पर पीसकर रख लें।

सेवन विधि—आधा चावल के बराबर मात्रा मक्खन में रखकर खिलाएं और रोगी को धूप और खुली हवा में विठा दें। अपूर्व गुणप्रद योग है।

(७७) पार्श्वशूल की सर्वोत्तम वटी

योग—सीठा तेलिया, अफीम, केशर, प्रत्येक ६ माशे। सब को भलीभांति मिला कर चने बराबर गोलियां बनालें और सूखने पर शीशी में रखलें।

सेवन विधि—१ गोली अर्क गावजबां या ताजा जल के साथ नित्य सेवन कराएं।

लाभ—पार्श्वशूल व निमोनिया के लिए अत्यधिक सफल औषधि है। (शाही संचिका)

(७८) पार्श्वशूल की बाह्य चिकित्सा

पीड़ाहरण तेल

(हमीम महबूब आलमखां, फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट लद्दाख द्वारा प्रदत्त)

यह तेल पार्श्वशूल में बाह्य अङ्ग पर मालिश करने से अतिशीघ्र लाभ हो जाता है।

योग—जमालगोटे की गिरी १० तोला, मालकंगनी २० तोले बीर बहूटी, लौंग प्रत्येक १ तोला, किशमिश १० तोला, सबको बारीक पीस कर कूंडे में मिलालें और जिस प्रकार बादाम का तेल निकाला जाता है, उसी प्रकार पानी का छींटा देकर कूंडे को थोड़ा गर्म करके औषधियां भली प्रकार घोटें। इससे तेल निकल आएगा। उसे शीशी में भरलें। ५ तोला तिल तेल में उपरोक्त तेल की ४० बूंदें मिलाकर पीड़ा स्थल पर मर्दन करें ऊपर से रूई का नम्दा या अरंड का पत्ता गर्म करके बांध दें। तत्काल पीड़ा दूर हो जायगी।

(७९) चमत्कारी लेप

चूना क़लई उत्तम प्रकार का शहद में घोंट कर पीड़ा स्थल पर लेप करदें। सेखते ही पीड़ा को रोक देगा। कई बार का अनुभूत योग है।

(८०) एक चमत्कारी तैल

यह तैल बनाने में अति सुगम और गुणों में अद्वितीय है। काला खेड़ी जि० बिजनौर निवासी श्रीयुत वैद्य किशनलाल वर्मा ने प्रदान किया है।

योग—कायफल, जायफल, लौंग, श्वेत मौम, प्रत्येक ३ माशा, रूमी मस्तंगी व अफीम २-२ माशा, सब कूटने वाली औषधियां कूट छान कर ३ तोला तेल में पका कर रखें और आवश्यकता पड़ने पर पीड़ास्थल पर मालिश करके रुई के नम्दे से सेंक दें और फिर ऊपर रखकर कर बांध भी दें। त्वरित पीड़ा रुक जायगी। उक्त वैद्य जी का २० वर्ष से परीक्षित योग है।

(८१) वंद्यक टकोर

यह एक टकोर है, जिससे मरणासन्न रोगी भी स्वस्थ हो जाते हैं। जब कि पार्श्वशूल के रोगी के बचने की आशा मात्र न रह गई हो। ईश्वर कृपा से इस टकोर से १ घन्टे के भीतर ही आराम होकर रोगी की प्राण रक्षा हो जाती है। अनेकों बार की परीक्षित है। 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग में पार्श्वशूल के प्रकरण में इसे देखलें।

हृदय-सम्बन्धी रोग

हृदय का महत्व प्रथम भाग में समझाया जा चुका है उसी में धनवानों और निर्धनों दोनों के सामर्थ्यानुकूल योग भी लिखे जा चुके हैं। हां अवशिष्ट दो विशेष उल्लेखनीय और प्रभावकारक योग यहां अंकित किये जाते हैं।

(८२) हृदय रोगों के लिए अनमोल औषधि मोद दायिनी

यह औषधि हृदय की दुर्बलता, धड़कन तृषा, अचेतता आदि के लिये अनमोल रसायन है।

योग—भस्म संगेयशद उत्तम १ तोला, अकीक भस्म १ तो०, प्रवाल भस्म १ तो०, वंशलोचन १ तो०; जहर मोहरा, हरीतकी भस्म १-१ तो०, रजत पत्र १ दफ्तरी, स्वर्ण पत्र नग १०, रूह केवड़ा, रूहगुलाब, रूहबेद मुश्क १-१ छटांक।

निर्माण विधि—किसी चीनी या कांच के खरल में भस्मों को खरल करें, फिर उसमें वंशलोचन डालकर खरल करें। भली भांति खरल हो जाने पर रजतपत्र और स्वर्ण पत्र एक २ करके तीनों रूहों को बारी २ से डालते और खरल करते जावें यहां तक कि सुरमे की भांति बारीक

हो जावें। फिर इसको शीशी में सुरक्षित रखें और शीशी में दृढ़ कार्क लगावें, ताकि नमी न पहुंचे।

सेवन विधि—१ से २ रत्ती तक खमीरा गावजबां सादा ५ मा० या गुलकन्द आदि में मिला कर नित्य खिलाएं।

लाभ—न केवल हृदयकी दुर्बलता, धड़कन अचेतना आदि के लिए लाभप्रद है, अपितु समस्त उत्तमांगों और मस्तिष्क को पुष्ट करने वाला है। जो सज्जन कुछ दिन इसे सेवन करेंगे, अपने में एक महान अंतर पायेंगे।

(८३) भस्मों की निर्माण विधियां

उपरोक्त भस्मों की निर्माण विधियां प्रथम भाग में सविस्तार वर्णन कर चुके हैं। वहां देखलें और उसी विधि से भस्म सगेयशाद बनालें। भस्में इतनी कोमल होनी चाहिए कि उनमें रड़क अवशिष्ट न रह जाय।

हृदय-धड़कन

हृदय की दुर्बलता, स्नायुओं की दुर्बलता, चिन्ताओं की भरमार, मैथुन की अधिकता अधिक धूम्रपान, मद्यपान आदि से हृदय की गति अपेक्षाकृत बढ़ जाती है और कई बार अचेतनावस्था तक पहुंचा देती है।

मूर्छित रोगों के अशुभ लक्षण

चूंकि हृदय धड़कन के साथ अचेतना का भी वर्णन आ गया है, अतः दुस्साध्य मूर्छा रोगी के लक्षण वर्णन कर देना भी उचित समझता हूँ, ताकि वैद्य भूल न कर बैठें।

जिस रोगी का रंग मूर्छितावस्था में हरापन लिए हो जाय और ग्रीवा तथा सिर लटक जायं और सीधी न हो सके, तो समझ लो कि वह संसार से विदा हो चुका है।

(८४) हृदय धड़कन के लिए स्वर्णिम बिन्दु

गन्धक द्रावण

(पादरी डा० एस० जे० राय, एम. वी. एच. द्वारा प्रदत्त)

योग—गंधक आंवलासार १० तो०, सोडा कास्टिक १५ तोला, दोनों को चीनी या कांच के खरल में भली भांति खरल करें, तत्काल अर्क के रूप में होकर औषधि बन जायगा। १ बूंद से ३ बूंद तक ठंडे दूध में मिलाकर पिलाएं। राक्षसी रोग का अनमोल योग भी है, और गंधक को द्रव बनाने की उत्तम विधि भी ज्ञात हो गई, जो हरेक नहीं जानते।

[हृदय व यकृत दुर्बलता की अपूर्वौषधि]

(८५) रजती फौलादभस्म

यह योग स्व० स्वामी लक्ष्मण जी द्वारा प्रदत्त है।

योग--फौलाद चूर्ण ३ तोला, रजतचूर्ण २ तोला। पक्के खरल में डालकर अम्लवेत बूटी के रस में ८ घंटे तक खरल करें फिर टिकियां बनाकर सरावसम्पुट करके १० सेर उपलों की आंच दें। ६-७ घंटे आंच देने से भस्म बन जायेगी।

सेवन विधि---१ रत्ती मक्खन या किसी खमीरा में दें।

लाभ - हृदय व यकृत की दुर्बलता दूर करके चेहरे की रंगत लाल कर देती है। यह प्रमेह नाशक भी है।

(८६) शर्बत सेव

सेव का रस आधसेर, बादामी गाजर का रस पावभर, अर्क वेदमुश्क पावभर, श्वेत मिश्री ३ पाव। प्रचलित विधि से शर्बत बनालें।

सेवन विधि---प्रातः सायं २ तोला शर्बत पानी में मिला कर पिया करें। अति शीघ्र लाभ पहुंचाता है। अति उत्तम शर्बत है। (सन्यासी संचिका)

यकृत व प्लीहा रोग

यकृत क्या है ? इसका पर्याप्त वर्णन प्रथम भाग में किया जा चुका है, यहां कुछ विशेष आवश्यक बातें बताई जाती हैं जो कि चिकित्सकों और रोगियों दोनों के लिए आवश्यक और स्मरणीय हैं।

स्वर्णिम आदेश

(१) शीतल पदार्थ व औषधियां अधिक सेवन करना यकृत रोगों का उत्पादक होता है, अतः शीतल वस्तुओं से यथा सम्भव बचना चाहिये।

(२) लेसदार वस्तुएं अधिक खाने से यकृत में सुद्दा पैदा हो जाता है।

(३) कड़वी दवाएं और सुगन्धित वस्तुएं यकृत को लाभकर हैं।

(४) यकृत रोगों में दी जाने वाली चूर्ण औषधि अति सूक्ष्म होनी चाहिये, ताकि उसका प्रभाव यकृत पर सरलता से हो सके।

चिकित्सकों के गुप्त चुटकुले

(१) चाहे किसी कारण से यकृत पर सूजन हो, उससे जलोदर हो सकता है।

(२) यकृत शोथ में अतिसार का आरम्भ होना प्रायः घातक होता है।

(३ यदि यकृत का शोथ प्लीहा के रूप में हो जाय तो शुभ है।

(४) यदि यकृत्तोदर के रोगी के अण्डकोष सूज जाएं तो उसके स्वस्थ होने की आशा नहीं रहती।

(५) यकृतोदर रोगी को खांसी हो जाना मृत्यु का संदेश है।

यकृत रोगों की सर्वोत्तम औषधियां

यहां कुछ ऐसी औषधियों के योग अंकित किए जाते हैं जो कि यकृत रोगों के लिए रामबाण हैं। इन से केवल चिकित्सक ही नहीं अपितु सर्वसाधारण भी असीम लाभ उठा सकता है।

(८७) जिगर के लिए अक्सीर

यह योग हकीम बालकृष्ण जी अग्रवाल ने अपने गुरु वैद्य साधूराम जी से प्राप्त करके भेजा है, असीम लाभकारी और विशेष गुप्त योग है और शतशोनुभूत है।

योग—पीली हर्ड़ १५ तोला, बहेड़ा १० तो०, आंवला १० तो०, काली छोटी हरड़ १० तो०, काबली हरड़ १५ तो०, त्रिकुटा १०॥ तो०, मजीठ १२ तो०, दारचीनी १ तो०, कासनी ५ तो०, सौंफ ५ तो०, मण्डूर

४० तो० । सबको कूट कर एक कुष्मांड में ४ वर्ग इन्च का टुकड़ा निकाल कर उसमें भरदें और ऊपर से उस टुकड़े को बन्द करके लोहे के पात्र में रख दें । यहां तक कि सूखने पर तनिक दरदरा कर लें । और उसमें त्रिफला १५ तोला, मजीठ ५ तो० कूट कर मिला दें और बर्तन में डाल कर २ सेर पानी में भिगो कर २१ दिन छाया भूमि में गाड़ कर रखें । इसके पश्चात् १ सेर दही में मिला कर फिर २१ दिन के लिये दबा दें । फिर निकाल कर सुखालें । और पीस कर शीशी में भर लें । बस जिगर के लिए अक्सीर औषधि बन गई ।

मात्रा---२ माशा दही के पानी के साथ दें ।

लाभ---यकृतोदर, यकृत दोष, पाण्डु रोग आदि के लिए परम लाभ दायक औषधि है ।

(८८) फौलादी शर्बत

योग---मजीठ ५ तोला, शुद्ध फौलाद चूर्ण ५ तोला दोनों को एक बड़े तरबूज में काट कर भर दें और ऊपर से कपरोटी करके २१ दिन पश्चात् उसका रस निकाल कर छान लें व सम भाग मिश्री मिलाकर शर्बत बनालें ।

सेवन विधि---१-१ तोला प्रातः व सायंकाल नित्य पिलाया करें ।

लाभ—यकृत शोथ, यकृत दुर्बलता, रक्त अल्पता आदि को कुछ दिनों में ही दूर करके शरीर को शक्ति पूर्ण और चेहरे को रक्त वर्ण कर देता है।

(८९) यकृत के लिए अनुपम चूर्ण

योग—रेवन्द खताई १ भाग, नौशादर १ भाग, कलमी शोरा २ भाग, सबको सूक्ष्म पीसकर रखलें और नित्य ४ रत्ती पानी के साथ खिलाएं। यकृत रोगों और अजीर्ण ज्वरों के लिए अक्सीर है।

(९०) यकृत दोष नाशक वटी

योग—त्रिफला १५ तोला, पिप्पली १ तोला, मजीठ ५ तो०, मंडूर ५ तोला, कूजा मिश्री १० तोला, दही १ सेर। सब औषधियों को बड़े खरल में डालकर दही मिला कर खरल करें, यहां तक कि सेर भर दही सोख जाए। फिर इसी प्रकार खरल करते २-३ सेर दही सुखादें, यहां तक कि अंगुली के नीचे न रड़कें। तब जंगली बेर के परिमाण की गोलियां बनालें।

मात्रा–१ गोली प्रातः दही की लस्सी के साथ खिलाएं।

लाभ—यकृत दुर्बलता, रक्त अल्पता, यकृतशोथ, प्लीहा आदि को जड़ से मिटाकर चेहरे को रक्तवर्ण कर देती हैं।

पाण्डु-रोग

देहाती अनुभूत योग संग्रह के प्रथम भाग में इस रोग के विषय में विस्तृत व्याख्या की जा चुकी है और साथ ही ऐसे २ उत्तम योग भी दिए जा चुके हैं, जिनकी उपमा नहीं मिल सकती। सैकड़ों रोगियों पर अनुभव करने के पश्चात् लिखे गये हैं, और पाण्डु रोग का कारण निदान चिकित्सा पथ्य आदि भी प्रथम भाग में ही लिख दिये हैं, अस्तु यहां अब कुछेक नवीन योग-मात्र लिखदेना ही पर्याप्त होगा।

(९१) पाण्डु रोग नाशक सन्यासी योग

यह योग हकीम शरफुद्दीन साहब चक नं० ३२८, जिला लायलपुर द्वारा प्राप्त हुआ है।

योग—फिटकरी व बैंगन का गूदा बराबर २ लेकर बारीक पीसें, और चने के बराबर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः दोपहर व सायं शर्बत बजूरी २ तोला के साथ सेवन करायें। तेल व ठंडी वस्तुओं से परहेज़ आवश्यक है। यकृतोदर और पाण्डु रोग की पूर्ण अनुभूत और विश्वस्त औषधि है।

(९२) एक अति सुगम योग

यह योग वैद्य पूरणचन्द जी चक नं० १२८ झंडा-वालां द्वारा प्राप्त हुआ है।

योग—इमली २ तो०, आधा सेर पानी के साथ कोरे बर्तन में भिगो दें और आध घंटे बाद छानकर मिश्री मिलालें। रोगी को पहिले ६ मा० तुख्म बालंगूसावत ही फंका कर ऊपर से वही इमली का शर्बत पिला दें। इसी प्रकार एक सप्ताह तक सेवन कराते रहें। निश्चय ही आराम हो जायगा। अनेक बार का अनुभूत योग है।

(९३) सन्यासी चुटकुला

यह योग वैद्य दुर्गा प्रसाद जी डी. एस. एम. बड़ौदा ने प्रेषित किया है। चाहे पांगडु के रोगी का सारा शरीर पीला पड़ गया हो, नेत्र, नख, त्वचा, मूत्र आदि सब पीत हो गए हों, इस औषधि के कण्ठ से नीचे उतरते ही रोग में कमी होना प्रारम्भ हो जाता है। आमाशय में पहुंचते ही ठंडक प्रदान करती है, मानों विकल रोगों को शांति प्राप्त हो जाती है। साथ ही सरलतम योग है।

योग—मूली के हरे पत्ते कूटकर रस निकाल लें। युवा व्यक्ति के लिए आध सेर रस प्रति दिन पर्याप्त है। इस रस में मोटी दाने की चीनी मिला कर भलीभांति मीठा करलें, और मलमल के बारीक कपड़े से छान कर पिलादें। पीते ही रोगी प्रसन्न हो स्वतः कह देगा कि उसे पूर्ण आराम मिला है। भूख खुलकर लगेगी, दस्त साफ़

आएंगे, और रोग प्रति दिन घटता ही जाएगा। यहां तक कि सप्ताह भर में रोग का नाममात्र भी न रह जायगा हकीम साहब का यह ऐसा विश्वस्त योग है कि उन्होंने इसे गलत प्रमाणित करने वाले को २५) पुरस्कार देना कहा है।

(६४) अनुपम यकृतोदर औषधि

यह रोग जनाब महबूब आलम खां साहब फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट लद्दाख नेप्रेषित किया है। कई नम प्रदेशों में प्रायः निर्धन लोगों का पेट बहुत बढ़ जाता है और टांगें सूख कर पतली हो जाती हैं, उनके लिए तथा यकृतोदर के लिये यह योग विशेष लाभकारी है।

योग—सिरका अंगूर ८ तो०, नींबू का रस ८ तो०, मूली का पानी और आकाश बेल का रस प्रत्येक ८ तो०, नौसादर ५ तो०।

निर्माण विधि—नौशादर के छोटे छोटे टुकड़े करके सब चीजों को एक बोतल में भर कर धूप में रख दें और चार-पांच दिन पश्चात् रोगी को निम्न विधिवत् सेवन कराएं।

सेवन विधि—प्रथम दिवस रोगी को १ तो० प्रातः पिलाएं। दूसरे दिन २ तो० तीसरे दिन ३ तो० चौथे

दिन ४ तो० पिलाएं। फिर नित्य प्रति ४ तो० या जितना अनुकूल पड़े उतना पिलाते रहें। एक सप्ताह में पूर्ण लाभ हो जायेगा। पूर्ण अनुभूत योग है।

विशेष सूचना—आकश के बेल वह ले जो बेरी के वृक्ष पर हो।

प्लीहा शोथ (तिल्ली वृद्धि)

इस रोग का भी पूर्ण विवरण, कारण, पथ्य आदि प्रथम भाग में ही देखने का कष्ट करें। नीचे कुछ विशेष लाभकारी योग अङ्कित किए जाते हैं।

(९५) प्लीहा शोथ नाशक अर्क

(जनाब सैयद मुज़फ्फर अली खां साहब जानशा द्वारा प्रेषित)

योग—सज्जी १॥ सेर, अनबुझा चूना ३ पाव। दोनों को अलग २ पीस कर मिलालें और ७ भाग करलें। अब एक मिट्टी के बर्तन में एक भाग दवा डाल-कर पानी डालें। और आग पर चढ़ायें। जब एक उबाल आ जाये तो नीचे उतार कर कुछ देर पड़ा रहने दें। जब गाद नीचे बैठ जाये और पानी निथर जाय तो ऊपर से पानी लेकर उसमें दूसरा भाग औषधि डाल कर पकावें और इसी प्रकार सातों भाग समाप्त कर दें। अन्तिम बार फलालैन के कपड़े से छान कर सुरक्षित रख लें। अर्क ठीक प्रकार

से बन गया है या नहीं ? यह जानने के लिए थोड़ा सा अर्क निकाल कर उसमें सिर का एक बाल डालें। अगर वह जल जाय तो समझ लो अर्क ठीक है, अन्यथा सज्जी और चूना डाल कर पुनः पकावें। बस ठीक अर्क बन जायगा।

मात्रा—१ माशा से २ मा० तक बताशे में डाल कर खिलाएं।

लाभ—कुछ दिन के सेवन से ही प्लीहा शोथ नष्ट होकर तिल्ली अपनी असली अवस्था में आ जायगी।

विशेष सूचना—इस अर्क का सत्व भी बनाया जाता है जो कि आमाशय रोगों के लिए अक्सीर है। उसकी निर्माण विधि आमाशय के प्रकरण में देखलें।

(६६) तिल्ली की एक प्रसिद्ध औषधि

[डा० साहब की बोतल]

बागड़ प्रान्त में एक डाक्टर साहब तिल्ली की एक बोतल बड़े महंगे दामों में बेच रहे हैं और औषधि अद्भुत गुणकारी होने के कारण दूर तक प्रसिद्ध हैं। बड़े प्रयत्नों से मैंने उसका योग प्राप्त किया तो यह जान कर दंग रह गया कि इतनी महंगी औषधि की असली लागत केवल १२ आने पड़ती है। अस्तु अपने पाठकों के लिए वह योग एक अपूर्व उपहार के रूप में प्रकट कर रहा हूं।

योग--मगनेशिया १० औंस, कुनैन हावर्ड १ ड्राम सल्फ्यूरिकएसिड डिल ४ ड्राम, फाइसल्फास १ ड्राम, शोरा १ औंस।

निर्माण विधि--पहिले मगनेशिया को बोतल में डालें और फिर शोरा पीसकर डाल दें और ५ औंस पानी मिला कर खूब हिलाएं। फिर कुनैन को सल्फ्यूरिक-एसिड घोल कर बोतल में डालदें और खरल को पानी से धोकर उसी में डालदें, यदि बोतल कुछ खाली रहे, तो पानी भरदें।

सेवन विधि—प्रातः काल शौच वा स्नानादि से निवृत्त होकर बोतल को हिला कर कांच या चीनी के प्याले में १ औंस दवा निकालें और रोगी को पिला कर ३ मिन्ट सीधा उसी स्थान पर लिटादें। इसी प्रकार नित्य सेवन कराएं।

पथ्य--मूंग की दाल, गेहूँ का फुल्का व खिचड़ी आदि।

वर्जित वस्तुएं--मिर्च, गुड़ आदि न खिलाएं। शाम को ३ बजे दूध घी मिला कर पिलावें। यदि काले दस्त हों, तो घबराएं नहीं। नई तिल्ली आधी बोतल से और पुरानी दो बोतलों के सेवन से नितांत मिट जाती है।

(९७) अति स्वादिष्ट और तिल्ली वृद्धि नाशक अंजीर के अचार का चिकित्सा योग

यद्यपि एक योग प्रथमभाग में भी लिखा जा चुका है, किन्तु यह उससे बहुत ही अधिक लाभकारी है, अतः पाठकों की सेवा में अर्पित है। २४ दिन तक इसे निरंतर सेवन करने से बढ़ी हुई तिल्ली नितान्त ठीक हो जायेगी और भूख खुल कर लगने लगेगी।

योग—अंजीर २४ दाने, नौशादर, खूबकलां, रेवन्द चीनी, श्वेत जीरा, श्याम जीरा, पोदीना, बड़ी इलाइची, टाटरी प्रत्येक १-१ तोला लेकर बारीक कूटकर चीनी या कांच के मर्तबान में डालकर ऊपर से ३६ तोला उत्तम सिरका डालकर रख दें। और २० दिन पश्चात् सेवन करें। प्रति दिन १ अंजीर रोगी को खिलाएं। निश्चय ही लाभ होगा।

(९८) प्लीहा नाशक चूर्ण

योग—शुद्ध गंधक ५ तो०, खील सुहागा, काला नमक सांभर नमक प्रत्येक १-१ तोला बारीक पीस कर रखलें

सेवन विधि—बच्चों को १ माशा, युवकों को ३ माशा प्रति दिन पानी के साथ खिलाया करें।

लाभ—प्लीहा शोथ, अपच, क्षुधान्यूनता आदि को दूर करके पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करेगा।

आमाशय रोग

आमाशय रोगों का पूर्ण विवरण हम प्रथम भाग में लिख चुके हैं। किन्तु फिर भी अनेक आवश्यक बातें नीचे लिखी जा रही हैं। क्योंकि आमाशय शरीर का वह महत्वपूर्ण अवयव है, जिसे 'रोगों का घर' कहा जाता है। क्योंकि पाचन शक्ति की दुर्बलता और पाचक यन्त्रों की क्रियाशिथिलता से ही विशूचिका, यकृतदुर्बलता, पांडु रोग, ज्वर, प्लीहाशोथ आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। प्राचीन वैद्यों, हकीमों और आधुनिक डाक्टरों ने भी चिकित्सा में आमाशय का विशेष ध्यान रखना एक स्वर से आवश्यक माना है।

रोग विवरण से पूर्व आमाशय को नीरोग रखने के लिए कुछ विशेष आदेश लिखे जाते हैं, जिन पर आचरण करना नितांत लाभदायक रहता है अस्तु जो सज्जन इन पर आचरण करेंगे, सदैव ही नीरोग और स्वस्थ रहेंगे।

स्वास्थ्य के लिए आवश्यक नियम

(१) जब तक भली भांति भूख न लगे, भोजन न करो और भोजन करते समय थोड़ी भूख शेष रख कर हाथ खींचलो।

(२) यदि तबियत अधिक सुस्त हो तो भोजन न करो और यदि करो तो अति अल्प। अधिक खाने से आमाशय पर जोर पड़ेगा और कोई न कोई रोग पीछे लग जायगा।

(३) लेमन, सोडा, बर्फ आदि का नैत्यिक सेवन आमाशय को दुर्बल बना देता है। हां कभी २ सेवन करने में कोई हानि नहीं।

(४) अपने भोजनकाल में अनेक प्रकार के भोजन रखवा कर खाना अमीरी का लक्षण नहीं, अपितु यदि मुझ से पूछो तो स्वास्थ्य के शत्रु को आमन्त्रित करना है।

(५) सदैव नियमित समय पर भोजन करना स्वास्थ्य के लिए हितकर है। वार २ थोड़ा २ खाते रहना स्वास्थ्य रक्षा के नियम के विपरीत है।

भोजन खाने की विधि

ग्रास को भली भांति चबा २ कर खाना चाहिये। किन्तु यथा सम्भव शीघ्र खा लेना चाहिये। बिना चबाये ग्रास निगल जाना तथा घन्टों तक चलाते ही रहना दोनों हानि कर हैं।

पानी पीने की विधि

पानी को एक दम गटागट चढ़ा जाना अहितकर होता है इससे आमाशय की ऊष्मा के बुझ जाने की

आशंका रहती है पानी को कमसे कम ३ सांस लेकर पीना चाहिए।

चिकित्सकों के अमूल्य आदेश

१—आमाशय के लिए प्रयुक्त होने वाली औषधि अधिक सूक्ष्म न करनी चाहिए क्योंकि दरदरी दवा अधिक देर ठहर कर अधिक लाभ पहुंचाती है।

२—लेशदार दवाएं आमाशय के लिए हानि कारक होती हैं। अस्तु यदि खांसी व अतिसार आदि के साथ आमाशय भी दोषपूर्ण हो तो बीहदाना के सिवा अन्य औषधियों से बचना अत्यावश्यक है।

३—सुगंधित द्रव्य तथा पोदीना, जीरा बड़ी इलायची व तज आदि आमाशय के लिए लाभदायक होते हैं।

४—रोटी सदैव बिनाछने आटे की खाना उचित है। आधुनिक चिकित्सक आटे की छान में विटामिन मानते हैं, जो आमाशय के लिए अत्यन्त पौष्टिक होता है।

कुछ आवश्यक बातें

कई बार ऐसी बातें बड़ी २ औषधियों से भी बाजी मार लेजाती हैं, अस्तु हम उनका लिखना आवश्यक समझते हैं। इनको साधारण समझ कर ध्यान न देना भारी भूल होगी।

अमृत ही विष

(१) दूध निस्सन्देह भू-लोक का अमृत है, इसकी उपमा अन्य नहीं। किन्तु यदि दूध के साथ खट्टी वस्तुओं का सेवन किया जाय तो वह अमृत ही विष बन कर कुष्ट आदि रोगों का कारण बन जाता है। अतः विशेष ध्यान रखो कि दूध के साथ खटाई प्रयोग न करो।

(२ तरबूज, ककड़ी, खीरा आदि निराहार मुख कदापि न खाएं। क्योंकि क्षुधातुर अवस्था में इनका सेवन करने से ये सब पित्त रूप में परिणित हो जाती हैं। इसी प्रकार भरे पेट भी इनको न खाना चाहिये, क्योंकि अजीर्ण हो कर विशूचिका होने की आशंका रहती है। हां इन दोनों अवस्थाओं के मध्य में खाना खाना चाहिए। प्रत्यक्षतः यह बात सामान्य सी है, किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(३) तांबे और पीतल के बर्तनों पर बिना कलई कराए उनमें भोजन करना बड़ा ही हानि कारक होता है।

(६८) हिचकी की अपूर्व चिकित्सा

यूं तो हिचकी विवरण भी प्रथम भाग में अङ्कित किया जा चुका है किन्तु कभी २ यह रोग ऐसा चिपटता

है कि हटने का नाम ही नहीं लेता। अतः यहां एक ऐसा योग लिखा जाता है, जो तत्काल प्रभाव प्रदर्शक है। यदि इसके सेवन से भी हिचकी बन्द न हो तो असाध्य समझ लेना चाहिये।

योग—शुद्ध मैनसिल १ तोला, शुद्ध पारा १ तो० शुद्ध आंवला सार गन्धक १ तोला, काली मिर्च ८ तो०, शुद्ध बच्छनाग १ तो०।

निर्माण विधि—पारे, गन्धक की कजली तैयार करके शेष औषधियां सूक्ष्म पीस कर पिलालें और खूब घोंट कर शीशी में रखें।

सेवन विधि—४ रत्ती से १ माशा तक मधु में मिला कर चटाएं। और प्रकृति का खेल देखें। तत्काल ही हिचकी बन्द हो जाएगी।

विशेष सूचना— विशूचिका, हिचकी, संग्रहणी, पाचन शक्ति की दुर्बलता की अन्य चिकित्साएँ प्रथम भाग में देखें। यहां अब कुछ ऐसे उत्तमोत्तम योग अङ्कित किए जाते हैं, जो सभी आमाशय रोगों के लिए अतीव लाभ दायक हैं।

(६६) पाचक सत्व चूर्ण

यह भोजन पाचक, क्षुधा प्रदीपक और पौष्टिक चूर्ण

योग मुझे श्रीमान् कादिर बख्श साहब ने प्रदान किया है, जो कि समस्त चूर्णों से उत्तम व रुचिकर है।

योग---नमक लाहौरी, नमक काला, नमक शोरा, नमक मन्हारी, नमक सुहाला, नमक सांभर, नमक नली, मण्डूर भस्म, लोटाक्षार, यवक्षार, शुद्ध आमलासार गन्धक, कच्चा सुहागा, कलमी शोरा, सूंठ, काली मिर्च, पिप्पली, विशुद्ध हींग प्रत्येक ३-३ तोला, नौशादर ४ तो० नींबू रस १॥ पाव, अदरक रस पाव भर, घी ग्वार का रस पाव भर, मीठे अनार का रस पावभर, सब को खुले मुँह कांच-पात्र में बन्द करके ४० दिन तक धूप में रखें फिर मुंह खोल कर धूप में सुखालें और पीस कर चूर्ण निकालें।

सेवन विधि---२ रत्ती से १ मा० तक विशेष अव-सर पर २ माशा तक सेवन करा सकते हैं।

लाभ---क्षुधा अल्पता, आमाशय का भारीपन, उदर शूल, विशूचिका, जी मिचलाना, वमन, अजीर्ण, यकृतोदर, पाण्डु रोग, अतिसार मस्तिष्क शूल, उदर पीड़ा, खट्टे डकार प्रतिश्याय, नजला, अन्य शूल, कोष्ट बद्धता आदि रोगों के लिए एक मात्र औषधि है। चेहरे की रंगत निखारता है।

(१००) पाचक चूर्ण

अतीव गुणकारी और सुगमता से अल्प व्यय में ही बन जाता है। इसे बन्नु में एक सज्जन बनाते थे। बड़ा ही सुस्वाद भी होता है। खूब धड़ाधड़ बिकने वाला है, और आमाशय के हररोग के लिए लाभकारी है।

योग--नौशादर, सौंफ, अजवायन, काला नमक, सांभर नमक, टाटरी प्रत्येक १-१ तोला, अनारदाना, पोदीना, अमचूर प्रत्येक २-२ तो०, काली मिर्च ६ माशा, पिप्पली ३ मा०। सब को कूट कर बारीक करके मिलालें और १ माशा से २ माशा तक खिलाएं। भूख को बढ़ाता है, उदरशूल खट्टी डकार, अन्शूल आदि के लिए परम लाभदायक है।

(१०१) सुविख्यात स्वीट साल्ट

यह औषधि हकीम मुख्तार अहमद साहब संपादक 'तिब्बेजदीद' का सुविख्यात और विज्ञप्त योग है। आपके विज्ञापन में कोई अतिशयोक्ति नहीं, अपितु विज्ञापन के सारे गुण औषधि में पाये जाते हैं।

विज्ञापन का संक्षिप्त सारांश

स्वीट साल्ट--गर्भवती स्त्रियों का प्राण रक्षक है, अल्पमात्रा से गर्भावस्था के सारे कष्ट दूर कर देता है।

ज्वरकी अवस्था में देने से ज्वर, प्यास और बेचैनी को शांत करता है। समस्त रक्त विकारों को दूर कर चेहरे को लाल कर देता है, खाज व छपाकी के लिए भी हितकर है, शीत ज्वर में मात्रा पानी में घोलकर पिलाने से तत्काल रोगी को आराम मिल जाता है, सुस्वाद और रेचक है औषधि सेवन के १० मिनट उपरांत बिना किसी कष्ट के रेचन प्रारम्भ हो जाते हैं।

वही योग अब हम अपने प्रिय पाठकों को भेंट करते हैं।

योग--टार्टरिक एसिड २ औंस, मगनेशियम सल्फास १ औंस, सोडियमबाई कार्वोनेट २ औंस, पोटैशियस-बाई टारट्रेट २ औंस, मगनेशियम साईट्रेट २ औंस, दानेदार शुगर (चीनी) ४ औंस।

निर्माण विधि--सब औषधियों को पृथक २ खरल करके मिलालें। और बोतल में सुदृढ़ काक लगाकर रखें। वर्षा ऋतु में चूंकि ये औषधियां पानी बन जाती हैं, अस्तु बनाना ही व्यर्थ होगा।

सेवन विधि--आवश्यकता पड़ने पर ६ माशा दवा पानी में घोलकर पिलाएं। रेचन के लिए २ तो० की मात्रा लेनी चाहिए। इसके गुण विज्ञापन में लिखे जा चुके हैं। फ्रूटसाल्ट से भी उत्तम वस्तु है।

(१०२) सन्यासी पाचक योग

हमारे प्रान्त में काठिया नाम एक बूटी प्रसारिणी की किस्म की पाई जाती है, जिसके फूल अदेरंग के होते हैं। एक फूल तोड़कर खाएं, तो बड़ी तेजी और चिरचराहट प्रतीत होती है। इसकी फलियां मिर्च के समान तेज़ होती हैं। इस बूटी को छाया में सुखा कर व जलाकर विधिवत् चार बनालें और २ रत्ती मात्रा दें। अत्यन्त पाचक भी है, और आमाशय के अनेक रोगों को अक्सीर भी।

अन्तड़ियों के रोग

पूर्ण विवरण प्रथम भाग मंगाकर देख लें। यहां कुछ उपयोगी आदेश लिखकर विशेषता योग लिखूंगा।

चिकित्सकों के लिए

१ —यदि प्रवाहिका, वमन, हिचकी, मूर्च्छा साथ २ हों, तो रोगी के जीवनान्त की आशङ्का है।

२—यदि पीड़ा नाभी के चहुंओर हो, और रेचन देने पर भी शांत न हो, तो यकृतोदर की आशंका है।

३—यदि रक्तातिसार के रोगी को भूख खूब लगे, और ज्वर भी तीव्र हो, तो उसके बचने की कम ही आशा है।

४—रक्तातिसार के रोगी को सहसा वमन होने लगे, तो शुभ लक्षण है। रोग स्वतः ही दूर हो जायेगा।

५—यदि रंगविरंगा मल आवे, तो यकृत की चिकित्सा करें।

मलवेग रोकने से हानियां

प्रायः लोग कार्य निमग्न होने अथवा स्वाभाविक आलस्यवश मलवेग रोके रहते हैं, यह एक भयानक कुटेव है। चिकित्सकों के दीर्घानुभव के अनुसार ऐसे व्यक्ति निम्नांकित रोगों से ग्रस्त हो घोर कष्ट उठाते हैं।

१—पेट में गुड़गुड़ाहट और भूख मिट जाती है तबीयत गिरी सी रहने लगती है।

२—कठिन उदरशूल हो जाने की आशंका होती है।

३—गुदा में ऐसी तीव्र पीड़ा होती है, मानों छुरी से मांस काटा जा रहा हो।

४ ऐसी कोष्ठबद्धता हो जाती है कि जिसकी चिकित्सा भी दुस्साध्य हो जाती है।

५—खट्टी डकारें आती हैं, और भोजन से अरुचि हो जाती है।

६—शरीर हर समय जकड़ा हुआ सा और टूटता रहता है।

७—एलाउस रोग, जिसमें मल मुख द्वारा आने लगता है, उत्पन्न हो जाता है। अतः तनिक से आलस्यवश अपने को रोग संकट में न डालिए।

प्रवाहिका व अतिसार

हमारे प्रान्त में एक वार प्रवाहिका (पेचिश) भयानक रूप में फैल गई। सहस्रों व्यक्ति इस रोग के लक्ष्य वन गए। न मालूम यह किस प्रकार की प्रवाहिका थी, जो सहज में वैद्यों और चिकित्सकों के वश में ही न आती थी। उत्तम से उत्तम औषधियां निष्फल हो रही थीं। अन्त में भगवान की महिमा, कि हमारी फार्मेसी की दो औषधियां सफल हो गईं। उन दोनों के योग नीचे लिखे जाते हैं।

(१०३) प्रवाहिका नाशक वटी

(जो कि विगड़ी से विगड़ी अवस्था में भी लाभप्रद है)

योग—रूमी शिंगरफ, सुहागा रूमीमस्तगी, अफीम सबको बरावर २ लेकर एक छुहारे की गुठली निकालकर उसमें भर दें और ऊपर से धागा बांधकर गेहूं के आटे में लपेट कर गर्म राख में दवा दें। जब आटा लाल हो जाए, तो निकाल कर चने के बरावर गोलियाँ बनालें। और १ से २ गोली तक जल या शर्वत के साथ सेवन कराएं। पुरानी से पुरानी प्रवाहिका इससे निश्चय ही दूर हो जायेगी।

(१०४) चमत्कारक वटी

यह योग हाफिज फतह मुहम्मद खां रौहटी निवासी द्वारा प्रदत्त है और विशेष हृदयांकित है। सेवन कराते ही ९९ प्रतिशत सफलता प्रदर्शित करने लगता है।

योग—श्वेत कत्था १ तोला, सुरमा काला १ तोला, अफीम ३ माशा।

निर्माण विधि—पहिले अफीम को थोड़े से गुलाब जल में घोल लें, फिर कत्था और सुरमा को खरल में डालकर बारीक पीसें। तत्पश्चात् अफीम घुला गुलाब जल डालकर खरल करें और घोंटकर चने के बराबर गोलियां बनालें। सूखने पर शीशी में भरें।

सेवन विधि—प्रातःकाल बासी मुँह १ गोली पानी के साथ खिलाएँ और १ गोली दोपहर व सांझ को भी दें।

लाभ—प्रवाहिका रोगी कैसी ही दयनीय दशा को प्राप्त क्यों न हो चुका हो, इसके खाते ही कह उठेगा कि मुझे आराम है।

विशेष सूचना—यदि पहिले कस्ट्रायल का रेचन (जुल्लाब) देकर दवा सेवन कराएं तो कभी निष्फल नहीं हो सकती।

प्रवाहिका अतिसार की विश्वस्त चिकित्सा

(१०५) कपूरी चूर्ण

यह अद्वितीय औषधि हर प्रकार की प्रवाहिका को रोक कर अन्यान्य रोगों को भी दूर कर देती है। जब प्रवाहिका अतिसार अन्य किसी औषधि से न रुकते हैं इसका उपयोग करें। एक ही मात्रा से रोग ढीला पड़ जायगा। हमने स्वयं अपनी फार्मेसी में सहस्रों रोगियों पर अनुभव किया है।

योग—उत्तम निर्बसी १॥ तोला, कपूर ६ माशा, अफीम २ तो०, खांड ३२ तो०। सबको पृथक-पृथक पीसकर एक पत्थर के कूजे में निरन्तर १२ घन्टे खरल करें, यहाँ तक कि सूक्ष्माति सूक्ष्म हो जायं।

सेवन विधि—२ रत्ती से चार रत्ती तक और विशेष अवसर पर १ माशा तक सादा पानी या चावलों के धोवन के साथ दें।

विशेष सूचना—इस दवा के निरन्तर तीन दिन सेवन कराने के पश्चात् बन्द करदें। यदि विशेष आवश्यकता हो तो दो दिन ठहर कर पुनः तीन दिन सेवन कराएं साथ ही दूध पिलाने वाली स्त्रियों और बच्चों को कदापि न दें। क्योंकि इसमें अफीम जैसे तीक्ष्ण विष का प्रधान

अंश है। हाँ कुशल चिकित्सक अत्याल्प मात्रा में दे सकते हैं। किन्तु हर व्यक्ति देने का साहस न करे।

संग्रहणी

इस रोग की व्याख्या, कारण, चिन्ह आदि प्रथम भाग में विस्तारपूर्वक लिखे जा चुके हैं। नीचे कुछेक विशेषतम योग लिखे जाते हैं, परीक्षा करके लाभ उठावें।

(१०६) संग्रहणी नाशक अनमोल योग

(हकीम सैयद मुहम्मद हुसैन खाँ साहब द्वारा प्रदत्त)

मैंने इस योग की दस रोगियों पर परीक्षा करली है, और ईश्वर कृपा से सफल सिद्ध हुआ है।

योग—शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक आमलासार, लोध पठानी नागर मोथा, मीठे इन्द्र जौ, धावे के फूल, मोचरस बेलगिरी, प्रत्येक १ तो०, शुद्ध अफीम ३ तो०, काली मिर्च १ तो०, शंख भस्म २ तो०, कोड़ी भस्म २ तो०।

निर्माण विधि—पहिले पारे और गन्धक की कजली बनालें और अफीम को १५ तो० पानी में घोलकर छान लें। फिर शेष औषधियों को बारीक पीस कर कजली मिला दें और उसमें ५ तोला अफीम वाला पानी मिला कर खरल करें। तीसरे दिन शेष पानी मिला कर खरल करें, बस औषधि तैयार है।

सेवन विधि—२ रत्ती से ४ रत्ती तक गुड़ में लपेट कर दही के साथ खिलाएं। खाने के लिए नमकीन चावल दही के साथ दें। ३ दिन में ही लाभ प्रतीत होने लगेगा और कुछेक दिन के सेवन से पूर्ण लाभ हो जायेगा।

(१०७) संग्रहणी की अन्तिम दवा

(हकीम मुहम्मद अब्दुलगनी साहब केसरवी द्वारा प्रेषित)

उक्त सज्जन का कथन है, कि यह संग्रहणी की अन्तिम दवा है। सम्भवतः इससे बढ़कर अन्य योग न होगा। सैकड़ों निराश रोगियों पर अनुभव करके लाभ-दायक पाया है।

योग—इन्द्र जौ ५ तोला, कद्दू की मिंगी, रूमी मस्तगी, वंशलोचन, प्रत्येक १-१ तो०, भुनी भांग १ तो०, धायपुष्प १ तोला, पोस्त समाक ६ मा०, सौंफ भुनी हुई १ तोला, शुद्ध अफीम ३ माशा, शुद्ध कुचला ६ माशा, फौलाद भस्म १ तो०। सबको सूक्ष्म पीसकर चूर्ण करलें और एक माशा नित्य दही या छाछ के साथ दें। भोजन में उत्तम वासमति चावल या छाछ के साथ दोनों समय खिलाएं, अन्य सभी वस्तुओं से परहेज जरूरी है। निराश रोगियों को भी अद्भुत लाभ से चकित कर देती है।

(१०८) फौलाद भस्म की निर्माण विधि

शुद्ध फौलाद चूर्ण ५ तोला लेकर १० तो० जामुन के रस में खरल करते २ सारा रस सुखादें, फिर भली प्रकार सावसम्पुट करके ५ सेर कण्डों की अग्नि दें। पुनः फिर १० तोला जामुन रस में घोंटकर टिकिया बनाकर ६ सेर उपलों की आँच दें। इसी प्रकार १०-१० तोला जामुन के रस में घोंटकर हर बार १-१ सेर उपलों की आंच बढ़ाते जायें, यहाँ तक कि २०वीं आँच २५ सेर उपलों की दें। अति कोमल उत्तम भस्म तयार हो जायेगा। जो कि संग्रहणी की औषधि में पड़ती है।

सूचना—किसी दूसरी विधि से बनाई हुई भस्म डालने से संग्रहणी रोग में पूर्ण लाभदायक सिद्ध न हो सकेगी। यद्यपि यह योग तनिक परिश्रम से बनता है, किन्तु अद्वितीय औषधि है।

कोष्ठबद्धता

समस्त उल्लेखनीय वर्णन प्रथम भाग में उपस्थित है, अस्तु यहाँ केवल कुछेक नवीन योग सेवार्पित हैं।

(१०९) संसार की सर्वश्रेष्ठ औषधियों में से एक बद्धकोष्ट नाशक वटी

यह अनुपम योग श्रीमान् दीवान बोधाराम जी का

प्रदान किया हुआ है। जो कि सर्वोत्तम कोष्ठबद्धता निवारक औषधि में से एक है। रात को खाकर सो रहो, प्रातः खुलकर टट्टी आयेगी। यह हमारी फार्मेसी का विशेष अनुभूत योग है। पाठकों की सेवा में अर्पित किया जाता है।

यह वही योग है, जिसको हम नपुँसकता चिकित्सा सेट के साथ भेजते हैं। चूँकि हम कृपणता से बहुत दूर हैं, अतः योग प्रकट करने में कोई आपत्ति नहीं।

योग—सकमोनिया विलायती २ तोला, तज पिप्पली काली मिर्च। प्रत्येक ३-३ माशा, खांड २ तोला। समस्त औषधियों को पीसकर पानी के साथ जंगल बेर के समान गोलियाँ बनालें और एक गोली रात को दूध के साथ खालें। बिना किसी कष्ट के कोष्ठबद्धता दूर हो जायेगी। अमीरी गोलियां हैं, और दीवान जी की आजीविका का साधन ही हैं, बहुत बिकती हैं।

(११०) सुविख्यात बद्धकोष्ठ नाशक वटी

यह वही सुप्रसिद्ध औषधि है, जिसने अपने गुणों से सारे देश को मोह लिया है। हमारी फार्मेसी का एक दर्प्य योग है। यद्यपि इसे अनेक लोगों ने विविध नामों से बना कर, क्या है, किन्तु आविष्कार का श्रेय तो लेखक को ही प्राप्त है। यदि चाहता, तो और लोगों की भांति इसे

छिपाए रखकर बहुत कुछ कमाता, किन्तु मेरी आत्मा पाठकों से छुपाव रखना ही नहीं चाहती। इसलिए वह योग भी समर्पित कर रहा हूँ।

योग—शुद्ध जयपाल तेल ४ बूँद, असली बादाम रोगन ८ बूँद, सौंफ का तेल ४ बूँद, सैक्रीन १ रत्ती, खांड ४ तोला।

निर्माण विधि—सब को एक चीनी की खरल में डालकर घोंटें। जब एक जान हो जायं तो शीशी या डिब्बे में भर कर रखलें।

सेवन विधि—जिस दिन सेवन करना हो, उस दिन सन्ध्या को ५ बजे ही भोजन करलें और रात के १० बजे ६ माशा खाँड आध सेर समोष्ण दूध में मिलाकर पिएं। प्रातःकाल खुलकर दस्त आ जाएगा। बद्धकोष्ठ दूर हो जाएगा, चित्त प्रसन्न होगा।

विशेष सूचना—यद्यपि इसमें जायपाल का तेल पड़ता है। किन्तु वह कई विधियों से शुद्ध किया हुआ होता है। तथा पहिले उसे शुद्ध करके फिर बादाम रोगन और सौंफ का तेल मिलाया जाता है और तब दूध में पिलाया जाता है जो सब के सबइसके विप को मारने वाले

हैं। तथापि जयपाल को हौआ समझने वाले सज्जन इसे सेवन न करें।

(१११) जयपाल शुद्ध करने की विधि

जमालगोटे को शुद्ध करने की विधि अनेक पुस्तकों में लिखी गई है किन्तु सर्वोत्तम और सुगमतर यही है। प्रथम जयपाल के बीज निकाल कर उनका पित्ता निकाल डालें, फिर उसको पोटली में बांध कर भैंस के गोबर में पानी मिला कर पकावें। दो घंटा पकाने के पश्चात् पानी से धोकर साफ करलें और मलमल की पोटली में बांध कर ३ घन्टे दूध में लटका कर पकावें। पोटली ढीली २ बाँध कर दूध के मध्य में रखें। दूध का खोया हो जाने पर निकाल कर साफ करलें, शुद्ध होगया। इसका तैल निकालें।

सूचना—बादाम रोगन अपने समने निकलवाएँ या विश्वस्त स्थान से खरीदें।

तैल निकालने की विधि

प्रथम तो तैल निकालने वाली मशीन से निकाल लें, अन्यथा किसी पत्थर के कूजे में भी निकाल सकते हैं। विधि यह है कि यथेष्ट गिरी लेकर रगड़ें। जब सूक्ष्म हो जाय तो खांड मिला कर फिर पीसें। फिर गरम पानी के छींटे देकर पूरी शक्ति से पीसें। तैल अलग हो

जायगा। यद्यपि विधि साधारण है, किन्तु एक बार देखे बिना अनभिज्ञ व्यक्तियों से पानी के छींटे कम अधिक हो जाने से तैल ठीक नहीं निकलता।

स्व० वैद्य ध्वजाराम जी के अमृत औषधालय की

(११२) अनुपम औषधि 'भेदनी'

यह कोष्ठबद्धता नाशक गोलियाँ अमृत औषधालय पटियाला से सहस्रों रुपये की बिकती रही हैं क्योंकि अत्यल्प मूल्य में बन जाती हैं। लोग बड़ी खुशी से खरीदते हैं। इन गोलियों का योग यह है—

योग—त्रिफला आधा सेर लेकर सूक्ष्म पीसलें फिर इसमें १ तो० जयपाल मिला कर इमाम दस्ते में कूटें और थोड़ा-थोड़ा कैस्टर आयल मिला कर निरन्तर कूटते जाएं। जब मोम के समान होकर गोला सा बन जावे तो चने के परिमाण में गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१ गोली से २ गोली तक गरम दूध के साथ रात को सोते समय दें। अपूर्व कोष्ठबद्धता नाशक हैं।

(धनवान लोगों के लिए अद्वितीय वस्तु प्रमेह, कोष्ठबद्धता और प्रवाहिका नाशक)

(११३) बहु मूल्य शर्बत

कोष्ठबद्धता नाशक चूर्ण, अवलेह और वटिका आदि

के योग तो असंख्य पुस्तकों में भरे पड़े हैं किन्तु शर्बत के रूप में कोष्ठबद्धता निवारक योग कदाचित् ही पाए जाते हैं। अस्तु नीचे एक अमीरी शर्बत का योग भेंट किया जाता है।

योग—उत्तम गुलबनफशा ५ तोला, गुलाब के फूल ५ तोला, सनाय १ तोला। सबको २॥ सेर पानी में उबालें। जब चौथाई भाग शेष रह जाय तो उतार कर छानलें। फिर उसमें १ सेर तुरंजबीन खुरासानी मिलाकर पकावें, और शर्बत के रूप में आते ही उतार लें। ठंडा करके शीशियों में भरलें। शर्बत तैयार है।

सेवन विधि—१ तोला से ३ तोला तक पानी में मिला कर पिलाएं।

लाभ—अत्यधिक कोष्ठबद्धता नाशक है, और पित्त प्रकृति वाले प्रमेह रोगी भी इससे लाभ प्राप्त करते हैं।

(१२४) इच्छाशक्ति द्वारा चिकित्सा विधि

प्रातः आँख खुलते ही शैय्या पर बैठे २ मस्तिष्क को विचार शून्य करके केवल इस विचार पर केन्द्रित करें कि दस्त बड़े जोर से आ रहा है। और इतने जोर से आ रहा है कि शायद पाखाना तक पहुंच भी न सकूँ और टट्टी निकल जाय। इस भावना को पुनः पुनः लावें और कोष्ठ-

बद्धता का विचार मात्र न लावें । वरन् यह दृढ़ विश्वास जमावें कि कोष्ठबद्धता नितांत दूर हो गई । कुछ दिनों के अभ्यास से निश्चय ही कब्ज़ मिट जायगी ।

रेचन (जुलाब)

जुलाब कब दिया जाय और कब नहीं ? इन सारी बातों को प्रथम भाग में पूर्णतया समझाया जा चुका है। यहां केवल दो तीन उत्तम योग भेंट किए जाते हैं ।

(११५) सन्यासियों का 'जादू का जुलाब'

योग—संखिया, दारचिकना, रस कपूर, नौशादर १-१ तोला, थोहर के दूध में ३ घंटे खरल करके सत्व उड़ालें । बस तैयार है ।

सेवन विधि—एक ख़स के दाने के बराबर मलाई या मक्खन में मिलाकर दें या अजवायन में डालकर खिला दें । भोजन में केवल गेहूं की रोटी दें उपदंश, फोड़ा फुन्सी आदि के लिए उत्तम जुलाब है । (शाही संचिका)

(११६) धनवानों के लिए अनुपम जुलाब

अनेक धनिक व कोमल प्रकृति के लोग जयपाल आदि के रेचन से घबराते हैं, उन लोगों के लिए यह रेचन अति उत्तम है । इससे न वमन होती है, और न मरोड़ ।

योग—उत्तम गुलाब पुष्प ७ तो०, रात के समय २ सेर जल में भिगो दें और प्रातः आग पर चढ़ाकर उबालें। जब चौथाई भाग पानी शेष रहे, तो रगड़ कर छानलें और ७ तोला मिश्री व ७ तो० चावल तथा शुद्ध घृत डालकर प्रसिद्ध विधि से पुलाव तैयार करके खालें। इससे बिना किसी कष्ट के रोगी को रेचन होंगे। यह उपदंश रोगी के लिए भी विशेष लाभकारी है।

(११७) उत्तम रेचन 'स्वीट साल्ट'

पक्वाशय रोगों के वर्णन में जो 'स्वीट साल्ट' का योग अंकित है, वह भी रेचन के लिए अति उत्तम और अमीराना है।

(११८) मधुर जुलाब

यह रेचन योग अंजमनखादिमुल हिकमत वालों का विशेष आविष्कार है। जो कि अपने रोगियों को प्रायः सेवन कराते रहते हैं।

योग—मगनेशिया सल्फास २ छटांक, सोडियम सल्फास २ छटांक, उबला हुआ पानी १ बोतल। सबको बड़ी शीशी में मिलाकर ४ माशा क्लोरोफार्म व थोड़ासा रेडसीरप कलर मिलादें।

मात्रा—१० तोले। बच्चों को आयु के अनुसार कम दें।

वृक्क तथा मूत्राशय सम्बन्धी रोग

वृक्क तथा मूत्राशय के कुछ बहु प्रचलित रोगों का वर्णन यहां किया जाता है, परन्तु उससे पूर्व वैद्यों हकीमों और चिकित्सकों के लिये कुछ विशेष स्मरणीय बातें लिखेंगे।

चिकित्सकों के लिए सूचनाएं—

१—यदि मधुमेह के रोगी के किसी अंग पर घाव हो जाय, तो वह किसी प्रकार भी न भरेगा।

२—मधुमेह के रोगी प्रायः यकृत दुर्बलता और क्षयरोग में ग्रसित होकर मृत्यु की गोद में जाते हैं।

३—यदि मूत्र बादल की भांति और शरीर में घबराहटसी रहे, तो वृक्करोग की लम्बाई ज्ञात करनी चाहिए।

४—यदि मूत्र में पतला रक्त या मूत्र बून्द २ करके आए, तथा पेडू और सीवन में पीड़ा रहे, तो मूत्राशय रोग समझें।

५—मूत्र के ऊपर साधारण झाग आना वृक्क रोग को संकेत करता है।

६—जो वस्तु यकृत को शक्ति देती है, वह वृक्कों को भी बलदायी है।

वृक्क शूल

इसके उत्पत्ति, कारण, चिन्ह आदि प्रथम भाग में सविस्तार लिखे जा चुके हैं, और एक योग तो ठीक ४५ मिनट में पीड़ा रोक देने वाला भी लिखा जा चुका है। यहां भी एक अति उत्तम योग सेवार्पण है।

(११६) वृक्कशूल की रामबाण औषधि

(श्रीमान् ह० नूरमुस्तफा साहब द्वारा प्रदत्त)

उक्त महाशय का कथन है कि इस रोग के सहस्रों रोगी मेरी इस औषधि पर इतना विश्वास रखते हैं कि हर समय उसे अपनी जेब में रखते हैं। अत्यधिक लाभप्रद औषधि है।

योग—रेवन्द खताई, नौशादर, मुसब्बर सुहागा बराबर २ लेकर बारीक पीसलें और थोड़ी सी शक्कर मिला कर रखें और रोगी को १ से १॥ माशा तक पानी के साथ दें। यदि पहिली मात्रा से आराम न हो तो आधा घन्टे बाद पुनः एक मात्रा दें। निश्चय ही आरम हो जायेगा।

मधु प्रमेह

इस रोग को प्रचलित भाषा में पेशाब अधिक आना कहा जा सकता है, वैद्यक नाम मधुमेह तथा तिब्बी नाम जियाबीतुस है। अंग्रेजी डाक्टर इसे डायबिटीज़ कहते हैं,

यह आज कल बहुत ही होरहा है। अनुमान है कि मानसिक श्रम करने वाले ही इससे अधिक पीड़ित रहते हैं। क्योंकि वृक्कों का सम्बंध स्नायुमण्डल से घनिष्ठ होता है।

मूल कारण--प्रायः शारीरिक व मानसिक श्रम की अधिकता, उष्णपदार्थों का अधिक सेवन करने से वृक्कों में उष्णता बढ़जाती है। जिससे वे बार २ पानी खींचते हैं, और दुर्बलता के कारण बिना पचा ही छोड़ देते हैं।

पहिचान—वृक्कों के स्थान पर कई बार पीड़ा व जलन प्रतीत होती है, प्यास अधिक लगती है, पेशाब की बार २ इच्छा होती है, मूत्र अत्यल्प मात्रा में आ जाता है, दिन प्रतिदिन क्षुधा न्यून और शरीर दुर्बल होता जाता है और कुछ काल पश्चात् वृक्कों की चरबी मूत्र के साथ निकल कर बहने लगती है।

(१२०) मधुमेह नाशक

(श्रीमान् ह० अब्दुलगनी साहब कैसरवी द्वारा प्रेषित)

योग--शिंगरफ १ तोला, अण्डों के छिलके ८ नग के। दोनों को अलग २ बारीक पीसलें और खरल में डाल कर थोड़ी २ ब्रांडी मिला कर घोटते जावें। जब १० तो० ब्रांडी सोख जाय तो मृतिका पात्र में सराव सम्पुट करके ८ सेर उपलों की आंच दें। इसी प्रकार ३ आग दें। फिर इस

भस्म तथा अकाकिया, वंशलोचन, खस्ता जामुन की गुठली मूंगफली, चिलगोजे की गिरी, प्रत्येक १-१ तो०, अफीम फौलाद भस्म, जामुन के रस में बनी हुई ६-६ मा०, प्रवाल भस्म, गुड़मार बूटी में बनी हुई १ तोला संगदा-नामुर्ग ५ नग। सब का चूर्ण करलें और जामुन के रस में ४ पहर तक खरल करके सुरक्षित रखलें।

मात्रा--४ रत्ती से १ माशा तक जामुन के पत्तों के रस से दिया करें।

लाभ--मधुमेह की अद्वितीय औषधि है और सैकड़ों वर्षों से प्रयुक्त पूर्ण अनुभूत है, इसका प्रभाव कभी निष्फल नहीं गया।

(१२१) द्वितीय उत्तम योग

कीकर की छाल ५ सेर बारीक कूट कर एक घड़े में डाल कर पानी से भर दें। फिर यथावश्यक फौलाद चूर्ण लेकर कपड़े में ढीली सी पोटली बांधकर उसमें लटकाएँ। ५० दिन पश्चात् निकाल कर देखें, भस्म बन जायेगी। किन्तु कालान्तर में घड़े का जब भी पानी सूखे उसे पुनः भरते रहें।

सेवन विधि--४ रत्ती से एक मा० तक नित्य सेवन कराएँ।

लाभ—जो रोगी दिन में ३० सेर तक पानी पी लेता हो उसे भी २-३ मात्राओं से ही लाभ हो जायेगा हृदय की ऊष्मा तथा प्रमेह के लिए भी उत्तम है।

पथ्यापथ्य-मीठी व गरम वस्तुओं तथा मानसिक श्रम, धूप में चलना-फिरना व मांस, मछली, अण्डा, बैंगन आदि का सेवन वर्जित है। खाने में कद्दू व अरहर की दाल, गेहूं की रोटी, अनार, खुबानी, सेब, अंगूर आदि दें।

गुर्दे और मसाने में पथरी व रेत

विवरण- गुर्दे या मसाने में पथरी व रेत का उत्पन्न हो जाना एक अत्यन्त कष्टदायी व घातक रोग है। जब पथरी मसाने के अन्दर चुभती है तो रोगी पीड़ा से छटपटाता है। प्रारम्भ में यह मूंग व चने के बराबर होती है, किन्तु जब पत्थरी गुर्दे से निकल कर मसाने में आजाती है, तो उस पर पेशाब की गाद की तहें जमकर बड़ी पत्थरी बना देती हैं।

पथरी गुर्दे में है या मसाने में ?

ऊपर यह बताया जा चुका है कि पथरी या तो गुर्दे में रहती है, या निकल कर मसाने में आ जाती है। किंतु आप यह कैसे जान सकेंगे कि पत्थरी अमुक समय में गुर्दे में है या मसाने में ? अस्तु उसकी पहिचान के लिए हम

एक दो लक्षण लिखते हैं, ताकि चिकित्सक को परीक्षा करने में कठिनाई न हो। प्रत्येक चिकित्सक का कर्त्तव्य रोग का निदान करना ही होता है, आरोग्यता तो ईश्वर के आधीन होती है।

गुर्दे में उत्पन्न होने वाली पथरी के लक्षण—

यदि रेत या पत्थरी गुर्दे में होती है, तो रोगी की कमर में धीमी २ पीड़ा रहती है। जिसकी टीसें अण्ड-कोष जंघा तथा कई बार सुपारी तक जाती हैं। तनिक सा दौड़ने या ऊँट की सवारी करने से पीड़ा बढ़ जाती है। बार २ रक्त मिश्रित मूत्र आता है, अथवा मूत्र त्याग के पश्चात् थोड़ा सा रक्त आता है। कोष्ठबद्धता की अवस्था में रोगी को वमन भी होने लगती है।

जब दोनों वृक्कों में बड़ी २ पथरियां उत्पन्न हो जाती हैं, तो रोगी मूत्र त्याग में विवश हो जाते हैं, और ऐसी अवस्था में प्रायः परलोक सिधार जाते हैं।

मसाने में पथरी या रेत होने के लक्षण—

पेड़ू और सीवन के निकट कठिन पीड़ा और करड़सी रहती है। मूत्रत्याग की इच्छा बार २ होती है। किंतु मूत्र बड़े कष्ट से आता है, कई बार मूत्रत्याग करते हुए अचा-नक टट्टी भी हो जाती है। मूत्रत्याग के पश्चात् भी इच्छा

बनी ही रहती है। मूत्र गाढ़ा हो जाता है और चलने फिरने से पीड़ा और भी बढ़ जाती है।

पहिचान की सर्वोत्तम विधि

संध्या-समय किसी चीनी या कांच के पात्र में रोगी से मूत्रत्याग करवाएं और पात्र को ढंककर रख दें। प्रातः काल देखें कि रेत या कण किस रंग के हैं; यदि लाल रंग के दृष्टिगोचर हों, तो गुर्दों में समझें और श्वेत रंग के होने पर मसाना में समझें।

(१२२) अनमोल युक्ति

यदि मसाना में पत्थरी रुक जाय और इस कारण रोगी कष्ट से व्यथित हो, तो रोगी को चित लेटा कर दोनों पैर ऊपर को उठाएं और पेड़ू की हड्डी पर गर्म २ पानी डाल कर नीचे से ऊपर को मलें। इस विधि से ईश्वरानु-कम्पागत् तत्काल पेशाब खुल जायगा।

पथरी की चिकित्सा

डाक्टरी में सिवा आपरेशन के पथरी की अन्य कोई चिकित्सा नहीं। हां आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा में ऐसे योग हैं, जो कि पत्थरी को औषधियों द्वारा रेत बनाकर मूत्र-मार्ग से निकाल देते हैं। यहां कुछ ऐसे ही योग अङ्कित किए जाते हैं।

(१२३) पथरी नाशक रसायन

यह योग शाही संखिया से उद्धृत है और वृक्कशूल तथा पथरी या रेत के लिए रसायनवत् है।

योग--पाव भर कलमीशोरा बड़ी सी लोहे की कड़छी में डालकर दहकते हुए कोयलों की आंच पर रखदें। जब शोरा पिघल जाए, तो एक भिलावा डालकर शोरे को पकावें, यहां तक की १-१ करके ६ भिलावें जल जावें। यह शोरा आग में नहीं जलता।

सेवन विधि--पहले एक रत्ती अफीम खिलाकर एक माशा शोरा पानी में घोल कर पिलावें, और रोगी को गरम पानी में बिठावें। कुछेक दिनों में ही निश्चय आराम हो जायेगा।

(१२४) पथरी को धूलवत् करके निकालने वाली पथरी तोड़ औषधि

यह योग अखिल भारतीय आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सक सम्मेलन के वार्षिकोत्सव पर श्रीमान् ह० फसील अहमद वदायूनी ने प्रस्तुत किया था और साथ में इससे निकली हुई ३०० पथरियाँ भी सबको दिखाई थीं। आप ने कहा था कि चाहे पथरी मुर्गी के अण्डे के बराबर ही क्यों न हो, इससे स्वतः ही टूट कर निकल जाती है।

योग—संगयहूद ५ तो०, कलमी शोरा १० तोला, मूली का रस ३ सेर।

निर्माण विधि—पहिले एक मिट्टी के कूजे में ५ तोला कलमी शोरा, फिर उस पर ५ तोला संग यहूद और उसके ऊपर शेष ५ तोला शोरा डाल कर ऊपर से आधा सेर मूली का रस डालकर ५ सेर उपलों की आंच दें, ठंडा होने पर पुनः उसी विधि से आंचदें, और इसी प्रकार आधा २ सेर मूली का रस डाल कर ६ आंच दें। औषधि तैयार है।

सेवन विधि—उपरोक्त दवा १ रत्ती, यवक्षार १ रत्ती, मूलीक्षार १ रत्ती सबको मिला कर शर्बत बजूरी के साथ दिनमें तीन बार नित्य खिलाएं। गुर्दा व मसाने की पथरी सुगमता से निकल जायेगी।

विशेष सूचना—यवक्षार व मूलीक्षार बनाने की विधि सभी जानते हैं, अतः स्वयं बनालें या विश्वस्त-स्थान से लें।

(१२५) पथरी तोड़ उत्तम क्वाथ

यह योग भी अ० भा० आ० व यू० चि० कान्फ्रेंस के वार्षिकोत्सव पर किन्हीं महाशय ने प्रस्तुत किया था। जो कि परीक्षा करने पर अत्यधिक प्रभावक सिद्ध हुआ।

योग—कुल्थी के बीज ६ माशा, सेंधव नमक ३ माशा, शरपुंखा १।।। मा०, सबको जौ कुट करके २ पाव जल में उबालें। आधा पानी जल जाने पर छान कर रोगी को दिन में ३ बार नित्य पिलाएं। रोगी के मूत्र को किसी स्वच्छ पात्र में लेकर दूसरे दिन देखें। पथरी के कण तली में पड़े दिखाई पड़ेंगे। इसी प्रकार ५-६ दिन सेवन कराने से तमाम पथरी निकल जायगी। पूर्ण अनुभूत है।

(१२६) पुनः पथरी न होने देने के लिये भस्म संगयहूद

यदि निम्न विधि से संगयहूद भस्म तैयार करके निरन्तर ३ मास तक सेवन कराएं तो पुनः कभी भी पथरी होने की आशङ्का नहीं रह जाती। अतः पहिले उपरोक्त औषधियों द्वारा पथरी निकालदें, और तत्पश्चात् यह भस्म सेवन कराते रहें, कभी पथरी न होगी।

भस्म निर्माण विधि—संगयहूद यथावश्यक लेकर उत्तम खरल में डालें और घीक्वार के रस में १० घंटे खरल करके टिकियां बनालें और सरावसम्पुट करके १० सेर उपलों की आंच दें।

मात्रा—१ रत्ती नित्य प्रातःकाल।

पथरी उत्पादक त्याज्य वस्तुएँ

१—कई लोगों को कोमल हड्डियां, कच्चे चावल, छालियां आदि चबाने की आदत होती है। वह हानि कर होती है।

२—कई स्त्रियों का चिकनी मिट्टी, मुल्तानी मिट्टी ठेकरी आदि खाने की आदत होती है। ऐसी ही आदतों से पथरी हो जाती है, अतः इनसे बचना चाहिए।

पथ्यापथ्य—आलू, अरबी, उड़द की दाल, बाजरे की रोटी, बैंगन, मसूर की दाल वर्जित हैं। मूंग व अरहर की दाल, मूली का शाक, गेहूं की रोटी और तरबूज आदि खाना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र

इसके चिन्ह, कारण, लक्षण आदि प्रथम भाग में वर्णित हो चुके हैं, अतः यहां केवल उत्तमोत्तम योग लिखूंगा।

(१२७) मूत्रकृच्छ्र नाशक महौषधि

योग—सुरमा सफेद ४ तोला, सेलखड़ी दूधिया ४ तो० दोनों को पृथक २ सूक्ष्मतम पीसलें और मिला कर एक उत्तम खरल में गौ दुग्ध के पनीर के साथ भली भांति खरल करें। ३ घन्टे लगातार खरल करके जब शुष्क हो जाय तो शीशी में रखलें।

सेवन विधि--३ माशा प्रातः सायं बकरी के कच्चे दूध के साथ दें।

पथ्यापथ्य--भोजन में केवल चावल दें और कोई वस्तु नहीं। प्रथम तो ३ दिन में ही लाभ हो जायगा तथापि एक सप्ताह तक सेवन कराना चाहिये।

(१२८) अपूर्व मूत्रकृच्छ्र नाशक तेल

(डा० दिलेरुद्दीन मुहम्मद साहब, ताराकोट द्वारा प्रदत्त)

इस तैल के कुछेक दिन सेवन करने से नया पुराना मूत्रकृच्छ्र समूल नष्ट हो जाता है और फिर कभी नहीं उभरता। पीड़ा व जलन में तो इसके प्रयोग करते ही आराम हो जाता है। वस्तुतः इसके समान गुणप्रद अन्य कोई औषधि नहीं।

योग--बुरादा चन्दन ५० तो०, कपूर देशी, छोटी इलायची के बीज, कत्था सफेद, कबाबचीनी, राल सफेद, दम्मुलखवेन, पाषाण भेद, फिटकरी सफेद १०-१० तो०, कलमी शोरा २॥ तो०, शिलाजीत १। तो०। इन सबको बारीक कूट कर छान लें और २॥ सेर गन्दे बहरोजे में मिला कर आतशी शीशी में भर कर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। जितना तैल निकले उसका चौथाई भाग बलसान का तैल मिलाकर शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—१० से १५ बूंद तक प्रातः, दो पहर और सायं तीनों समय मिश्री या ३ मा० खांड में मिला कर ताजा जल के साथ खिलाएं। दवा के सेवन काल में मिर्च, गुड़, तेल, खटाई, मांस, मदिरा व उष्ण पदार्थों से बचें, दूध पीते रहें।

विशेष सूचना—तेल निकालने के लिए बहुत बड़ी आतशी शीशी लेनी चाहिए। यदि न मिले तो सारी औषधियों का चौथाई या आठवां भाग लेकर बनावें।

बक्स आरामजान

इस बक्स की खाद्य औषधि व पिचकारी की दवा से हर प्रकार की सुजाक का रोगी चाहे वह २० वर्ष पुरानी क्यों न हो, थोड़े समय में ही ठीक हो जाता है। सुजाक व कुरीं की अब तक की आविष्कृत औषधियों में सर्वोत्कृष्ट है।

(१२६) खाद्य औषधि योग

रस कपूर एक तो०, कपूर २ तो०। प्रथम रस कपूर की भली प्रकार खरल करें फिर कपूर मिला कर घोंटते २ एक जान करदें। फिर एक मिट्टी के कोरे प्याले में डाल कर ऊपर से दूसरा प्याला औंधा कर मुख बन्द कर दें। सूखने पर चूल्हे पर चढ़ा कर दो बेरी की लकड़ियों की

आंच लगावें। लगभग १ घन्टे में कपूर उड़ कर ऊपर प्याले पर लग जायगा, उसे उतार कर शीशी में भरलें।

सेवन विधि---मात्रा २ चावल से ४ चावल तक मक्खन या मलाई में लपेट कर खिलाएँ। किन्तु औषधि जीभ पर न लगनी चाहिये। पुराने से पुराने मूत्रकृच्छ्र को दूर करने में अक्सीर है।

विशेष सूचना---कभी २ अग्निताप की न्यूनता के कारण कपूर का सत्व उड़ कर रस कपूर नीचे ही पड़ा रह जाता है उस समय चाहिये कि सत्व कपूर रस कपूर में खरल करके पुनः सत्व उड़ालें और सत्व में जो पारा दृष्टि गोचर हो, उसे पृथक करलें। केवल विशुद्ध सत्व सेवन कराएँ। लकड़ियां अंगूठे बराबर २ जलायें।

(१३०) पिचकारी की औषधि

योग---फिटकरी श्वेत, शुद्ध रसौंत, मुर्दासंग, कत्था श्वेत, काला सुरमा प्रत्येक ५ तो०, नीला थोथा ७॥ मा०, रस कपूर ७॥ मा०, पानी ५० तोला।

निर्माण विधि---प्रथम समस्त औषधियों को सुरमे के समान बारीक करलें, फिर कांच की बड़ी बोतल में औषधियां डालें व पानी मिलाकर खूब हिलावें। दवा निकालते समय भी शीशी को हिला लिया करें।

सेवन विधि—४ माशा दवा लेकर कांच या चीनी के पात्र में डालें और उसमें ६ पिचकारी स्वच्छ जल डाल कर भली भाँति मिलालें। इसमें से ३-३ पिचकारी प्रायः दोपहर व शाम को प्रयोग करें। थोड़े दिनों में ही सुजाक जड़ से मिट जायगा।

(१३१) कपूरी तूतिया भस्म

(पुराने मूत्रकृच्छ्र की अद्वितीय औषधि)

एक बार ह० मौ० गुलाम मुहम्मद के औषधालय में १६ वर्ष से मूत्रकृच्छ्र में ग्रसित रोगी आया, जो कि अनेक चिकित्सकों से चिकित्सा कराते २ निराश हो गया था। उक्त हकीम जी ने १०) में उसे २१ पुड़ियां दीं। ईश्वर की कृपा ऐसी कि वह रोगी तीसरे दिन आकर ही कहने लगा कि उसे यथेष्ट आराम है और ७ मात्राओं में ही वह पूर्णतया रोग मुक्त हो गया। उसने शेष १४ पुड़ियां दूसरे दो रोगियों को देकर अपने १०) वसूल कर लिए और वे दोनों रोगी भी स्वस्थ हो गए।

योग—तूतिया की डली १ तोला, कपूर २ तोला। एक सकोरे में कपूर के मध्य में तूतिया की डली रख कर सम्पुट करके ५ सेर उपलों की आंच दें। किन्तु उस समय जब कि उनका धुंआं और ज्वाला निकल कर लाल अंगारे से हो जावें। और इस बात का विशेष ध्यान रखें कि

तूतिया की डली कपूर के मध्य में ही रहे। तनिक सी भी असावधानी से तूतिया कपूर से पृथक होकर उड़ जायगा। ठंडा होने पर निकाललें, सूक्ष्म पीसकर शीशी में रखलें।

सेवन विधि--२ से ४ चावल या अधिकाधिक ८ चावल तक शक्ति के अनुसार मक्खन या मलाई में दें। पुराने सुजाक को अक्सीर है।

बवासीर

इस रोग के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है, वहां देखने का कष्ट करें। यहां कुछ और उत्तमोत्तम योग देखिये:--

(१३२) प्रसिद्ध बवासीर विशेषज्ञका रहस्योद्घाटन

एक बार मेरे परम मित्र ह० एम० ए० फर्स्टक्लास मैजिस्ट्रेट ने अपने पत्रमें लिखा था कि हमारे क्षेत्र में एक नाई अर्श चिकित्सा का विशेषज्ञ है, किन्तु वह अपना योग किसी को नहीं बताता। उसकी दी हुई गोली घिसकर मस्सों पर लगाने से रोगी स्वस्थ हो जाते हैं।

एक बार उसकेबीमार पड़ने पर मैंने एक व्यक्ति को उसके पास विशेषरूप से भेजा कि अन्त समय वह अपना योगतो बतादे, ताकि दुखी जनता का कल्याण हो। चूंकि वह जीवन से निराश हो चुका था, अतः बात उसकी समझ में आगई। वही योग पाठकों को भेंट कर रहा हूँ।

योग—रसौंत व सुहागा बराबर २ लेकर रीठा के बराबर गोलियां बनालें और घिसकर मस्सों पर लगाया करें।

उस नाई ने बताया कि यही योग वह जीवनभर लोगों को देता रहा और उन्हें पूर्ण लाभ होता रहा। यद्यपि साधारण सा योग है, यथापि आजतक मैंने किसी को नहीं बताया। हालांकि अनेक व्यक्ति जानने को उत्सुक रहे।

(१३३) एक अनुभवी वयोवृद्ध चिकित्सक से प्राप्त बवासीर की अपूर्व चिकित्सा

हकीम साहब को यह योग एक वयोवृद्ध चिकित्सक से प्राप्त हुआ था। बड़ा ही लाभकारी योग है। एक योग तो खाद्य औषधि का है, दूसरा लगाने वाली दवा का। दोनों ही नीचे लिखे जाते हैं।

योग—यशद, वंग, नाग तीनों १-१ तोला लेकर लोहे की कड़ाही में डाल कर गलावें। यदि शुद्ध करके डालें तो और भी उत्तम हो, फिर पीपल की अंगूठे जितनी मोटी हरी लकड़ी लेकर उसमें चलाते रहें। और साथ ही शोरे की चुटकी भी देते जांय। यहां तक कि ५ तोला शोरा भस्म हो जाय। फिर नीचे प्रचण्ड अग्नि जलाकर २ घंटे में श्वेत फूली हुई भस्म तैयार प्राप्त करलें। यदि आंच में कमी रही तो दवा का रंग खाकी होगा और वह तनिक भी लाभप्रद न होगी। जितनी ही तेज आंच होगी उतनी ही उत्तम श्वेत वर्ण भस्म बनेगी।

सेवन विधि--४ रत्ती औषधि मक्खन में रखकर खिलाएं और आधा घंटे पश्चात् निम्न वर्णित फांट की ३-४ घूंट पिलादें। बीच में और कोई वस्तु न खिलाएं पिलाएं।

फांट की निर्माण विधि--मलमल के एक कपड़े पर हंसराज ६ माशा रखकर उस पर पिसा हुआ वंशलोचन ३ माशा और उस पर शुद्ध रसौंत ३ मा० की गोली रख कर ढीली सी पोटली बाँध कर रात को पानी में लटका दें और प्रातःकाल उसका स्वरस लेकर दवा खिलाने के आधा घन्टे पश्चात् पिलाएं। हर तीन दिन पश्चात् पोटली बदल दें और पानी उतना ही बनाएं, जिसके ३-४ घूंट हो सकें। लगाने वाली दवा का योग यह है।

(१३४) क्षार अक्सीरी

ऊँट की मेंगनी जो वर्षा में भीगी हुई न हो २ सेर लेकर कूट लें और उनको ४ सेर पानी में भिगो दें। ८ दिन लगातार भीगी रहने के पश्चात् उनका स्वरस लेकर निथार कर छान लें और कढ़ाई में डाल कर उसमें ६ मा० शीशी नमक व ६ मा० नौशादर मिला कर आग पर पकावें और प्रसिद्ध विधि से क्षार बनालें।

सेवन विधि--शौच आदि से निवृत्त होकर थोड़ासा

चार मस्सों पर लगा दिया करें। ८ प्रहर के पश्चात् पुनः लगावें और इसी प्रकार लगाते रहें। बांधने की आवश्यकता नहीं। इन उपरोक्त दोनों औपधियों से अर्श रोग समूल मिट जायेगा।

विशेष सूचना--रसौंत को पानी या छाछ में घोल कर टिका कर रख दें और निथार कर पानी छान कर कढ़ाही में डालें। जब पक कर गाढ़ा हो जावे, तब किसी चीज में भर कर रखें, यही शुद्ध रसौंत है।

(१३५) रक्तार्श के लिये सुगम वटी

यह योग उन्हीं वृद्ध महाशय का है। जब बवासीर का रक्त किसी प्रकार भी रुकने में न आता हो तो ईश्वर कृपा से निम्नांकित योग से केवल ३ दिन में निश्चय ही रुक जाता है।

योग--कलमी शोरा, कच्ची फिटकरी, शुद्ध रसौंत, बराबर २ लेकर जल की सहायता से जंगली बेर के समान गोलियां बनालें और एक २ गोली प्रातः सायं ताजा जल के साथ सेवन करें। रक्तार्श के लिए अक्सीर सिद्ध होगी।

(१३६) प्रवाहित रक्त को रोकने वाली औषधि

जब अत्यधिक रक्त प्रवाहित होकर दुर्बलता का कारण बन रहा हो और किसी प्रकार भी बन्द होने में न आता

हो तो ऐसे समय में यह औषधि बहते हुए रक्त प्रवाह को रोकने में जादूई प्रभाव दिखाती है। इसकी पहिली मात्रा ही पर्याप्त लाभ पहुंचाती है।

योग—५ तोला नौशादर को १० तो० सांभर नमक के मध्य में रखकर सराव सम्पुट करके प्रसिद्ध विधि से सत्व उड़ालें और पृथक करके शीशी में सुरक्षित रखलें।

सेवन विधि—१ रत्ती औषधि मक्खन में मिला कर रोगी को खिला दें। बवासीर का बहता हुआ रक्त पहिली मात्रा से ही रुक जायगा।

विशेष सूचना—सत्व उड़ाने के पश्चात् जो दवा सराव में नीचे रह जाय उसमें थोड़ी सी काली मिर्च पीस कर मिलालें। और स्वादिष्ट पाचक चूर्ण बनालें। कफ प्रकृति वालों के लिए उत्तम रेचन भी होगा।

(१३७) हर प्रकार की बवासीर के लिए अपूर्व चमत्कारी बटी

(ह० शेर मुहम्मद साहब, चकाला द्वारा प्रदत्त)

खूनी या बादी कैसी भी बवासीर क्यों न हो, इस योग से निश्चय ही मिट जाती है। मस्सों का जोर तो गिनती के दिनों में ही टूट जाता है और फिर कुछ और दिनों में ही रोग नितांत मिट जाता है।

योग— निम्ब बीज, बकायने के बीज समुद्र शोप, प्रत्येक २ तो०, गुग्गुल ५ तो०, शुद्ध रसौंत ५ तो०, अंजबार की जड़ जरशक रीठे का पोस्त, नरकचूर, पीतहड़ की छाल, प्रत्येक ५ तोला।

निर्माण विधि—सबको कुचल कर किसी कलईदार पात्र में १॥ सेर पानी में भिगो दें। और २ दिन भीगने के पश्चात् चूल्हे पर चढ़ाकर पकावें। जब कई उबाल आ-चुकें, तो मलकर छानलें और उसमें निम्न औषधियां पीसकर मिलादें। चूना संगमर्मर ५ तो०, काला नमक ६ माशा, सांभर नमक ६ मा०, जहर मोहरा ५ तो०, श्वेत मिर्च १ तोला। इन्हें मिलाकर पुनः आग पर चढ़ाएं। जब गाढ़ा हो जाय, तो जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। यदि द्रव्य अधिक गाढ़ा हो जाने से गोलियां न बन सकें, तो थोड़ा सा घृत कुमारी का अर्क मिलाकर गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः मध्याह्न, और सायंकाल गुलाब जल के साथ दें। हर प्रकार के बवासीर को मिटाने की चमत्कारी गोलियां हैं।

(१३८) अर्शनाशक सप्तवटी

(श्री रामलाल जौहर एम.ए.एस.एस. शाहपुर द्वारा प्रेषित)

यह वह योग है, जिसके केवल ७ दिन के सेवन से हर प्रकार का अर्श निश्चय ही मिट जाता है। उक्त सज्जन लिखते हैं कि दिल तो नहीं चाहता था कि अपना अद्वितीय योग इस निर्दयता के साथ प्रकट करदूं, क्योंकि यह योग मैंने बड़े परिश्रम के साथ प्राप्त कर पाया था, किन्तु आपकी सेवा से विमुख भी नहीं होना चाहता, अस्तु योग सेवार्पित है। केवल सात दिन में ही यह अर्श को निर्मूल कर देता है। योग को साधारण न समझें।

योग--गेंदे के पुष्प १ तोला, शुद्ध रसौंत १ तो०, मुनक्का बीज रहित ८ माशा। सबको एकत्र करके बारीक पीसकर १-१ माशा की गोलियां बनालें।

सेवन विधि--१ गोली नित्य प्रातः जल के साथ निगल जायें।

अर्श की बाह्य चिकित्सा

खाद्य योगौषधियां तो पर्याप्त लिखी जा चुकी हैं अब कुछ ऐसे योग लिखे जाते हैं, जो कि बाह्य रूप से लगाने अथवा धूनी देने से मस्सों को नष्ट कर देते हैं। प्रथम भाग में भी कुछेक उत्तमोत्तम योग ऐसे लिखे गये थे जिनसे गिनती के दिनों में अर्श के मस्से झड़ जाते हैं। और जिनके चमत्कारी प्रभाव से ही अनेक व्यक्तियों के परिवार

का भरणपोषण हो रहा है। अब इस द्वितीय भाग में अधिकतर मित्रों द्वारा प्रेषित योग प्रकाशित किये जा रहे हैं। ये योग अत्युत्तम और सरलता से बनने वाले हैं।

(काश्मीर के एक महान सन्यासी का उपहार
मस्सों को जड़ से उड़ाने वाली अपूर्व औषधि)

(१३६) संखिया तैल

यह योग मेरे परम कृपालु मित्र हकीम एम. ए. साहब तहसीलदार असकर्दू को एक काश्मीर के सन्यासी ने प्रदान किया था।

योग—संखिया श्वेत १ तोला, लेकर बकरी के २१ पित्ते १-१ करके डालते और खरल करते जायं। जब सारे पित्तों का जल शोषित हो जाय, तो उसकी गोली बनालें और खद्दर के कपड़े की ३-४ तह करके उसमें गोली रख कर ढीली सी पोटली बांध दें और १ सेर गौ घृत के मध्य लटका कर २४ घंटे मन्द २ आंचपर पकावें। घृत पोटली से २ अंगुल ऊपर तक रहना चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि यह क्रिया कलईदार देगची या रोगनदार मृतिका पात्र में करें और आंच तेज़ न होने दें। घी कड़क जाय, बस ऐसी आंच हो, अन्यथा घी में आग लग जायगी। एक पहर बाद उतारकर घी को शीशी में रखलें।

सेवन विधि—पूरी सहन शक्ति के अनुसार मस्सों पर लगाने से २-३ दिन में मस्से सूख जायेंगे। जिसके मस्से अन्दर हों, वह एक बार अंगुली पर इस घी को लगा कर अन्दर लगा दें। बस एक बार का लगाना ही पर्याप्त होगा। भोजन में तीन दिन तक मीठे चावल अथवा मिठाई खावें और नमकीन तथा वायुकारक वस्तुएं सेवन न करें।

(१४०) एक और रसायन तैल

(ह० ईसा खां पठान, अहमदाबाद द्वारा प्रेषित)

यह योग असंख्य रोगियों पर परीक्षा करके पूर्ण सफल पाया गया है। कुछ दिनों में ही मस्सों को नष्ट करके आजन्म फिर नहीं उगने देता। विशेषता यह कि रोगी को तनिक भी कष्ट नहीं होता।

योग—यथावश्यक कुचला लेकर पातालयन्त्र से तेल खींचलें, और शीशी में सुरक्षित रखें। शौच से निवृत्त होकर नित्य रुई की फुरेरी से मस्सों पर लगाया करें।

(१४१) एक चमत्कारी अर्श मलहम

योग—यशद भस्म, नौशादर देशी दोनों सम भाग।

निर्माण विधि—नौशादर को बारीक पीसलें।

और एक कड़छी में यशद भस्म बिछाकर उस पर नौशादर बिछादें फिर यशद भस्म बिछाकर पुनः नौशादर बिछाएं। इसी प्रकार सारा द्रव्य उस कड़छी में बिछाकर उसे कोयलों की तेज आंच पर रखें। पहिले किनारों से पकने लगेगा और रंग काला होता जायेगा। हां बीच में सफेद रहेगा। उसको लकड़ी से मिलादें। जब काले पानी की शक्ल में हो जाय, तो नीचे उतार कर थोड़ा सा पानी मिलादें ताकि मलहम बन जाय। फिर एक दो उबाल देलें। क्वाथ ठीक न बने, तो घोंट कर ठीक करलें और सुरक्षित रखें। यह मलहम प्रतिदिन मस्सों पर लगाएं। एक हफ्ते में ही मस्से नितान्त नष्ट हो जायेंगे।

(१९२) होम्योपैथिक रेमेडो कं० लंदन की मलहम

अर्श के मस्सों की अन्तिम चिकित्सा

इस मलहम का उक्त कम्पनी द्वारा बड़ा विज्ञापन हो रहा है। एक औंस के ट्यूब का मूल्य १२ आने है। साथ में औषधि लगाने के लिए एक कठोर नली भी होती है। उसके ऊपर ये शब्द लिखे होते हैं:—'यह दवा हर प्रकार की बवासीर को नष्ट करती है। दाद, खाज और जलन को भी तत्काल आराम पहुंचाती है। यप मलहम दिन में तीन बार लगाई जाती है।

परीक्षकों ने बताया कि इसमें सारे का सारा सौफ्ट पैराफीन होता है, नाममात्र को एक थ्यूल नामक औषधि मिला दी जाती है, जिससे इसकी गंध तो मिट जाय और रंग में कोई अन्तर न आए। अनुभव द्वारा ज्ञात हुआ कि यदि सौफ्ट पैराफीन में ½ प्रतिशत एकथ्यूल डाल दिया जाय, तो रंग काला हो जाता है। इस से अनुमान लगाया जाय, तो रंग काला हो जाता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह दवा इससे भी कम सम्मिलित है।

इसकी लागत एक पैसा होती है, और बाहर आने को बिकती है।

(१४३) अर्श नाशक धूनी

एक मुन्शी जी ने बताया था कि मैं पहाड़ पर रहता था। संयोग वश निकट ही एक सन्यासी की कुटिया भी थी। उनके पास एक चमत्कारी योग था, जिसकी दूर २ तक चर्चा थी। मैंने यह जानकर धीरे २ सन्यासी के साथ सम्बन्ध पैदा किए और ज्यों-त्यों करके योग प्राप्त किया। जब मैंने इसकी रोगियों पर परीक्षा की, तो सदैव सफल पाया।

योग—गाय के सींग का गूदा ३० माशा, सिरस के बीज ३० मा० कूट कर बारीक पीस लें और उसकी ३ पुड़ियां बनालें। आवश्यकता के समय पृथ्वी में गढ़ा

खोदकर उसमें अंगारे डाल कर १ पुड़िया ऊपर डालें, और रोगी को गढ़े पर बिठा कर मस्सों को धूनी दें। और वहीं बैठे २ रोगी को एक छटांक घी पिला दें। ३ दिनमें ही मस्से झड़ जायेंगे। यह योग मेरा स्वयं का अनुभूत तो नहीं है, हां द्रव्यों पर दृष्टिपात करने से उपयोगी प्रतीत होती है। अतः प्रकाशित कर दिया है।

(हर चिकित्सक व जनसाधारण के लिए अपूर्व जानकारी)

रीह की बवासीर

इस रोग के यथार्थ रूप से अल्पव्यक्ति ही परिचित होंगे। यद्यपि इसके प्रथम भाग में इसका वर्णन आचुका है, किन्तु वह अपर्याप्त था, अस्तु यहां सविस्तार विवरण लिखा जा रहा है, ताकि पाठक गण पूर्णतया परचित हो सकें।

इस रोग का वर्णन डाक्टरी पुस्तकों में कहीं नहीं है, अतः डाक्टर लोग इसके लक्षण सुनकर 'क्रानिक डिस्पेप-सिया' समझ बैठते हैं, और उसकी चिकित्सा करने लग जाते हैं। चूंकि जीर्णकोष्ठ बद्धता (Chronic Difspepsia) और रीह की बवासीर पृथक २ रोग हैं, अतः उनकी चिकित्सा सर्वथा निष्फल रहती है।

रोग परिचय—इस रोग में यद्यपि रक्त नहीं आता,

तथापि कष्ट खूनी बवासीर से कम नहीं होता। रोगी मृत प्रायःसा हो जाता है।

मूल कारण--चिरकाल की कोष्ठबद्धता, अधिक बैठे रहने, वायुकारक भोजन करने, प्रतिदिन मांस खाने आदि से यह रोग उत्पन्न हो जाता है। मदिरा पान करने वालों को यकृत के विकार से भी यह रोग हो जाता है।

पहिचान--रोगी को सदैव कोष्ठबद्धता रहती है, कभी २ अतिसार भी आने लगते हैं, पेट में वायु फिरने लगती है, भूख कम हो जाती है, यदि भूख लग जाय तो सहन नहीं होती। रोगी हर समय चिन्ताग्रस्त रहता है। निद्रा भी शांति पूर्ण नहीं आती। भयानक सपने आते हैं, थोड़ी देर भी लिखने पढ़ने से सिर चकराने लगता है। कभी २ रोग की उग्रता के कारण रोगी गले में कुछ अटका हुआ सा अनुभव करता है जो कि शनैः २ स्वतः ही मिट जाता है। कई रोगी तो अपने ऊपर जिन, भूत प्रेत की छाया समझने लगते हैं।

विशेष लक्षण—ऐसा रोगी मैथुन में भी आनन्द प्राप्त नहीं कर पाता, भोग के पश्चात् अत्यधिक दुर्बलता आजाती है, शरीर टूटने लगता है। सारांश यह कि नित्य नई २ शिकायतें बनी रहती हैं। जब कभी इस रोग की रीह दौरा करती हुई जोड़ों में चली जाती है, तो गठिया

के चिन्ह प्रकट हो जाते हैं। और चिकित्सक गठिया की चिकित्सा करता है जो नितान्त निष्फल जाती है।

रोगी के लिए सुनहरी आदेश

१——प्रातःकाल वायुसेवन करना यूं तो हर व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद है किन्तु इस रोग के रोग के लिए तो परमावश्यक है।

२—व्यायाम करना भी इस रोग के लिए लाभकारक है।

३——मनोरंजक कहानियां पढ़ना व सुनना भी अति लाभ-प्रद होता है, क्योंकि इससे चित्त प्रसन्न रहता है।

४——हानिकारक पदार्थों से बचना अत्यावश्यक है।

(१४४) रीह-बवासीर की सर्वोत्तम औषधि

योग——काली हरड़, काबुली हरड़ का छिलका, बहेड़े की छाल, तिरबी शुद्ध, आमला, काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ, नागरमोथा, चित्रक, बालछड़, रसौंत, नीम के डोडे २-२ तो० सोया के बीज, गन्दना के बीज, चारों अजवायन, पोदीना, बड़ी इलायची के दाने ४-४ तो०, मण्डूर भस्म १० तोले, मधु १। सेर, कस्तूरी १ तो०, केसर १ तोला। सबको बारीक पीसकर मधु से अवलेहवत् बनालें और उसे ६ मा० तक नित्य प्रातः खिलाएं। हर प्रकार की बवासीर के लिये लाभदायक है।

विशेष सूचना—इस रोग के दो अनुपम योग 'देहाती औषधि चिकित्सा' नामक पुस्तक में देखिए।

वर्जित वस्तुएँ—आलू, अरबी, बैंगन, दूध, दही व खट्टी वस्तुएँ और लाल मिरच का सेवन कदापि न करें।

पथ्य—मूँग, अरहर की दाल, गेहूं की रोटी, बकरी के बच्चे का शोरवा, अंगूर, खुबानी आदि खाने चाहिये।

चर्म-रोग

चमड़े के रोग तो असंख्य हैं, जिनमें से अधिकांश रोग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' 'प्रथम भाग में' वर्णित किए जा चुके हैं। नीचे कई एक नए योग भेंट किए जाते हैं जो कि सहयोगी मित्रों ने प्रकाशनार्थ भेजे हैं। कुछेक हमारे अपने भी योग हैं।

उपदंश (आतशक)

विगत युग में भारत में इस रोग का चिन्ह-मात्र न था। फिर शनैः २ यत्र-तत्र यह रोग दृष्टिगत हुआ। चूंकि यह रोग फिरंगिस्तान से आरम्भ हुआ था अतः उस काल में इसे 'फिरंगवादे' कहते थे। लेकिन कुछ वर्षों में ही वह युग आया जब कि फिरंगियों ने तो संयम द्वारा इसे मार भगाया, हाँ अतिथि सत्कार के लिए विख्यात भारत देश ने न केवल उपदंश अपितु मूत्र-कृच्छ्र, प्लेग,

विशूचिका आदि अनेक सांघातिक रोगों को भी शरण दी और आज संसार भर में सबसे अधिक मनुष्यों की बलि अकेला भारत ही इन रोगों के चरणों पर चढ़ाता है। अभी तो इन रोगों ने भारत में अपने डेरे ही जमाए हैं, सम्भव है कभी अपना राज्य स्थापित करके भारतवासियों को देश छोड़ने पर विवश ही कर दें।

(१४५) उपदंश के लिए रक्त रेचन वटी

उपदंश की चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व प्रायः वैद्य रेचन द्वारा निकृष्ट मवाद निकाल देना आवश्यक मानते हैं। अस्तु प्रथम लगभग आधा रोग मिटा देने वाले कुछेक रेचन लिखते हैं, निम्न रेचन योग ह० अब्दुल हकीम साहब अन्सारी दिल्ली के चिकित्सालय का पूर्ण अनुभूत है। इस योग की उत्तमता का प्रमाण स्वयं विख्यात हकीम जी का नाम ही है।

योग— शिंगरफ १ तोला, कच्चा सुहागा २ तो० जयपाल शुद्ध ४ तो०। सबको सूक्ष्म पीस कर २० कागजी नींबुओं के रस में घोंट कर काली मिर्च के बराबर गोलियाँ बनालें।

सेवन विधि— इसकी १ गोली से दो दस्त आते हैं जुलाब के लिये ५ गोली देनी चाहिये। किंतु जुलाब देने

के दो दिन पूर्व से रोगी को गेहूं का दलिया या खिचड़ी खाने को दें और गोलियां खिलाने के कुछ देर उपरांत पाव भर गर्म २ दूध पिलादें।

लाभ—उपदंश का मवाद निकालने के लिए इससे उत्तम अन्य औषधि नहीं है और विशेषता यह है कि दूध पिला देने से दुर्बलता तनिक भी नहीं आती, यद्यपि मल अत्यधिक निकलता है।

विशेष सूचना—खरल करते समय घोंटने की गति अपनी ओर से विपरीत दिशा को होनी चाहिए। इसके विरुद्ध करने से प्रायः रोगी को दस्तों के स्थान पर वमन (कै) होने लगती हैं और यदि गतियाँ दोनों दिशाओं को हों तो, दस्त और कै दोनों ही आते हैं।

(१४६) उपदंश का अमीरी रेचन

इस रेचन द्वारा उपदंश का मवाद बिना कष्ट निकल जाता है। जयपाल और पारा उपदंश के लिए अति लाभकारी हैं। हमने इसी पुस्तक के प्रथम भाग में 'कृष्णारेचन वटी' के नाम से एक योग लिखा है। जो कि उपदंश के लिए महा अगद है। परन्तु उसमें दोष यह है कि उससे दस्त और कै इतने आते हैं कि कोमल स्वभाव-अमीर उन्हें सहन नहीं कर सकते। अस्तु उनके लिए यह जुलाब सर्वो-

त्तम है। इसका योग कोष्ठबद्धता के प्रकरण में इसी पुस्तक का योग नं० ११६ ही है, जो कि गुलाब पुष्पों से बनता है।

(१४७) खाद्य औषधि का योग

[विकृत से विकृत उपदंश के लिए सुविख्यात हकीम हाफ़िज़ अब्दुल समद साहब की चिकित्सा-पद्धति]

पित्त पापड़ा के पत्ते, पित्त पापड़ा के बीज, मेंहदी के पत्ते, मेंहदी के बीज, गुल नीलोकर प्रत्येक ६ मा०, आलू बुखारा १० दाने। सब द्रव्यों को रात के समय आधा सेर पानी में भिगो दें और प्रातः मल कर छान लें और ऋतु के अनुसार मधु या शर्बत बनफ़शा मिला कर पिलाया करें।

(१४८) मलहम का योग

रस कपूर ६ मा०, राल सफेद १ तो०, कपूर ४ मा० पारा ६ मा०, सफेदाकाशग़री, कत्था सफेद, मुर्दासंग, इलायची सफेद, प्रत्येक ६ मा० बारीक पीसकर कपड़छन करें और चमेली के तेल में मिला कर रख लें। दिन में एक बार नित्य घावों पर लगायें।

उपदंश रोगी की एक सच्ची घटना

हकीम साहब ने बताया कि एक बार एक उपदंश रोगी मेरे चिकित्सालय में आया। उसकी दशा बड़ी

शोचनीय थी, वह घावोंकी जलन और पीड़ा से विकल था। उसने नग्न होकर घाव दिखाए तो ऐसा प्रतीत होता था मानो एक दो दिन में ही गल कर गिर जायेंगे। मैंने ईश्वर का नाम लेकर उक्त दोनों योग प्रारम्भ कराए। ईश्वर की लीला ऐसी कि एक सप्ताह में ही स्वस्थ होकर अपने घर को चला गया। इसके पश्चात् अन्य कई रोगियों पर परीक्षा की तो सर्वत्र सफलता प्राप्त हुई। फिर तो अनेक इष्ट मित्रों ने इस योग को जानने की इच्छा प्रकट की किंतु मैंने अब तक किसी को नहीं बताया। आज आपकी सेवा में निस्संकोच समर्पित कर रहा हूं।

(१४६) महान सन्यासी योग

(वैद्य रामदास जी ऊना निवासी द्वारा प्रदत्त)

आपका कथन है कि इस योग की जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। उपदंश रोगी की दशा चाहे कितनी ही बुरी क्यों न हो इसकी ३ मात्राएँ ही चमत्कार दिखा देती हैं।

योग—एक पीले रंग का ग्यारह छटांक का मेंढ़क लेकर उसका पेट चीर कर भीतर से साफ करदें और हाथ पांव भी काट डालें। फिर उसमें दार चिकना, रस कपूर, शिंगरफ रूमी, संखिया श्वेत बराबर लेकर भर दें और

कपरोटी करके १२ सेर कण्डों में फूंक दें। भस्म हो जायेगी। पीस कर शीशी में रख लें।

सेवन विधि--२ चावल से ४ चावल तक हलुवा या मलाई में दें। नया रोग ३ दिन में और पुराने से पुराना उपदंश ७ दिन में नितान्त उड़ जायगा।

(१५०) बहुमूल्य फ़क़ीरी मोती

(ह० पीर मौलवी अब्दुल वहीद साहब द्वारा प्रदत्त)

एक रोगी की दशा उपदंश से बिगड़कर कोढ़रूप में पहुंच गई थी। कोई पुरुष उसे पास फटकने भी नहीं देता था। लिंगेन्द्रिय बिल्कुल सड़ गई थी। ईश्वर कृपा से निम्न योग ने अद्भुत चमत्कार दिखाया। और वह रोगी जो जीवन तक से निराश हो चुका था, गिनती की मात्राओं से ही पुनः आरोग्य हो गया।

योग--श्वेत संखिया ३ मा०, थोहर का दूध २० तोला, काली मिर्च १० नग। कपरोटी करके १० सेर उपलों की आंच दें।

सेवन विधि--खशखश के दाने बराबर मात्रा मुनक्का में लपेट कर खिलादें। खाने के लिए खांड रहित घी और रोटी की चूरी दें और प्रत्येक वस्तु से परहेज कराएँ। सात दिन सेवन पर्याप्त है।

(१५१) रमते जोगी का अनमोल योग
उपदंश की अनमोल बटी

योग—शिंगरफ़ रूमी १ तोला, पीत संखिया १ मा० दोनों को खरल में खूब पीसें और नर बकरे के पित्त का पानी डाल कर खरल करते रहें। इसी प्रकार ८ दिन लगातार पीसें फिर मसूर के दाने बराबर गोलियां बनालें और १ गोली नित्य प्रातः हलुआ में लपेट कर खिलाएँ।

लाभ—एक सप्ताह में हर प्रकार का उपदंश समूल मिट जायगा। बिना मलहम लगाए घाव सूख जायेंगे। अपूर्व शक्तिदाता भी है। २१ दिन निरन्तर सेवन कराएँ ताकि विष निर्मूल हो जाय।

सूचना—यदि रोगी पुरुष है तो नर बकरे के पित्तों का जल लेना चाहिये और यदि रोगी स्त्री है तो बकरी के पित्तों का।

(१५२) पारे की भस्म

उपदंश के लिए इससे उत्तम औषधि अन्य नहीं।

योग—शुद्ध पारा १ तो०, गन्धक का तेजाब ५ तो० को कपरोटी की हुई आतशी शीशी में डाल कर सुखालें और इस प्रकार एक के बाद एक सुखा कर ७ बार कपरोटी करलें। जब नितांत सूख जाय, तो खुले मैदान में

कोयलों की अंगीठी रखें। जब कोयले सुलग कर धुआं देना बन्द करदें तो उनके बीच में आतशी शीशी रख दें। शीशी के मुँह से थोड़ी देर में धुवां निकलने लगेगा। जब तक धुआं निकलता रहे बराबर आग पर रखे रहें। धुआं बंद होने पर समझलें कि औषधि तैयार होगई। इसे सूक्ष्म पीस कर शीशी में रख लें और एक चावल से २ चावल तक हलुवे में लपेट कर निगलवा दें और पौष्टिक भोजन खिलाएं। नए व पुराने उपदंश के लिए अक्सीर है।

(१५३) विशेष चमत्कार

इसी भस्म को पानी से धोलें तो पीत वर्ण की हो जायगी। इसी भांति ७ बार पानी से धोकर सुखालें और उससे आधा भाग काला सुरमा मिला कर खरल में रगड़ें तो उसका रंग हरा हो जायगा। यह फोले की अक्सीरी दवा है। केवल एक सलाई आठवें दिन नेत्रों में लगाया करें। कुछ ही बार के लगाने से फोला नितान्त मिट जायगा। यह लगता बहुत है।

(१५४) उपदंश का रहस्यमय योग

यह योग हकीम मिर्जा खुरशीद अली खां साहब, कमाण्डर इनचीफ को एक सन्यासी ने प्रदान किया था।

यह रोग हर प्रकार के विषैले पदार्थों से रहित और सर्वथा निरापद है।

योग—कपूर ३ माशा, अरंडी का तेल १० तोला। प्रथम कपूर को कांच या चीनी के खरल में खरल करके बारीक पीस लें और फिर अरण्डी का तेल डाल कर खूब खरल करें, यहां तक कि तेल का रंग दूध जैसा सफेद हो जाय। इसे चीनी पात्र में रखलें और निन्य १ चाय का चम्मच भर कर प्रातः पिलाया करें।

लाभ—यह औषधि ऐसे उपदंश में भी लाभदायक है कि जब रोगी के शरीर पर दाग पड़ गये हों और उन में से रक्त बहता हो। गिनती के दिनों में ही आराम हो जाता है। नया उपदंश तो प्रायः एक सप्ताह में ही मिट जाता है। रोग पुराना हो तो औषधि अधिक बनालें। इस औषधि में विशेषता यह है कि कोई विशेष पथ्य भी नहीं है। केवल तेल की वस्तुओं, गर्म पदर्थों तथा मैथुन से परहेज रखें।

(१५५) सत्व रस कपूर रजती

रजत चूर्ण १ तो०, रस कपूर १ तो०। दोनों को ३ दिन तक सूखा ही खरल में रगड़ें, फिर सराव सम्पुट करके विधिवत् सत्व उड़ालें और फिर तली में बचे द्रव्य

तथा सत्व को मिला कर पुनः यथा विधि सत्व उड़ावें। इसी प्रकार तीसरी वार सत्व उड़ा कर शीशी में रखलें।

सेवन विधि---२ से ४ चावल तक मात्रा मक्खन में लपेट कर निगलवा दिया करें। भोजन अत्यन्त पौष्टिक खिलाया करें। इससे हर प्रकार का उपदंश एक सप्ताह में निश्चय ही मिट जाता है।

(१५६) उपदंश की अपूर्व अक्सीर

इस औषधि से अब तक सैकड़ों रोगी जो निराश हो चुके थे, लाभ उठा चुके हैं।

हमारे एक मित्र ने इस योग से सम्बन्धित बड़ी रोचक कहानी सुनाई। एक सेकिन्डक्लाश इंजीनियर साहब इस रोग में फँस कर दो साल तक अगणित वैद्यों और चिकित्सकों से इलाज कराते फिरे। ५००) रुपये भी फूँक दिए, परन्तु फिर भी निराशा का ही मुँह देखना पड़ा। संयोगवश एक दिन एक सन्यासी ने उनकी दशा पर तरस खा कर उन्हें यह योग दिया। ईश्वर की अनुकम्पा से उस औषधि के ३ दिन सेवन करनें से ही उन्हें सन्यासी जी के कथनानुसार पूर्ण लाभ हो गया। परन्तु सुरक्षार्थ उन्होंने सात दिन तक सेवन की। तत्पश्चात् अगणित रोगियों पर इसकी परीक्षा की गई और सदा सफल हुई।

फिर हकीम जी ने योग लिखाया जो कि जनाब शेर नवाज़ खां साहब सय्याद द्वारा प्रदत्त योग से अक्षरशः मिल गया।

योग--रस कपूर १ तो०, भंग का बीज १० तो०। दोनों को पृथक २ बारीक पीस कर ७ पुड़िया हरेक की बनालें। फिर आधा सेर बकरे के मांस का कीमा बना कर उसको ३ छटांक घी में मसाला डाल कर भून लें। जब मसाला लाल हो जाय तो एक पुड़िया रस कपूर की डालें और फिर कीमा मिला कर भूनें। जब खूब भुन जाय तो भंग के बीज की एक पुड़िया डालें। जब शोरबे का रंग बदल जाय तो पानी डाल कर उबालें और पकाकर शोर्वा तैयार करें और रोगी को खिलाया करें। चाहे सारे शरीर पर धब्बे पड़ गए हों, इसके पहिले दिन के सेवन से ही आराम होने लगता है और तीन दिन में धब्बे मिट जाते हैं। पूरे सात दिन सेवन करने से तो शरीर कुन्दन की भाँति चमक उठता है।

पथ्य---कीमा और सूखे फुल्कों के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं से बचें और मैथुन से सख्त परहेज करें।

मलहमों के कुछ उत्तम योग

यद्यपि उपरोक्त औषधियों को विना मलहम लगाए सेवन करने से ही घाव ठीक हो जाते हैं तथापि घाव की

जलन और पीड़ा मिटाने के लिए मलहम बड़े लाभकारी सिद्ध होते हैं। अस्तु नीचे कुछेक मलहमों के उत्तम योग अंकित किए जाते हैं, जिन्हें बाह्यरूप से लगाने से ही शीघ्र ही रोग नष्ट होकर शरीर कुन्दन के समान चमकने लगता है। एक से एक बढ़ कर योग है।

(१५७) प्रथम मलहम योग

मुर्दासंग २ मा०, कत्था सफेद ३ मा०, कमीला ३ मा०, कुचला जला हुआ १ दाना, मोम सफेद १ तो० गौ घृत १ तोला।

निर्माण विधि--पहिले सारी दवाएँ बारीक पीसलें फिर घी गर्म करके उसमें मोम तथा दवाएँ डाल कर मिलालें। बस मलहम तैयार है। इसके केवल ३-४ दिन लगाने से ही घाव मिट जाते हैं।

(१५८) द्वितीय मलहम योग

(डा० विशेशरदास की कपूरथला द्वारा प्रदत्त)

योग--रस कपूर, कत्था, मुर्दासंग प्रत्येक २ तोला सुपारी भस्म ४ नग, कपूर ४ माशा, एक सौ बार धोया हुआ मक्खन १० तो०। सब दवाओं को पीसकर मक्खन में मिला कर मलहम बनालें और घावों पर लगाया करें।

(१५६) तृतीय मलहम योग

रस कपूर, शिंगरफ रूमी, सफेदा काशगरी, मुर्दासंग, सिन्दूर, कौड़ी भस्म प्रत्येक १ मा०, मोम शुद्ध १ तो०, चमेली का तेल ३ तो० । सब दवाओं को अति सूक्ष्म पीस कर रखें । फिर मोम को उष्ण करके चमेली के तेल में मिला लें और पीसी हुई औषधियां उसमें डाल कर मलहम बनालें । उपदंश के घावों के लिए इससे उत्तम मलहम नहीं है ।

दाद और चम्बल

दाद और चम्बल के अनेक विशेषातिविशेष अनूभूत योग प्रथम भाग में लिखे जा चुके हैं और उसमें की गई घोषणा के अनुसार यहां भी कुछ अत्युत्तम योग भेंट किए जाते हैं । केवल झूठी प्रशंसा के पुल बांध कर साधारण से योग लिख देना तो सभी जानते हैं, किन्तु सैकड़ों रोगियों पर परीक्षा करके सफल योग भेंट करना बात ही कुछ और है । हमारे लिखे हुए योगों की हर व्यक्ति परीक्षा करके स्वयं उनकी अच्छाई बुराई जान ले ।

(१६०) सौ उपायों से बढ़कर एक उपाय

यह उपाय अनुभव करके इतना लाभदायक पाया गया है कि जब किसी प्रकार का दाद, चम्बल ठीक होने

में नहीं आते तो इस उपाय से निश्चय ही आराम हो जाता है।

उपाय यह है कि यथा सम्भव अधिकाधिक जोंकें लगवा कर दूषित रक्त निकलवादें। फिर एक मास पश्चात् पुनः ऐसा ही करें। फिर ६ मास उपरान्त पुनः जोंकें लगवा कर दूषित रक्त निकलवा दें। बिना औषधि सेवन के ही निश्चय आराम हो जाएगा।

(१६१) एक सन्यासी तेल

बकरे के पांव लेकर पकाओ और हड्डियों का पाताल यन्त्र से तेल खींच कर नित्य चम्बल पर लगाएं। कुछ दिनों के लगाने से ही पूर्णतया आराम हो जाएगा।

(१६२) चम्बल की उत्तमोत्तम औषधि

(ह० शर्फुद्दीन साहब द्वारा प्रदत्त)

योग—लोनी अर्थात् कुल्फा का पेड़ १ सेर, सरसों तेल आधा सेर, पारा ८ तो०। पहिले कुल्फा को मिट्टी के कूंडे में रगड़ो फिर उसे लोहे के पात्र में डाल कर पारा थोड़ा २ मिलाते हुए पूर्ववत् रगड़ते जाओ। तत्पश्चात् थोड़ा २ तेल मिला कर पीसते जावें। सारा तेल समाप्त होने पर जब औषधि तेलवत् हो जाय तो शीशी में भर कर रखलें। यही दवा है।

सेवन विधि--नित्य प्रति यही तेल चम्बल पर लगाया करें। चाहे कैसा ही विगड़ा हुआ चम्बल क्यों न हो, कुछ दिन लगाने से शर्तिया मिट जायगा। यह योग शतशोनुभूत है।

विकृत दाद व चम्बल की अन्तिम औषधि

(पं० वेलीराम जी लायलपुर द्वारा प्रेषित)

उक्त पंडित जी लिखते हैं कि मैंने इसे असंख्य रोगियों पर जांचा लेकिन आज तक कभी निष्फल नहीं हुआ। जिस सन्यासी से यह योग मुझे प्राप्त हुआ था उसने मुझे इस औषधि को बिना मूल्य के ही वितरण करने की आज्ञा दी थी। अतः मैंने आज तक कभी इसका मूल्य नहीं लिया। पाठकों से भी मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे बिना मूल्य के ही वितरण करें। जो रोगी सैकड़ों वैद्यों से चिकित्सा करा कर निराश हो चुके हों उसे थोड़े से परिश्रम से यह तैल बना कर दे दें। ईश्वरानुकम्पा से उसे निश्चय ही आराम हो जाएगा। अगर इसे दाद चम्बल का सर्वोपरि योग कह दिया जाय, तो भी अतिशयोक्ति न होगी। यह योग मुझे २१ नवम्बर १६०६ में एक सन्यासी ने बताया था। तभी से इसे प्रयोग कर रहा हूं। योग यह है:--

(१६३) महारसायनिक तेल

यह वह तेल है, जो २० वर्ष के चम्बल को भी मिटा देता है।

योग—तूतिया, कमीला, बावची, मुर्दासंग, हरताल वरकिया प्रत्येक २॥ तो०, नारियल का छिलका १ सेर।

निर्माण विधि—पहिले उपरोक्त द्रव्यों को जौकुट करलें फिर एक तांबे की देगची (विना कलई की हुई) में एक पक्की ईंट का टुकड़ा रखकर उसके चारों ओर जौकुट की हुई औषधि डाल दें और ईंट के टुकड़े के ऊपर एक चीनी या सिल्वर का प्याला रख दें। तदनन्तर देगची का मुँह पीतल की वाटी जो कि फिट आजाय, उसे ढक कर गेहूं के गुन्धे हुए आटे से किनारे भली भाँति बन्द करदें और नीचे बेरी की लकड़ी की धीमी २ आँच जलाएँ। जब ऊपर का पानी गर्म हो जाया करे तो पुनः पुनः बदलते रहें। इसी प्रकार करते २ चार घंटे लगातार आँच जलाएँ। फिर आग हटा कर सर्वांग शीतल होने पर ऊपर की वाटी हटा कर देखें। प्याला काले रंग के तेल से भरा हुआ निकलेगा, यह वही तेल है जो चम्बल पर कभी असफल नहीं हुआ।

सेवन विधि—पहिले चम्बल के छिलकों को साबुन

से धोकर स्वच्छ करलें, फिर घावों को नंगा करके रुई की फुरेरी से इस तेल को लगाया करें। २० वर्ष का चम्बल भी मिट जायगा।

विशेष सूचना--ऊपर के बर्तन में कोई पत्थर या लोहे का भारी टुकड़ा रख देना चाहिए, ताकि भाप की शक्ति से देगची की मुख मुद्रा टूटने का भय न रहे।

(१६४) अपूर्व मलहम

(सुपुत्र अब्दुर्रब साहब बन्दिया द्वारा प्रदत्त)

यह योग मेरा शतशोनुभूत है और कभी भी निष्फल नहीं हुआ। थोड़े दिनों में रोग को जड़ से मिटा देता है। एक बार बनाकर परीक्षा अवश्य करें।

योग--तूतिया भुना हुआ ६ मा०, शंख छोटा (जो प्रायः कंकरीली भूमि में पाया जाता है) १ तो०, हरा कपड़ा १ तो०। पहिले हरे कपड़े को जलाकर भस्म बनालें और शेष दोनों वस्तुओं को बारीक पीस कर यथावश्यक तिल के तेल में सबको मिलाकर मलहम बनालें।

सेवन विधि--पहिले घावों को धोकर उन पर पिसी हुई काली मिर्च छिड़क लें, और ऊपर से यह मलहम लगाएं। थोड़े दिनों में निश्चय ही आराम हो जायगा।

(१६५) चम्बल की अनुपम औषधि

(ह० मोहम्मद अब्दुल क़यूम साहब द्वारा प्रदत्त)

योग—चारों हल्दी, लोटा सज्जी, मैनसिल, गन्धक, प्रत्येक १-१ आने की लेकर सबको कूटकर बछिया के टिण्ड भर मूत्र में भिगोकर पाव भर तेल भी साथ ही डाल दें। प्रातः बेर की लकड़ी जलाकर पेशाब सुखादें और तेल को छानकर बोतल में भर लें। थोड़ा तेल लगाकर १-२ घन्टे मलें और फिर जितना अधिक नहा सकें, नहाएं। असाध्य चंबल को भी पांच दिन में ही आराम हो जाता है।

नोट—यथार्थ में यह योग एक वृद्धा स्त्री का बतलाया हुआ है, अतः उसी प्रकार लिख दिया है।

(१६६) मेरे एक त्यागी मित्र सन्यासी का हृदयांगत विस्मयकारी योग

यप योग परम त्यागी मेरे कृपालु मित्र स्वामी सरस्वतीनन्द जी की कृपा का फल है। यद्यपि इस योग को उन्होंने पुस्तक में प्रकाशनार्थ नहीं दिया था, किन्तु ऐसे आश्चर्यजनक योग से पाठकों को मैं वंचित भी नहीं रखना चाहता अस्तु सेवार्पित है। स्वामी जी ने कहा था कि यह

योग संसार को विस्मय में डाल देता है। क्योंकि यह तत्क्षण ही ऐसा अद्भुत चमत्कार दिखाता है, जिससे मनुष्य दंग रह जाता है। इसके लेप करने से कुष्ठ, श्वित्र-कुष्ठ आदि त्वचा रोग भी दूर हो जाते हैं। कुछेक अन्यान्य गुण ऐसे हैं जिनका उल्लेख नहीं किया जा सकता। स्वामी जी ने बताया कि यह योग एक प्राचीन काल के हस्त लिखित जैन ग्रन्थ से प्राप्त हुआ था। संभवतः स्वामी जी इसके प्रकाशन से रुष्ट हो जायँ, किन्तु पाठकों के प्रेम वश मैं तो लिखे ही देता हूं।

योग—शुद्ध पारा ५ तो० खरल में डाल कर मूली का रस मिला कर खरल करते रहें। लगातार २ दिन खरल करने से पारा मूर्छित हो जायगा। अब इसमें आधा सेर (एक रतल) मूली का रस मिला कर पाव भर हल्दी की गांठें डालें। जब वह सारा मूली रस पीले तो पुनः आधा सेर मूली रस डाल दें। जब वह भी शोषण हो जाये तो फिर तीसरी बार उतना ही डालें। अब इसका रंग काला पड़ जायेगा।

सेवन विधि—यूं तो यह अनन्तगुण सम्पन्न है, किंतु यहां केवल त्वचा सम्बन्धी गुण ही लिखे जायेंगे। उपरोक्त हल्दी की गांठें यथावश्यक लेकर समभाग आम का गोंद

और मैनसिल मिला कर वरीक पीस लें और आवश्यकता के समय निम्बू के रस में मिला कर रोग स्थान पर लेप कर दें। समस्त त्वचा रोगों को नष्ट कर देगा। चाहे त्वचा गल सड़ गई हो, कुष्ट, दद्रु, चम्बल आदि सभी रोगों को जड़ से मिटा देता है।

विशेष सूचना--निम्बू रस के वजाय पानी में घोल कर लेप करने से उस स्थान के बाल उड़ जाते हैं और ऊपर से कुतिया का दूध लगा देने से तो आजन्म बाल नहीं उगते। न कोई कष्ट होता है, न स्थान काला पड़ता है। अत्युत्तम वस्तु है।

(१६८) द्रदु-कराडु नाशक मलहम

(श्री अहमद शाह सन्यासी द्वारा प्रेषित)

योग--बावची, गन्धक आँवलासार १-१ तोला, मुर्दासङ्ग व कसीला ६-६ मा०, तूतिया १॥ तो०, पारा ३ मा०, मक्खन २० तो०।

निर्माण विधि--पारा और मक्खन के अतिरिक्त शेष द्रव्यों को बारीक पीस लें। फिर २१ वार मक्खन को पानी में धोकर उसमें मिलावें और मलहम बनालें। तत्पश्चात् पारा हथेली पर रखकर उस पर थूक डाल कर अंगुली से रगड़ें, जब पारे का रंग काला हो जाय, तो मलहम में मिलादें, और उपयोग में लायें।

(१६६) कराडु नाशक सुनहरी अर्क

(ह० मुहम्मदअली साहब, अमृतसर द्वारा प्रदत्त)

योग—गंधक आमलासार, चूना कलई प्रत्येक २॥ तो०, पानी ५२ औंस (१ सेर १० छटाँक)। चूना व गंधक को अलग २ बारीक पीस कर मिट्टी के पात्र में डालें और पानी मिला कर अच्छी तरह मिलादें। मिल जाने पर आग पर चढ़ावें, जब पकते २ आधा या आधे से कुछ कम पानी जल जाय तो उतारलें। नारंगी रंग का पानी होगा। उसे सावधानी से निथार कर शीशी में भरलें। नीचे की गाद फेंकदें। इस अर्क को रोगी के शरीर पर मालिश करके घण्टे भर बाद कार्बोलिक साबुन से नहला दें। चार-पाँच दिन के प्रयोग से ही कण्डु का नामोनिशाँ मिट जायेगा।

(१७०) मलहम एजाज़ का योग

यह मलहम हर प्रकार के घावों तथा कण्डु के लिए भी अतीव लाभदायक है। यह योग श्रीयुत ला० मनोहर लाल जैन ने विजय नगर से भेजा है। वे इसे बिना मूल्य बाँटा करते हैं। ऐसे विकृत घाव, जिनके लिए डाक्टरों के पास ऑपरेशन के सिवा और चारा ही नहीं, भी इस मल-हम से ठीक हो जाते हैं। यह एक अनमोल योग है।

योग--फिटकरी ३ मा०, कत्था सफेद १ तो०, राल सफेद १ तो०, तूतिया देशी ३ मा०। सबको अति सूक्ष्म पीस कर रखें और तिलों का तेल १ तो०, पानी १ तोला किसी काँसी पात्र में मिला कर घी की भाँति बनालें और तब पिसी हुई दवाइयां खूब मिलालें। इसी मलहम को घावों पर लगा कर चमत्कार देखें।

(१७१) सुप्रसिद्ध डी०डी०डी० का योग

डी० डी० डी० आजकल विश्व विख्यात है। यह समस्त चर्म रोगों की एकमात्र दवा है। लीजिए हम आप को उसका योग भी बताये देते हैं।

योग—सेली सिलिक एसिड (Salicylic Acid) $\frac{3}{4}$ भाग,

फिनोल	(Phenol)	$1\frac{9}{50}$	,,
तेल विन्टर ग्रीन	(Vinter Green oil)	1	,,
ग्लिसरीन	(Glycerine)	$9\frac{7}{52}$	,,
एल्कोहोल	(Alcohol)	$65\frac{1}{10}$	,,

पानी इतना, जिससे १०० भाग पूरे हो जावें।

सेवन विधि--रुई के फाए को दवा से तर करके रोग स्थान पर रखदें ताकि दवा स्वयं ही उनमें प्रविष्ट हो जाए।

सूचना—इन सबको मिला कर कुल ।) लागत पड़ती है ।

(१७२) लाल मलहम

(हर प्रकार के घाव, फोड़े, फुन्सी की अपूर्व मलहम)

एक सज्जन ने यह योग 'सन्यासी' पत्र में १६१४ में प्रकाशित करवाया था, जो बड़ा ही लाभकारी सिद्ध हुआ । वे महाशय इसे ।।) डिबिया के भाव बेचते थे ।

योग— सत बहरोजा ५ तो०, सिन्दूर १ तो०, मुर्दासंग १ तो०, मिट्टी का तेल १ तो० । पहिले सतबहरोजा को खरल में बारीक करके पानी डाल कर घोटें । जब पानी मैला होजाय तो उसे फेंक कर दूसरा पानी डालें । इसी प्रकार ५-७ बार पानी बदल कर धोने से बहरोजा स्वच्छ हो जायेगा । अब इसमें मिट्टी का तेल मिला दें, पतला सा हो जायगा । फिर सिन्दूर और मुर्दासंग पीस कर मिलाएं, और भली भांति हिलाएँ । बस लाल मलहम तैयार हो जायगी । यह पड़ी २ सूख जाती है, अतः अंगारों पर गर्म करके पिघला लिया करें । यदि फिर भी न पिघले तो थोड़ा मिट्टी का तेल और डालदें ।

सेवन विधि—एक फाहा पर यह मरहम लगा कर

घाव पर रख दें। बस एक ही फाया पर्याप्त है। जब तक घाव नितान्त अच्छा न हो जाएगा, फाहा न छूटेगा और ठीक होने पर स्वतः ही छूट जाएगा। यदि घावों में से पीप आती हो तो इसे उतार कर बदला जा सकता है। फोड़े पर इस मलहम को लगाने से या तो उसे फोड़ देता है या विठा देता है।

(१७३) कृष्ण मलहम

इसका योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग में लिखा गया है, जो कि हमारा सैकड़ों वार का अनुभूत है। उसका फाहा भी घाव अच्छा होने पर ही छूटता है।

(१७४) वैद्यक मलहम

(श्री जगदीश्वर शरण वर्मा द्वारा प्रेषित)

वर्मा जी लिखते हैं, कि यह योग हमारे यहाँ चार पीढ़ियों से चला आता है, और जम्बुक के बराबर की चीज है।

योग—मोम, राल, मुर्दासंग १-१ तो०, तूतिया १ मा०, चमेली का तेल व सफेद तिली का तेल ५-५ तोला।

निर्माण विधि—सूखी वस्तुओं को सूक्ष्म पीसलें

और मोम को गर्म करके मिलायें। तत्पश्चात् दोनों तेलों को थाली में डाल कर सबको मिला कर १०० बार पानी से धोये। बस वैद्यक मलहम बन गई। यदि फोड़े को फोड़ना चाहें, तो फाए पर गाढ़ा लेप लगादें, और यदि घाव को भरना हो, तो बहुत पतला लेप करें।

त्वचा रोगों की अक्सीर

पारा, गन्धक आमलासार, गन्धक डंडा, मैन्सिल, सिंगरफ, रस कपूर, दारचिकना, हरताल, नौशादर, सुहागा, तूतिया, कमीला बावची, मिर्च १-१ तो०।

पहिले पारे और गन्धक की कजली तैयार करें, फिर सारी औषधियों को अति सूक्ष्म पीस कर मिलालें। औषधि बन गई। इसमें से थोड़ी दवा लेकर उसी के समभाग ऋतु अनुसार १०१ बार या कम का धुला मक्खन मिला कर मलहम बनालें। दाद, फोड़ा फुन्सी व कण्डु हो, तो शरीर पर मालिश करके धूप में बिठा कर घन्टे पश्चात् भैंस के गोबर से बदन मल कर गर्म पानी से स्नान करायें। जो गोबर न लगाना चाहें, वे मर्करी सोप प्रयोग कर सकते हैं।

चमत्कारी सन्यासी औषधि

इससे विकृत से विकृत फोड़ा भी एक पल में ठीक हो जाता है। यह सन्यासियों का एक विशेष रहस्य है।

जो मुझे अफीम छुड़ाने वाली गोलियों के बदले में प्राप्त हुआ था। ऐसे अद्भुत और चमत्कारी योग प्रकट कर देना हर व्यक्ति का काम नहीं।

योग—पीली कौड़ी १ तोला सांप के मुँह में डाल कर मुँह को बांधदें; और एक हांडी में बन्द करके कपरोटी करें और ६ मास तक कूड़े में दबा रहने दें। ६ मास पश्चात् कौड़ियाँ निकाल कर पीसलें और उनके बराबर सफेद संखिया का विधिवत् उड़ाया हुआ सत्व मिलाकर पुनः खरल करें और शीशी में सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—सिर और गुदा को छोड़ कर शरीर के अन्य किसी अंग पर चाकू से तनिक सा नश्तर लगा कर उस पर एक चावल भर दवा मलदें और ऊपर से पान का पत्ता रख कर पट्टी बांध दें। तनिक देर पश्चात् टीसें उठ कर फोड़े में चली जायेंगी और थोड़ी देर टीसों का क्रम जारी रह कर उसी दिन आराम हो जाएगा।

विशेष सूचना—चूंकि इसमें सर्प और संखिया दो तीक्ष्ण विष मिले हैं अतः औषधि उपयोग के दिन रोगी को दूध तथा घी खूब पिलावें। इससे चिरकाल के फोड़े भी नष्ट हो जाते हैं।

(१७७) हर प्रकार की सूजन व फोड़ा फन्सी नाशक महान दर्प्य योग (मुहलिले आजम)

जो कि अंजमन खादिमुल हिक़मत, शाहदरा वालों का दर्प्य योग है। हर प्रकार की सूजन दूर करने में अद्वितीय है। इसकी समता का योग आयुर्वेदिक, यूनानी व एलोपैथिक चिकित्साओं में भी अन्य नहीं। हर प्रकार के फोड़े, सरतान, कण्ठमाला, रसौली आदि इसके लेप से या तो फूट जाते हैं, या दब जाते हैं। स्वित्रकुष्ठ के दाग मिटाने में लाजवाब औषधि है। सिर में गंज हो, भूसी हो, गन्दा मादा निकल कर जम गया हो, इसके कुछ लेपों से त्वचा निर्मल हो जाती है। यहां तक कि उखड़े हुए बाल पुनः उग आते हैं। बवासीर के मस्सों पर कुछ दिन लगाने से मस्सों का जोर टूट जाता है। और यदि मस्सों को इसकी धूनी दी जाय तो स्वतः ही मुरझा जाते हैं। निमोनिया, खांसी, दमा आदि के लिए तिल या जैतून के तेल में मिला कर मालिश करने से जमा हुआ बलगम निकल जाता है और रोगी को आराम हो जाता।

योग—कीकर की जड़ ५ तो०, उशक ३ तो०, एलुवा २ तो०, जराबन्द मदहरज २ तोला, मूली के बीज

२ तो०, राई २ तो०, गुग्गुल शुद्ध २ तो०, सिरका अंगूरी आवश्यकतानुसार।

निर्माण विधि—पहिले औषधियों को पत्थर के बड़े कूजे में खरल करके बारीक करलें। फिर थोड़ा २ सिरका डाल कर घोटें यहां तक कि गोलियां बनाने योग्य हो जाय। आवश्यकता हो तो घी थोड़ा २ मिला कर खरल करें। निरन्तर २४ घन्टे खरल करके सिरके की आर्द्रता को दूर करलें। बस दवा बन गई।

सेवन विधि—जहां मालिश करनी हो, तिल या जैतून का तेल मिला कर मालिश कराएँ। लेपन करने के लिए सिरका या पानी में मिला कर लेप कराएँ। धूनी के लिए दहकते हुए कोयलों पर डाल कर धूनी दिया करें।

विशेष सूचना—इस औषधि की गोलियां बना कर ४ रत्ती से ६ रत्ती तक की मात्रा उचित अनुपान, शर्वत या अर्क मकोय के साथ सेवन कराएँ। इससे आन्तरिक शोथ, यकृत शोथ, निमोनिया, प्लीहा आदि के लिए अतीव गुणकारी सिद्ध होती है।

(१७८) लाहौर सोर अकसीर

लाहौर सोर एक बड़ा ही दुस्साध्य फोड़ा होता है। ऐसे योग कम ही मिलते हैं, जिन से यह फोड़ा जड़ से

मिट जाय। इसका एक लेप तो प्रथम भाग में लिखा जा चुका है, किन्तु उससे एक दो दिन ज्वर अवश्य आता है। जिसका कोई भय नहीं होता। शेष दो योग यहाँ अङ्कित किए जाते हैं।

योग प्रथम--जयपाल गिरी ६ माशा, संखिया सफेद ३ रत्ती। दोनों को जल के साथ पीस कर लेई सी बनालें और कपड़े के फाए पर लगा कर फोड़े पर चिपटा दें। थोड़ी देर बाद पानी सा निकलने लगेगा। उसे साफ़ करते रहें, ३ दिन पश्चात् फाया उतार दें। फोड़ा घाव के रूप में आ जाएगा। जिसमें सफेद २ जड़ें दिखाई देंगी। इध घाव को नीम के पानी से धोकर खूब साफ़ करें और पुनः दवा लगादें। बहुत सारी जड़ें निकल जायेंगी। इसी प्रकार तीसरी बार पुनः फाया लगादें। तमाम जड़ें निकल कर लाल घाव बन जायगा। इस घाव को भरने के लिए कोई मलहम लगावें या सिन्दूर घृत में मिला कर लगाया करें। ३-४ दिन में ही नितान्त मिट जायगा।

(प्रेषक--चन्दूलाल जैन)

(१७६) निरापद मलहम

यह योग मेरा अपना ही है, जो कि परीक्षा करके लाभदायक पाया गया है, यह निरापद है।

योग--जयपाल ६ माशा बारीक पीस कर उसमें २ मा० कार्बोलिक एसिड मिलादें और एक औंस वैसलीन मिलादें। बस मलहम बन गई। प्रातः सायं फोड़े पर लगाया करें, कुछ दिनों में ही पीप पड़ कर फिर ठीक हो जायगा।

(१८०) सुप्रसिद्ध जम्बुक का योग

लन्दन से आने वाली यह प्रसिद्ध दवा भारत में लाखों रुपये की बिक रही है। सभी पत्रों में इसके विज्ञापन रहते हैं। लागत चार पैसे से अधिक नहीं पड़ती। निस्सन्देह ही चीज बड़े काम की है, अतः उसका योग भी हम आपको बताए देते हैं--

योग--युक्लीप्टस आयल लगभग १४ प्रतिशत, पीली राल लगभग २० प्रतिशत, साफ्ट पैराफीन लगभग ५५%, हार्ड पैराफीन लगभग ११%, हरा रंग नाम भर को। यथा विधि मलहम बनालें।

सेवन विधि--चोट, घाव, मोच, छाती की पीड़ा, छाले, कण्डू और अर्श के लिए पहिले साफ पानी से उस स्थान को धोकर जम्बुक यूँ ही अथवा कपड़े पर लगा कर चिपका दें। आग या खौलते हुए पानी से जले हुए स्थान

पर नरमी से जम्बुक मलकर ढकदें। आराम हो जायगा।

रक्त-शोधक उत्तम औषधियां

दाद, चंबल, कराडु व फोड़ा फुन्सी की वाह्य चिकित्सा के योग तो पर्याप्त लिखे जा चुके हैं किन्तु कभी २ ऊपर लगाने की दवा से रोग निर्मूल नहीं होता, अपितु रक्त-दूषित हो जाने के कारण हटकर दूसरे २ स्थानों पर प्रकट हो जाता है। अतः नीचे कुछ रक्त शोधक औषधियों के उत्तम योग लिखता हूं, जिनके सेवन करने से रक्त दोष भी मिट कर रोग नितान्त निर्मूल हो जाता है।

प्रथम भाग में भी रक्त-शोधक औषधियों के प्रशंसनीय योग प्रकट किए गए थे। एक बार उन्हें भी अवश्य देखने का कष्ट करें। फिर इनसे लाभ उठावें।

(१८१) कुन्दन वटी

प्रायः लोग रक्त शोधक कड़वी और विषाक्त औषधियां सेवन करने से घबराते हैं, अतः हम एक ऐसा योग लिखते हैं जो डाक्टरी विधि से बूटियों का एक्स्ट्रैक्ट निकालकर गोली के रूप में तैयार होता है। खून साफ़ करने में यह उत्तमोत्तम योगों से बढ़कर सिद्ध होती हैं।

योग—एक्स्ट्रैक्ट नीम, एक्स्ट्रैक्ट चिरायता, सत्व त्रिफला, विशुद्ध रसौत, रेवन्द खताई, पांचों द्रव्य बराबर २

लेकर खरलकर के चने के बराबर गोलियां बनालें। और १ से २ रत्ती तक प्रातः सायं पानी के साथ दें। दाद खाज, फोड़ा, फुन्सी आदि की अक्सीर गोलियां हैं।

पथ्य—बेसनी रोटी और घी के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ वर्जित हैं।

(१८२) एक्ट्रेक्ट नीम की निर्माण विधि—

पाव भर नीम की छाल जौ कुट करके २ सेर जल में उबालें। आधा पानी जल जाने के उपरान्त उतारकर मल छान लें और पानी को स्वच्छ कड़ाही में मन्द २ आंच पर पकावें। गाढ़ा हो जाने पर गोलियां बनाने योग्य हो जाय। बस यही एक्स्ट्रेक्ट नीम है। इसी प्रकार चिरा-यता और त्रिफला का एक्स्ट्रेक्ट तैयार करलें।

(१८३) क्लार्क साहब की रक्त-शोधक औषधि

लन्दन की एक कम्पनी चिरकाल से २॥) प्रति शीशी के भाव से इस दवा को विज्ञापन द्वारा बेच रही है। शीशी के साथ जो पर्चा होता है, उस पर लिखा होता है कि क्लार्क सा० की यह दवा सब रोगों पर लाभदायक नहीं, किन्तु रक्त विकार से उत्पन्न रोगों के लिए निश्चय ही अक्सीर है कण्ठमाला की ग्रंथियां, उपदंश, अर्श, नेत्र पीड़ा, कण्डु आदि चर्म रोगों को जड़ से मिटा देती है।

अन्य औषधियों की भांति विषाक्त औषधियां इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

योग--पोटाशी आयोडायड ५२॥ ग्रेन, स्प्रिट एमोनिया एरोमेट १० बूंद, स्प्रिट क्लोरोफार्म ६ बूंद, सादा शर्बत ५० बूंद, जलाई हुई खांड़ रंग देने भर को। सबको मिलाकर शीशी में भर लें।

सेवन विधि--दोनों समय भोजन करने के आधा २ घन्टे बाद थोड़े से पानी में चीनी मिलाकर युवक पुरुष १ चम्मच दिन में चार बार, स्त्रियां तीन बार सेवन करें। बारह वर्ष से ऊपर आयु के लड़के लड़कियां दो छोटे चम्मच तीन बार। इनसे छोटे बालक से १ चम्मच छोटा अवस्थानुसार सेवन करें। एक शीशी की लागत लगभग ५ पैसे पड़ती है।

अरे वाह री भारत की उल्टी खोपड़ी!

आज के भारत की नासमझी और अज्ञानता को कहां तक रोएं, जहां प्राचीन आर्यावर्त की आतिथ्य प्रणाली का डंका बजाकर उपदंश और मूत्रकृच्छ्र, विशूचिका और प्लेग जैसे घातक रोगों को तो शरण दी गई है, और लाभकारी बातों को कान में भी नहीं घुसने दिया जाता। एक और उदाहरण सुनिए--

सम्भव है चाय किसी रोग को दूर करने के लिए कभी औषधिवत् उपयोग में लाई जाती हो, किन्तु इस

समय भारत के बच्चे २ और हर जवान तथा बूढ़े को चाय का रोग लग गया है। प्रातः, मध्याह्न, सायं, रात्रि कोई समय निश्चित नहीं, किसी ऋतु का विचार नहीं। जिस समय तनिक आलस्य प्रतीत हुआ, बस चाय के प्याले आंखों में नाचते हुए होठों से आ लगे। और फिर कमाल यह देखिए कि सम्भवतः लोग गर्मियों में चाहे इस बला से बचे भी रहते, किन्तु विक्रेताओं के एजेन्ट रूप वैद्यों के स्थान २ पर लगाए हुए पोस्टरों--'गर्मियों में गरम चाय ठंडक पहुंचाती है' ने सबको प्रभावित करके इस उबलती वस्तु को शर्बत सन्दल में बदल दिया। और अब तो यह दशा है कि जाड़ों में जुकाम व सर्दी से बचने तथा गर्मियों में प्यास और हृदय की उष्णता मिटाने के लिए चाय से बढ़कर कोई वस्तु ही नहीं। अब चाहे इसे चाय का चमत्कार कहिए या अभागे भारतवासियों की उल्टी खोपड़ी का चमत्कार। बहर हाल अब चाय भी एक रोग हो गई है। चाहे इसका रोगी उन्माद रोगी की भांति अपने को रोगी न समझे। परमात्मा करे हमारे नासमझ भाइयों को समझ प्राप्त हो, और वे अपने अनमोल स्वास्थ्य व पसीने की कमाई इस पर न लुटा कर अपना पारिवारिक जीवन सुखद बनाएं। अगर मेरे कहने से आप में से पांच भाई भी इस महारोग से अपने आपको बचालें तो

मेरा परिश्रम सफल हो जाय।

हम आपको चाय सेवन से वंचित नहीं करते, अपितु इसे ढङ्ग से सेवन करिए, कि स्वास्थ्य को भी लाभ हो। लीजिए हम आपको चाय का एक हानि रहित योग बताते हैं।

(१८४) हानि रहित सुगंधित चाय

(मुल्ला अब्दुल क़ादिर साहब, सीधपुर द्वारा प्रेषित)

योग—पोदीना सूखा २० तो०, मजीठ ५ तो०, काली मिर्च १ तो०। तीनों चीजों को कूटकर डिब्बे में भरलें और ६ मा० मात्रा पानी में डालकर पकावें। जब रंगत मनचाही चाय की भांति लाल हो जाए, तो दूध चीनी मिलाकर छानकर दिन में दो बार पिएं, अत्यन्त स्वादिष्ट व सुगन्धित चाय है और रक्त शोधक भी।

(१८५) चाय का प्रतिनिधि

गोरखपान बूटी को यदि चाय की भांति ही सेवन करें, तो रंगत स्वाद और गुणों में चाय से बढ़कर तथा यकृत रोगों में हितकर भी है। एक स्वदेशी कॉफी का वर्णन 'सत्य व्यापार लक्ष्मी भंडार' नामक पुस्तकों में अङ्कित है, जो कि बड़ा ही लाभप्रद है।

सौन्दर्य नाशक महारोग

स्वित्रकुष्ट (फुलबहरी)

इस रोग के सफेद दाग़ मनुष्य के शारीरिक सौन्दर्य को बिल्कुल नष्ट कर देते हैं। इस रोग को वैद्यक में स्वित्रकुष्ट, यूनानी में वर्स और डाक्टरी में लीकोड्मा कहते हैं।

मूलकारण—प्रायः यह रोग पैतृक हुआ करता है। कभी-कभी मछली अधिक खाने अथवा दूध के साथ खटाई सेवन कर लेने से भी यह रोग हो जाता है। दूध, मछली का एक साथ सेवन भी कारण होता है।

पहिचान—सारे शरीर में यत्र-तत्र सफेद दाग़ पड़ जाते हैं। पहिले छोटे फिर बड़े होते २ कभी २ सारे शरीर में फैल जाते हैं।

साध्य-असाध्य की पहिचान

दाग़ की जगह सुई चुभो कर देखें। अगर त्वचा में से खून निकले, तो रोग साध्य जानिये। अगर पानी जैसा द्रव्य निकले, तो रोग को असाध्य समझ लेना चाहिये।

(१८६) स्वित्र नाशक रेचन

कुष्ट या स्वित्रकुष्ट की चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व यह रेचन देना अत्युत्तम व लाभकर होता है। कई

बार तो इस रेचन से ही आधा लाभ हो जाता है। योग प्रेषक द्वारा वर्णित एक घटना भी आपको सुनाता हूँ---

'अमराहे का एक स्वित्रकुष्ट रोगी मेरे पास चिकित्सार्थ आया। चूँकि मुझे मूलयोग दाता ने बताया था कि २-२ दिन के अन्तर से तीन बार इस जुलाब को देने से बिना किसी औषधि के ही रोग नष्ट प्रायः हो जाता है। अस्तु मैंने ईश्वर का नाम लेकर उसे यही रेचन दे दिया। यह रेचन बड़ा सख्त है, जिससे अत्यधिक वमन व दस्त होते हैं, अतः रोगी एक जुलाब लेकर ही भाग गया। किंतु घर जाकर उसने देखा कि एक बार में ही अनेक दाग मिट गए और शेष की रंगत बदल गई।

योग---शुद्ध जयपाल, तूतिया और कुटकी बराबर बराबर लेकर बारीक पीसकर शीशी में रखलें। और आवश्यकता के समय १ मा० दवा आम के अचार में रख कर खिलादें। वमन और दस्त अधिक आ जायेंगे। रोगी के निढाल होने पर दस्त रोकने के लिये सूखे चावल दूध के साथ खिलावें। दस्त बन्द हो जायेंगे। (ह० मुहम्मद-याकूब साहब)

विशेष सूचना---यह रेचन तनिक सख्त है अतः कोमल प्रकृति मनुष्य को बिना किसी योग्य चिकित्सक

की सम्मति के न दें। हां किसी ग्रामीण हट्टे कट्टे मनुष्य को दे देने में कोई हानि नहीं।

(१८७) पुराने उपदंश स्वित्रकुष्ट के लिये अत्युत्तम अर्क

(ह० बशीर अहमद कुरेशी, स्यालकोट द्वारा प्रेषित और तिब्बिया कालेज दिल्ली द्वारा प्रमाणित)

योग—आंसपत्र २० तो०, उशवा विलायती १६ तो०, त्रिफला २४ तो०। निम्ब पत्र, जलनीम, श्वेतचंदन का चूर्ण, रक्त चन्दन चूर्ण, धनिया, चोबचीनी, सरपोंखा, चिरायता, श्वेत जीरा, मुण्डी बूटी, बनफशा, नीलोफर, गावजबाँ उन्नाव बेर, पित्तपापड़ा, मजीठ, करंजवा की गिरी हल्दी, दारू हल्दी, प्रत्येक ८ तो०।

निर्माण विधि—सब दवाओं को जौ कुट करके २ दिन व रात पानी में भिगोए रखें, फिर भबके द्वारा अर्क खींचलें। पहिले सप्ताह में ३-३ तो०, प्रातः व सायं, दूसरे सप्ताह ४-४ तो० प्रातः सायं और तीसरे सप्ताह ५-५ तो० प्रातः सायं पिलायें।

अपथ्य—नमक, मिर्च और पौष्टिक वस्तुएं न खायें। ईश्वर कृपा से निश्चय ही लाभ हो जायेगा।

(१८८) वर्मन एण्ड कम्पनी का सुविख्यात तैल

कुष्ट नाशक हड़ताल तैल

(सरदार लच्छमण चन्द जी S L C.

वर्मन एण्ड को, मेरठ द्वारा)

आपका कथन है कि दिल तो अपना यह हृदयंगत योग प्रकट कर देने को नहीं चाहता था, किन्तु आपका त्याग देख कर मैं भी यह हृदय का टुकड़ा भेज रहा हूँ। यह औषधि असंख्य रोगियों पर परीक्षित और सफल है।

योग--रोहू मछली जो तोल में ८ पौ० से कम न हो, उसका पेट चीर कर साफ करें और ५ तोला हड़ताल पीस कर भर दें। मछली को एक ऐसे डिब्बे में रखें, जिसमें ऊपर जाली हो, और नीचे से बन्द हो। अब इसे खुले मैदान में रखदें। जब इसमें कीड़े पड़ जावें, तो इन्हें चुन कर एक पक्की शीशी में भरलें और शीशी को पके हुए चावलों के मध्य दबादें। चावल खूब गरम २ और शीशी ढकने के लिए पर्याप्त हों। थोड़ी देर में निकालें, शीशी में तेल प्राप्त होगा। इस तेल को फुरेरी से दागों पर दो बार लगाने से ही स्वित्रकुष्ट के दाग मिट जायेंगे और त्वचा का असली रंग आ जाएगा।

सूचना--यही वह हरताल का तेल है, जिसे कीमि-

थागर ढूँढते फिरते रहते हैं। इससे कई अक्सीरी काम निकलते हैं।

(१८९) साधुसन्यासियों का रहस्यमय योग

स्वित्र की एक दिन में चिकित्सा

यद्यपि स्वित्र जैसा दुस्साध्य रोग चिरकाल तक रेचन व औषधि सेवन से भी कभी-कभी निर्मूल नहीं होता इसीलिए हमारे यहां इसे कच्चा कोढ़ कहते हैं। किन्तु भगवान ने कई वस्तुएँ ऐसी भी बनाई हैं, जिनके अद्भुत चमत्कारी गुण चकित कर देते हैं। एक कवि ने ठीक कहा है—

दवा दर्द बोल उठे कि तासीर उसको कहते हैं,
'बदन कुन्दन बना देती है अक्सीर उसको कहते हैं।'

योग—एक नितान्त काला सर्प, जो नीचे भी काला हो, पकड़ कर सिर व दुम की ओर से काट कर उसका रक्त किसी चीनी की प्याली में इकट्ठा करें और रुई की फुरेरी से दागों पर लगायें। दाग तत्काल रक्त को पी जायेंगे। जब तक वे रक्त चूसते रहें, बार २ लगाते रहें। जब चूसना बन्द करदें, तो रक्त लगाना भी बन्द करदें। नितान्त लाभ प्राप्त होगा।

(१६०) नासूर के लिये अक्सीरी तेल

जो घाव पुराना होकर नासूर बन जाय, और किसी भी प्रकार ठीक न होता हो, उनके लिए यह तेल रसायन है। इससे निश्चय ही लाभ हो जाता है। एक रोगिणी के घाव से अत्यधिक पीप निकला करती थी। घाव इतना बड़ा और गहरा कि देख कर जी बिगड़ जाता था। वह घाव भी इस तेल के लगाने से कुछ दिनों में ही ठीक हो गया।

योग—कपूर ५ तो० बारीक पीस कर शीशी में डालें और उसमें एक तोला कार्बोलिक एसिड मिला कर रख दें। थोड़ी देर में स्वयं ही तेल का रूप धारण कर लेंगे। सुदृढ़ कार्क लगा कर शीशी को सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—पिचकारी से दवा को नासूर के भीतर पहुंचावें या बत्ती भिगो कर घाव में भर दिया करें। गिनती के दिनों में ही घाव ठीक हो जायेगा।

(१६१) नासूर का अक्सीर मलहम

सफेदा १ तो०, सिन्दूर १ तो०, राल २ तो०, मुर्दासंग ६ माशा, कत्था १ तो०, मोम २ तो०, सरसों का तेल ५ तो०, बहरोजा ६ मा०। प्रत्येक को पृथक् २ पीस कर रखें, फिर मिट्टी के कूंडे में तेल डाल कर उसमें राल

मिला कर भली भांति घोंटें। स २ पानी डालते जांय, लगभग १ छ० पानी सूख जायगा। फिर शेष दवाएँ एक-एक करके डालते जांय। तत्पश्चात् ४० दिन तक इस मलहम को लोहे की डिबिया में पड़ा रहने दें। काली सी हो जायगी। फिर उसे फाये पर लगा कर घाव पर चिपका दें।

इसी मलहम की दूसरी निर्माण विधि यह है कि पहिले मोम, तेल, रतनजोत तीनों को आग पर हल करके फिर विधिवत् मलहम बनालें।

(१९२) पुराने घाव या नासूर की खाद्य औषधि

घावनाशक वटी नं० १

(प्रेषक--पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा अध्यक्ष अमृतधारा औषधालय)

पंडित जी का कथन है कि इन गोलियों के खिलाने से नासूर का घाव स्वतः ही भर कर आराम हो जाता है।

योग--संखिया सफेद, चोक, चोबचीनी, कुचला, काली मिर्च, पीपल बराबर २ लेकर खरल में बारीक रगड़ लें, फिर अदरक का रस मिला कर खरल करें। जितना अधिक खरल किया जायेगा उतनी ही उत्तम औषधि बनेगी। यदि ४० दिन खरल किया जाय तो फिर कहना ही क्या है? अन्यथा २१ दिन अवश्य खरल करें। फिर मोठ के दाने के बराबर गोलियां बनालें और १ गोली

भोजनोपरांत जल से खिलाया करें। हर प्रकार के नासूर और पुराने घाव को ठीक कर देती है।

(१६३) वटी नं० २

ये गोलियां भगन्दर, नासूर, कण्ठमाला, रसौली व उपदंश आदि के लिए परम लाभदायक हैं। जो घाव किसी उत्तमोत्तम मलहम या वाह्य चिकित्सा से अच्छा न हुआ हो, वह इन गोलियों के २१ दिन के सेवन से अच्छा हो जाता है।

योग—रस कपूर १ तो०, चारों अजवाइन १-१ तो०, ४० वर्ष पुराना गुड़ ५ तो०, लौंग १ तो०। सूखी औषधियों को पृथक् पीस कर गुड़ में मिलावें और कम से कम २१ हजार चोटें मारें फिर चने के बराबर की पानी के साथ गोलियाँ बनालें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं गौ-घृत के गर्म २ घूंट के साथ दें। खाने को पौष्टिक भोजन दें, नमक बहुत कम प्रयोग करें। अन्य सब वस्तुओं से परहेज करें।

आमवात या सन्धिवात

रोग की व्याख्या, कारण, लक्षण व उत्तमोत्तम योग इसी पुस्तक के प्रथम भाग में लिख चुके हैं और एक योग

जो प्रत्येक कफज व वातज रोग में अकसीर है, पुस्तक के अन्त में 'चिकित्सा मंजूषा' में देखिए। इस योग तथा प्रथम भाग में वर्णित ठण्डक नामक योग को बनाकर पास रखने वाला व्यक्ति जाड़े व गर्मी के प्रत्येक रोग की सफल चिकित्सा कर सकता है।

विशेष सूचना--(१) ठण्डक का प्रयोग गर्मी में और कथित योग जाड़ों में सेवन करना चाहिये।

(२) एक तेल का अनुपम योग भी पुस्तक के अन्तिम प्रकरण में प्रकाशित किया जायगा।

ज्वर

इसके सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है। तथा ज्वरों के भेद व विविध चिकित्साएँ भी वर्णित की गई थीं। अस्तु यहां प्रथम कुछ विशेष बातें जिन्हें कुशल वैद्य ही जानते हैं, लिख कर फिर योग लिखूंगा।

ज्वर-भेद और उनकी पहिचान

हकीम और नीम हकीम (वैद्य और अटकल पच्चू) में यही अन्तर है, कि वैद्य भली भांति रोग का निदान करके तब तदनुसार योग देता है, और अटकलपच्चू हकीम अन्धाधुन्ध ठूंस देता है। जिसका परिणाम बुरा रहता है।

कभी-कभी तो 'गोली भीतर और दम बाहर' वाली कहावत सत्य हो जाती है। ज्वरों के अगणित भेद हैं, अतः उनका निदान करना सरल नहीं। कभी २ तो हम वैद्य विशारद भी उनका निदान ठीक नहीं कर पाते। कई प्रकार के ज्वर तो मिलते-जुलते होते हैं, अतः बड़े विचार के साथ निदान करने पर ही यथार्थ रोग का पता चलता है।

हां फिर भी इतना अवश्य कहूंगा कि वैद्य चाहे रोग का निदान ठीक न भी कर सके, किन्तु उसके हाथों अनिष्ट की आशंका नहीं रहती। क्योंकि वैद्यक चिकित्सा में कुछ इस प्रकार के नियम हैं, जो प्रायः अधिकांश ज्वरों में लाभदायक ही सिद्ध होते हैं। अतः यहां कुछेक ऐसी हिदायतें अङ्कित की जाती हैं, जिनका जानना प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमावश्यक है।

अनमोल हिदायतें

१—रोगी को सदैव ऐसे स्थान में रखना चाहिए, जहां न अधिक गर्मी हो, न अधिक सर्दी, न हवा की तेजी पहुंचे और न ही हवा की नितान्त कमी हो। हां बुखार उतर जाने और पसीना सूख जाने के उपरान्त हवा से कोई डर नहीं। ऐसे अवसर पर यदि रोगी कोई वस्त्र आदि ओढ़े हो, तो हटा देना चाहिए।

२—हर प्रकार के ज्वर में हाथ पांव की मालिश करना

लाभप्रद और सुखकर होता है, चाहे कपड़े से ही सहलाया जाय। अनजान व्यक्तियों को मालिश की उचित विधि ज्ञात नहीं होती। मालिश सदैव ऊपर से नीचे की ओर होनी चाहिए। अर्थात् पावों में एड़ी की ओर को करें। ऊपर नीचे दोनों ओर करना उत्तम है।

३—ज्वर उतर जाने के पश्चात् यदि शरीर में हड़फूटन शेष रहे, तो पाद प्रक्षालन विधि अतीव लाभदायक होती है। पाद प्रक्षालन की विधि प्रथम भाग में लिख चुके हैं, उसमें देखलें।

४—ज्वर के लिए वोहरान के दिनों का विचार रखना आवश्यक है, क्योंकि वोहरान का विचार न रखने से कभी २ रोगी मर जाता है।

५—जिस दिन से ज्वर आए, उसी दिन से गिनना प्रारम्भ करदें, ताकि वोहरान के दिनों का ठीक २ पता चल सके।

६—यदि ज्वर १२ बजे से पूर्व आया हो, तो उसे पहिले दिनमें गिना जाएगा और यदि १२ बजे पश्चात् आया हो, तो उसे दूसरे दिन में गिना जाएगा। किन्तु वारी का ज्वर जो तीसरे दिन आये, वह उसी दिन गिन लिया जाएगा।

वोहरान का पूरा २ वर्णन लिखना आवश्यक है, अतः उसे सरल भाषा में अङ्कित किया जाता है।

वोहरान

यह शब्द यूनानी भाषा का है, जिसका अर्थ है— शत्रु का शत्रु पर आक्रमण और जालीनुस के निकट इसका अर्थ 'निर्णायक वैद्य' अर्थात् वह वैद्य जो रोग के साध्य, कष्ट साध्य या असाध्य होने का निश्चय करे। किन्तु वैद्यों की भाषा प्रकृति और रोगों को परस्पर संग्राम को कहते हैं। तदनुसार यदि रोग शक्तिशाली हुआ तो रोगी की मृत्यु हो जाती है और यदि रोगी की प्रकृति शक्तिशालिनी हुई, तो रोग मिट जाता है। प्राचीन वैद्यों के कथनानुसार वोहरान के दिनों में पसीना लाने वाली या दस्तावर औष-धियां रोगी को असक्त बना कर मृत्यु-कूप में धकेल देती हैं। किन्तु आधुनिक चिकित्सक वोहरन से अनभिज्ञ होने अथवा उसका विचार न रखने के कारण रोगी को वोहरान के दिनों में ही एस्प्रीन या एन्टीफेब्रीन जैसी हृदय को असक्त कर देने वाली औषधियां दे बैठते हैं और परिणाम यह होता है कि रोगी अकाल ही काल-कवल हो जाता है। या कोष्ठ-बद्धता समझ कर कोई जुलाब दे बैठते हैं, जिससे न रोग ही रह जाता है और न रोगी ही।

वोहरान के दिन ज्ञात करना

वोहरान के दिन ज्ञात करना केवल लक्षणों पर ही निर्भर नहीं है। यूनानी चिकित्सकों ने दीर्घानुभव के उपरान्त वोहरान आने के दिन भी लिख दिये हैं। इतने पर भी यदि हम ध्यान न दें, तो हमारी ही भूल है। ४-७-११-१४-२०-२२-२४ तेज़ वोहरान के दिन हैं। किन्तु २७-३१ दिन भी तनिक कम वोहरान के हैं। कभी २७ ३४ व ३७ को भी वोहरान हो सकता है। परन्तु चिकित्सकों को २० दिन विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इनके अतिरिक्त कुछ दिन ऐसे हैं, जिनमें कभी वोहरान होता है, और कभी नहीं भी। वे ६ दिन हैं। ३-५-६ ११-१३-१७। यद्यपि वोहरान के दिन ऊपर बताए जा चुके हैं, तथापि कई बार इनके अतिरिक्त भी हो जाता है जो बड़ा कठिन और भयंकर होता है।

वोहरान के चिन्हों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ९ दिन हैं—६-८-१०-१२-१५-१६-१८-१९। तृतीयक ज्वर में ७-११ दिन खतरनाक होते हैं।

जुलाब के लिए उपयुक्त

यदि जुलाब देने की आवश्यकता प्रतीत हो, तो इन दिनों में देना चाहिए। इनमें वोहरान नहीं होता। वे दिन १३ हैं—२२-२३-२५-२८-२९-३३-३६-३८-३९।

और यदि निम्न दिनों में वोहरान पड़े तो भी दिया जा सकता है---८-१०-१२-१६ ।

वोहरान आने की पहिचान

जिस प्रकार रोगों के लक्षण पूर्व ही प्रकट होने लगते हैं, उसी प्रकार वोहरान आने के पूर्व भी कुछ चिह्न प्रकट हो उठते हैं, जिससे कई घन्टे पूर्व ही इसका ज्ञान हो जाता है। यदि दिन को वोहरान आने को होता है, तो चिन्ह रात को ही प्रकट हो जाते हैं, और यदि रात को आने वाला होगा तो दिन को ही प्रकट हो जायेंगे।

बेचैनी, करवटें बदलना, कभी होश होना, कभी सहसा बेहोश हो जाना, घबराहट की बातें करना, कमर और सिर में दर्द होना, आंखों में अजीब २ चित्र घूमना, कानों में शोर गुल की आवाज़ें गूँजना, शरीर का टूटना, रोगी का उठ २ कर भागना आदि।

सेवा सुश्रूषा करने वालों के कर्तव्य

१--रोगी के ज्वर आने का दिन और तारीख याद रखना प्रथम कर्त्तव्य है।

२--वोहरान के दिन रोगी को यथा सम्भव आराम पहुंचाएं और कोई तीक्ष्ण औषधि कदापि न दें।

३--यदि वोहरान में वमन, रेचन, अथवा नक्सीर आने

लगे तो उसे रोकना न चाहिए क्योंकि इस प्रकार शरीर से दूपित द्रव्य निकल जाता है। हां सीमोल्लंघन कर जाने पर रोक देने में कोई हानि भी नहीं।

४—यदि बेचैनी और घबराहट हो, और रोगी को किसी प्रकार चैन न आता हो, तो चन्दन को गुलाब जल में घिस कर उसमें कपड़ा तर करके सीने पर रखें और लखलखा सुंघावें।

५—विशेष स्मरणीय बात यह है कि रोगी की चेतना स्थिर रखें और उसके हृदय को पुष्टि देने का ध्यान रखें, ताकि रोगी रोग के नीचे दब न जाय।

६—हृदय-पुष्टि कारक औषधियां दें, जिनके वर्णन सभी पुस्तकों में मिल जाते हैं।

बोहरान समाप्त हो जाने के चिन्ह

जब रोगी को पसीना छूटकर चित्त हल्का हो जावे, घबराहट और व्याकुलता दूर हो जाय, चेतनात्मक बातें करने लगे, तो बोहरान की समाप्ति समझ लेना चाहिए।

दक्ष चिकित्सों के अनुभव

१—यदि अपस्मार, आमवात, छोटे जोड़ों का दर्द, कंडु, चम्बल के रोगी को चौथिया ज्वर आने लगे, तो उपरोक्त रोगों से मुक्त हो जाता है।

२—कफ जनित ज्वर की अवधि कम से कम १ वर्ष और अधिक से अधिक १२ वर्ष होती है।

३—चौथिया ज्वर यदि फसल खरीफ सावनी के अन्त में आने लग जाय, तो उसकी अवधि बहुत लम्बी होती है।

४—ज्वर एक रोग ही नहीं, अपितु अनेक रोगों से मुक्त कराने का प्रभाव भी इसमें है।

विज्ञ चिकित्सकों के दीर्घ कालीन अनुभव जिनसे ज्वर रोगी की मृत्यु का पूर्व ही ज्ञान हो जाता।

यद्यपि किसी की मृत्यु का सही पता तो भगवान को ही होता है, तथापि विज्ञ चिकित्सकों के दीर्घानुभव से कुछ ऐसे लक्षण विदित हुए हैं, जिनके प्रकट होने पर रोगी का जीवन प्रायः संकटमय हो जाता है। ऐसे रोगी कदाचित ही होंगे, जो इन लक्षणों के पश्चात् भी बच सकें।

१—यदि तीव्र ज्वर में अतिसार या प्रवाहिका न होने के अतिरिक्त एकदम रोगी की कांच निकल पड़े, तो उसे कुछ दिन का मेहमान समझिए।

२—यदि तीव्र ज्वर में रोगी की ग्रीवा और सिर से ठंडा पसीना निकले, तो समझ लीजिए कि मृत्यु उसके निकट ही खड़ी है।

३—यदि ज्वर रोगी अत्यधिक अतिसार होकर शिथिल हो जावे, और ज्वर में कमी न हो, न ही चैन व आराम प्रतीत हो, तो उसके जीवन से निराश हो जाना चाहिए।

४—यदि तीव्र ज्वर में रोगी के मूत्र का रङ्ग नितांत श्वेत व तरल हो, फिर एकदम गाढ़ापन आजाय, किन्तु रङ्ग सफेद ही रहे, तो रोगी किसी प्रकार भी बच न सकेगा।

५—यदि ज्वर रोगी को कठिन प्रकार की वमन और मरोड़ हो जाय, और चेतना शक्ति खो बैठे, तो उसका जीवन खतरे में होता है। विशेष कर जब कि उसकी त्वचा कहीं गर्म व कहीं ठंडी हो, और रङ्ग कहीं पीला व कहीं ज़र्द हो। इसी प्रकार वमन व रेचन में भी विभिन्न रङ्ग दिखाई दें। ऐसी अवस्था में रोगी के जीवन से हाथ उठा लेना चाहिए।

६—यदि ज्वर रोगी के हृदय की धड़कन सहसा बढ़ जाय और हिचकियां तंग करने लगें तथा बिना किसी विशेष कारण के कोष्ठबद्धता बढ़ जाय, तो ये सब बातें इस बात की सूचना देती हैं, कि अब रोगी इस संसार से विदा मांग रहा है।

७—यदि तीव्र ज्वर के रोगी का बोहरान आए बिना ही

एकदम ज्वर उतर कर शरीर हिमवत् ठंडा होजाय तथा नाड़ी की गति क्षीण हो जाय, तो उसका स्वस्थ होना संशयात्मक हो जाता है।

८—यदि तीव्र ज्वर में अण्डकोष सहसा ऊपर चढ़ जाएँ तो रोगी के जीवित रहने की कोई आशा नहीं रह जाती।

९—यदि ज्वर रोगी की जीभ काली पड़ जाय, और बिना किसी कारण विशेष के टट्टी भी काले रङ्ग की आए, तो समझ लीजिए कि मौत ने पहिला तीर छोड़ दिया है।

१०—ज्वर के जिस रोगी की सूंघने की शक्ति लुप्त हो जाय, यहाँ तक कि दीपक बुझाने पर उसकी गंध भी न आए, और सुगन्धित दुर्गन्ध का ज्ञान ही न रहे, तो उसका जीवित रहना नितांत असम्भव हो जाता है।

ज्वरों के भेद और उनकी चिकित्सा

मोतीझरा का ज्वर

इसे अंग्रेजी में पैराटाइफाइड (Paratyphoid fever) फीवर कहते हैं। प्राचीन चिकित्सा ग्रन्थों में इसका वर्णन कहीं नहीं मिलता। सम्भवतः उस युग में यह ज्वर पाया ही न जाता था, परन्तु आजकल तो इतना बढ़ गया है कि लाखों प्राणी प्रति वर्ष इसकी भेंट चढ़ जाते हैं।

मूल कारण—गरम पदार्थों के अधिक सेवन से या धूप में अधिक चलने फिरने से प्रायः यह रोग उत्पन्न होता है। कई बार शारीरिक दुर्बलता वाले मनुष्यों को भी आ दबाता है।

पहिचान—ज्वर आकर प्यास बढ़ जाती है। होठों पर रूखी पपड़ी सी जमी रहती है। रोगी साधारण सा चौंका करता है। मुँह का स्वाद कड़ुवा हो जाता है। उठने बैठने से भी विवश हो जाता है। प्रायः नेत्र मूंदे चुपचाप पड़ा रहता है।

तीन चार दिवसोपरांत प्रथम ग्रीवा पर फिर छाती पर मोती के दानों जैसी फुन्सियां प्रकट हो जाती हैं। कभी २ दो तीन सप्ताह बाद दाने निकलते हैं। ज्वर हर समय बना रहता है किन्तु अपेक्षाकृत प्रातः तनिक कम हो कर संध्या समय बढ़ जाता है। यदि दाने लुप्त हो जायं, तो

रोगी अत्यन्त बेचैन हो जाता है। कई बार मोतीझरा ज्वर के रोगी की मृत्यु ही ऐसे समय में होती है, जब कि दाने कम हो जाते हैं।

चिकित्सा

आधुनिक युग में भी ऐसे अन्ध विश्वासियों की कमी नहीं, जो ऐसे ही अनेक रोगों को केवल देवता का कोप समझ कर सन्यासियों से झाड़ फूँक कराते फिरते हैं और उनकी इस मूर्खता के दुष्परिणाम से प्रायः रोगी परलोक सिधार जाते हैं। शायद इक्का दुक्का भाग्यवान बच जाए।

(१६५) सुविख्यात हकीम अजमलखाँ साहब की चिकित्सा पद्धति

जब यह ज्ञात हो कि रोगी को मोतीझरा निकलने वाला है, तो गुलबनफ्शा ६ मा०, मुनक्का ६ दाने, कासनी की जड़ ७ मा०, सौंफ ६ मा०, आलू बुखारा ५ दाना, खूबकलां ७ माशा रात को गरम पानी में भिगोदें और प्रातः मलछान कर खमीरा बनफशा ४ तो० मिला कर पिलाया करें।

(१६६) रोगों के लिए उत्तम पानी

आवश्यकतानुसार पानी खूब उबालें। फिर उतारकर ठंडा होने पर कोरी हांडी या सुराही में डालकर १ तो०

खूबकलां को स्वच्छ मलमल के वस्त्र में ढीली सी पोटली बांधकर उस पानी में डाल दें और रोगी को जब प्यास लगे, तो उसे यही पानी दिया करें। इससे दाने शीघ्र ही निकल आते हैं।

(१९७) रोगी की शैय्या पर छिड़कने की दवा

रोगी की खाट पर प्रति दिन ताजा खूबकलां छिड़क दिया करें। इससे भी दाने शीघ्र ही निकल आते हैं।

(१९८) व्याकुलता नाशक औषधि

जिस समय रोगी अत्यधिक बेचैन हो, तो उसे ख़मीरा मुर्वारीद ५ मा०, खिलाकर उन्नाव दाना ५, मुनक्का ९ दाने, खूबकलां ३ मा०, पीत अंजीर ३ दाना, अर्क गावजवां १२ तो० का शीरा निकाल कर शर्वत बनफ़शा २ तो० में मिलाकर पिलाएं। यह घबराहट व बेचैनी को दूर करके हृदय को पुष्ट बनाता है।

(१९९) दस्त रोकने की विधि

यदि मोतीझरा ज्वर के रोगी को दस्त आने लगें, तो उनको रोक देना आवश्यक है। इसके लिये रोगी को बीजों सहित मुनक्का खिलायें। दस्त आना रुक जायेगा।

(२००) शतशोऽनुभूत योग

यह औषधि हमारे वंश में दीर्घकाल से चली आ

रही है। जब रोगी बेचैन हो, और दाने बाहर निकलने में विलम्ब हो रहा हो, ऐसे अवसर पर यह औषधि रसायन सिद्ध होती है।

योग—रुद्राक्ष का दाना (जिसकी माला बना कर साधू पहनते हैं) और चित्रक दोनों को पानी में घिस कर रोगी को थोड़ा पिलाएँ इसी प्रकार नित्य २-३ बार पिला दिया करें। इससे शीघ्र ही दाने बाहर निकल कर रोगी को आराम हो जाता है।

(२०१) मोतीझरा की अक्सीर औषधि

योग—मुक्ताशुक्ति भस्म, व गौदन्ती हरताल भस्म दोनों को मिश्रित करके रखें और दो रत्ती की मात्रा खांड के बीच रख कर लिखा दिया करें। ईश्वर कृपा से शीघ्र ही इस मियादी रोग से छुटकारा मिल जायेगा।

पथ्यापथ्य—तेज़ गर्म वस्तुओं यथा आलू, माँस, मछली, अण्डा, तेल की वस्तुएँ आदि खाने को न दें। भोजन में अरहर की चपाती अरहर की दाल के पानी से दिया करें। मसूर की दाल कम मिर्चें डाल कर खिलाई जा सकती है। बीज रहित मुनक्का और अंजीर इच्छानुसार खिलाएँ।

भारत का वह दुःसाध्य रोग, जो प्रतिवर्ष
सहस्रों घरों के दीपक बुझा देता है।

राजयक्ष्मा (तपेदिक)

'दिक' का अर्थ है पतला या बारीक होना। चूंकि इसका रोगी अत्यधिक दुबला और कृशकाय हो जाता है, इसलिए इसका नाम 'दिक' पड़ गया। यह ऐसा संघातिक रोग है, जो प्राणों के साथ ही जाता है। यदि एक जीवन लेकर ही पीछा छोड़ दे, तो भी शुकर है, मगर यह तो कभी २ सारे कुटुम्ब का बलिदान लेकर ही छोड़ता है। यह रोग भारत में दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है और प्रतिवर्ष सहस्रों घरों के दीपक इससे बुझ जाते हैं।

लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि 'राजक्ष्मा, कविता और दुर्भाग्य की संसार में कोई चिकित्सा नहीं।' यदि प्रारम्भ में ही इनकी उचित चिकित्सा हो जाए, तो कई भाग्यशाली इसके पंजे से मुक्त हो जाते हैं। किन्तु द्वितीय या तृतीय श्रेणी में पहुंचने पर ईश्वर कृपा के अतिरिक्त उत्तम से उत्तम दवा भी लाभ नहीं करती।

गत वर्ष की बात है, कि हमारे रोगियों में से तीन रोगियों पर तपेदिक का सन्देह किया जाने लगा। हमने त्वरित ही एक अर्क खींच कर उन्हें सेवन कराया, ईश्वर की कृपा ऐसी हुई कि वे तीनों ही स्वस्थ हो गये।

मूल कारण—इसके अगणित कारण होते हैं, किंतु प्रायः दुर्गन्धि या सड़ांद या वात, पित्त, कफ में से किसी दोष के बिगड़ जाने से उत्पन्न ज्वर में ग्रस्त रोगी की चिकित्सा में भूल करने, या किसी आन्तरिक घाव से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

राजयक्ष्मा की पहिचान

प्रारम्भ में ज्वर इतना न्यून होता है कि रोगी स्वयं उसका अनुभव नहीं कर पाता। केवल नाड़ी की गति तनिक तीव्र हो जाती है। शरीर प्रतिदिन दुबला होता जाता है। प्रतिदिन दोपहर उपरान्त तबियत सुस्त हो जाया करती है, और प्रातः पूर्ण आराम हो जाता है। भोजनोपरान्त गर्मी बढ़ जाती है, यदि भीतरी अंग में शोथ होगा तो उसे जाड़ा लगकर ज्वर हो जाएगा और कुछ देर पश्चात् पसीना आकर ज्वर उतर जाएगा। कई रोगियों के गालों पर लाल घेरे भी पड़ जाते हैं और हाथ पांव के तलवे जलने लगते हैं। भूख कम हो जाती है। रोगी दिन प्रतिदिन कृशकाय होता हुआ अतिसार ग्रस्त होकर परलोक सिधार जाता है।

विशेष लक्षण

प्रायः उपरोक्त चिन्हों के अतिरिक्त एक विशेष

लक्षण भी देखने में आता है, कि रोगी के कानों के आकार में एक विशेष परिवर्तन हो जाता है, जिससे रोगी का माथा खिंचा सा रहकर कान खड़े हो जाते हैं।

स्मरणीय बात

चूंकि इस रोग की चिकित्सा केवल प्रारम्भ में ही सफल हो सकती है, इस कारण तनिक भी सन्देह होने पर तत्काल चिकित्सा करनी चाहिये। इस बात को सदा स्मरण रखें कि यदि भोजनोपरान्त गर्मी बढ़ जाती हो तो अवश्य ही चिकित्सा आरम्भ करा देनी चाहिए।

(२०२) क्षय व जीर्ण ज्वरों के लिये सर्वोत्तम अर्क

इस अर्क से स्वयं मैंने क्षय व जीर्ण ज्वर के अनेक रोगियों को स्वस्थ किया है, और वैद्य श्रीराम आदि ने भी कई बार परीक्षा करके सफलता प्राप्त की है। इसका योग 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' के प्रथम भाग में ज्वर प्रकरण में योग नं० ३७५ देखें। यदि उसके साथ ही निम्न योग भी सेवन कराया जाए, तो सफलता में कोई सन्देह नहीं रहता। लाभ अवश्यम्भावी है।

(२०३) जीर्ण ज्वर नाशक सुगम औषधि

(ह० सैय्यद मुशर्रफ़ अली साहब द्वारा प्रदत्त)

योग--खूबकलां, शुद्ध कासनी, सौंफ गुलाब पुष्प,

प्रत्येक ३ माशा; सबको पाव भर पानी में भिगो कर उबालें, जब १ छटांक जल शेप रह जाए, तो गुलकन्द दो तोला मिलाकर प्रातः पिलाया करें। क्वाथ छानने के बाद बचे हुये फोक को फिर पाव भर जल में उबालें और छटांक भर पानी रहने पर २ तोला, गुलकन्द मिला कर सोते समय पिलादें। इसी प्रकार एक सप्ताह निरंतर सेवन कराएँ। उपरोक्त अर्क चाहे क्वाथ में ही मिला लिया करें अथवा क्वाथ पिला कर ऊपर से अर्क पिलाया करें, निश्चय ही लाभ होगा।

(२०४) खुबकलां शुद्ध करना

यथावश्यक खूबकलाँ साफ करके मलहम के कपड़े में ढीली सी पोटली बांध कर उसको २०० वार पानी में डुबो २ कर निकाल लें और धूप में सुखालें। बस शुद्ध हो गई।।

(२०५) भस्म मिश्रण

यह दिक़, सिल व जीर्ण ज्वरों के लिए अनुपम वस्तु है। कुछ दिनों के सेवन से ही लाभ हो जाता है। यह योग यथार्थ में पंजाब के प्रख्यात हकीम शहज़ादा गुलाममुहम्मद का है।

योग—मुक्ताशुक्ति, अकीक, शंख, संगेयशद, बड़ी,

कपर्दिका, श्याम अभ्रक, गोदन्ती हरताल प्रत्येक १ तो० । सबको शुद्ध करके बारीक पीसलें और १० तो० अजवायन देशी को १० तोला पानी में घोंट कर छान लें । उपरोक्त औषधियों में इस पानी को थोड़ा २ डालते हुए घोटें । जब घोटते २ सारा पानी सूख जाय तो १२ सेर कण्डों की आग दें । ठण्डा होने पर निकाल कर फिर बारीक पीसलें और बाँसा पत्र १० तो० अजवायन की भाँति १० तो० पानी में घोट छानकर इस पानी में उक्त भस्म को खरल करें और सूखने पर १२ सेर उपलों की आंच दें । तत्पश्चात् मकोय, निम्ब-पत्र, करेजना, कासनी के बीज १० तो०, को १० तो० पानी में घोट कर उसके रस में उपरोक्त विधि से क्रमशः अग्नि दें । फिर जरशक के १० तो० पानी में तदनन्तर १५ तो० गधी के दूध में खरल करके उक्त रीति से आँच दें । फिर अन्त में १५ तो० बकरी के दूध में खरल करके सूखने पर आँच दें । यही सफल भस्म होगी । इसकी १ रत्ती से २ रत्ती तक की मात्रा वैद्य की राय अनुसार बाँसा पत्र २ तो० के क्वाथ से दें ।

---

(२०६) यक्ष्मा के लिए रासायनिक चूर्ण

योग—वंशलोचन उत्तम १० तो०, असली सत्व गिलोय १ तो०, हरी इलायची १ तो०, कतीरा ७ मा०, कीकर का गोंद ७मा०, रूब्बसूस ८ मा०, ग्लूकोज़ ५ मा०, जहरमोहरा खताई की पिष्टि ३ मा०, धनिया के चावल ६ मा०, सफेद चन्दन ७ मा० । समस्त द्रव्यों को बारीक पीस कर चूर्ण बनालें और ३ मा० मात्रा १० तो० ज्वरार्क के साथ प्रातः सायं सेवन करायें । ज्वरार्क पहिले ५ तो० प्रारम्भ करके फिर प्रतिदिन १ तो० बढ़ाते जांय। ज्वरार्क का योग प्रथम भाग में है ।

(२०७) लाभकारी कटु औषधि

प्रत्यक्षतः यह योग व्यर्थ और घृणित सा प्रतीत होता है, किन्तु ऐसा प्रभावकारक और सुगम योग मिलना दुष्कर है । नागपुर के एक वैद्य जी इसे चिरकाल से अपने रोगियों पर व्यवहृत कर रहे हैं । किन्तु आज तक इसे किसी पाप की भांति छुपाए हुए हैं ।

योग—ऊँट का मूत्र प्रातःकाल लेकर बोतल में भरलें और रोगी को अर्क बतला कर पीने को कहें । नित्य प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर वह १ तो० पीता रहे । एक बोतल समाप्त होते २ रोग भी नष्ट हो जायेगा । यह रहस्यमय

योगों में से है। रोगी को इसकी सत्यता की हवा भी न लगने दें।

(२०८) भस्म पारद

यह औषधि बनने में परिश्रम अवश्य चाहती है, किन्तु बनजाने के पश्चात् अपने गुणों से सारे कष्ट भुला देती है, यह औषधि न केवल क्षय रोग की, अपितु जीर्ण ज्वरों को भी हड्डियों से नितान्त निकाल देती है।

योग—शिंगरफ से निकाला हुआ पारा ५ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तो०। दोनों को चीनी या काँच के स्वच्छ खरल में डाल कर ७ दिन निरन्तर घोट कर कजली बनालें। अब इस कजली को लोहे की कढ़ाही में डाल कर दहकते हुए कोयलों की आग पर रखें। पिघलने पर संभालू की लकड़ी से चलाते रहें। यहां तक कि सारा गन्धक धुआँ बनाकर उड़ जाए। धुआँ बन्द होने पर कढ़ाही को आग पर से उतार लें और ठण्डा होने पर कढ़ाही का सारा द्रव्य बारीक पीसकर शीशी में भर लें।

सेवन विधि—४ चावल से १ रत्ती तक मात्रा शुद्ध मधु में मिलाकर ५ काली मिर्च, ३ तुलसी पत्र सहित क्षय या जीर्ण ज्वर के रोगी को नित्य प्रातः सायं देते रहें।

लाभ—यह औषधि क्षय, जीर्ण ज्वर, कास, दमा,

हिक्का, वमन आदि के लिए अक्सीरवत् है। हर औषधालय में इस औषधि का तैयार रहना अत्यावश्यक है।

(२०६) एक और अक्सीर औषधि

(वैद्य कृष्णदयाल जी कृत 'मख़ज़न आयुर्वेद' से)

यह योग यक्ष्मा के रोगियों के लिए अद्वितीय है।

योग——पीपल के पांचों अङ्ग लेकर भली प्रकार कूट लें, फिर १३ गुना पानी मिलाकर लोहे की कढ़ाही में एक दिन रात भिगोएं। फिर उस कढ़ाही को आग पर रख कर मन्द-मन्द आंच जलाएं। जब ४ सेर पानी शेष रह जाय, तो मल छान लें और पुनः कढ़ाही में डालकर आग पर पकावें। जब द्रव्य अफीम जैसा गाढ़ा हो जाय तो उतार कर उसमें ६ माशा प्रति तोला के हिसाब से कृष्णाभ्रक भस्म और सत्व गिलोय, प्रत्येक मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

सेवन विधि——२ गोली से ४ गोली तक नित्यप्रातः सायं बकरी के दूध से सेवन कराएं।

लाभ——यह दवा तपेदिक वालों को अमृत के समान है। जब कि अन्य सब दवाएं निष्फल रहें, इसे सेवन कराएं। खांसी से कफ़ में रक्त आए, तथा हाथ पांव की जलन और दुर्बलता में भी अति लाभदायक है।

पथ्यापथ्य—उष्ण व गरिष्ठ पदार्थों व गर्म प्रदेश में रहने से बचें। भोजन में लौकी, पालक, तोरई, साबूदाना व गेहूं का फुलका दें।

४. ज्वरनाशक विविध योग

यहां भिन्न २ प्रकारों के ज्वरों के विविध योग लिखे जाते हैं, जो ईश्वरानुकम्पा से एक से एक उत्तम हैं, और कदाचित ही निष्फल होते हैं।

(२१०) रक्त वटी

यह योग स्व० ह० खैरुद्दीन साहब का है। वे इसकी एक गोली का मूल्य १) लेते थे। किन्तु कमाल यह था कि एक गोली से ही ज्वर दूर हो जाता था। दैनिक, एकान्तरा, तृतीयक और चौथिया सभी ज्वरों में समान लाभकारी थी। हमने भी अपने धर्मार्थ चिकित्सालय में प्रयुक्त करके इसे परम लाभदायक पाया है।

योग—शुद्ध शिंगरफ रूमी १ तो०, खरल में बारीक पीस लें। फिर उसमें १ काली मिर्च डालकर पीसें और फिर १ पत्ता तुलसी का डालकर पीसें। इसी प्रकार बारी-बारी से १-१ काली मिर्च और तुलसी दल डालकर खरल करते रहें, यहां तक कि ३०० काली मिर्च और ३०० तुलसी दल पिस जायं। फिर चने के बराबर गोलियां बनालें और सुखाकर शीशी में भरलें

सेवन विधि—किसी प्रकार का भी ज्वर क्यों न हो, ज्वरागमन से एक घन्टा पूर्व १ गोली बेरी के दो पत्तों में लपेट कर खिलादें। आशा है, उसी दिन ज्वर न हो सकेगा। यदि हो ही जाय, तो दूसरे दिन इसी प्रकार गोली और खिलादें।

कुछ नवीन अनुभव

यद्यपि उक्त योग अत्यधिक लाभदायक है, तथापि मैंने इसे भिन्न विधियों से बनाया और ईश्वर की कृपा से सभी योग बढ़ चढ़ कर लाभदायक सिद्ध हुए।

(२११) हिंगुल बटी

तुलसी की अपेक्षा बन तुलसी अधिक प्राप्त है। अतः मैंने तुलसीदल के स्थान पर बन तुलसी के पत्ते डालकर गोलियां बनाईं, वे भी वैसा ही प्रभावक रहीं।

(२१२) विषाक्त शिंगरफ वटी

शिंगरफ ६ मा०, शुद्ध संखिया सफेद २ मा०। उपरोक्त विधि से खरल करके मूँग बराबर गोलियां बनालें।

(२१३) विषाक्त हरताल गुटी

शिंगरफ के बजाय शुद्ध हरताल वरकिया और संखिया सफेद शुद्ध मिलाकर उपरोक्त विधि से गोलियां बनालें। ये उनसे भी बढ़कर लाभकारी रहती हैं।

(२१४) ज्वर नाशक अपूर्व वटी

ये गोलियां हर प्रकार के चढ़ कर उतरने वाले दैनिक एकान्तरा, तृतीयक व चौथिया ज्वरों को प्रथम मात्रा में ही दूर कर देती हैं। अन्यथा दूसरी मात्रा में निश्चय ही रुक जाता है तथा हर प्रकार की पीड़ाओं के लिए भी गुणकारी हैं। यदि आधासीसी का दर्द हो, तो दर्द उठने से दो घन्टे पूर्व २ गोलियां पानी के साथ दें। प्रथम तो उसी दिन, अन्यथा दूसरी मात्रा में पीड़ा शान्त हो जायगी।

योग--सिनकोना फेब्रीफ्यूँज को सल्फ्यूरिक एसिड १ भाग, पानी १२ भाग में आटे की भांति गूंध कर चने के बराबर गोलियां बनालें और सुखा कर शीशी में भरलें।

विशेष सूचना--यद्यपि इन गोलियों से १-२ दिन में ही ज्वर रुक जाता है, किन्तु मूलोच्छेदन करने के लिए पांच दिन निरन्तर सेवन करना चाहिये। ताकि ज्वर के पुनरागमन की आशंका भी न रहे। इससे यह कि यदि रोगी को कोष्टबद्धता हो तो पहले उसे दूर कर लेना चाहिये, अन्यथा सफलता न मिलेगी। उपरोक्त अंग्रेजी दवाएं किसी भी केमिस्ट से खरीद लें।

(२१५) हमारा निजी गौरवपूर्ण आविष्कार सहूलती

हमारा यह स्वदेशी आविष्कार रंग, आकृति और स्वाद में तो अंग्रेजी कुनीन जैसा ही है, किन्तु गुणों में उससे दसगुना है। मात्रा भी बहुत कम है, विशेषता यह है कि खुश्की बिल्कुल पैदा नहीं होती। यही कारण है कि पानी से खाई जाती है और एक ही दिन विलक्षण प्रभाव दिखाती है। हर प्रकार के ज्वरों विशेषकर मलेरिया ज्वर के लिये तो अक्सीर है हमने चिरकाल तक इसका विज्ञापन करने के उपरान्त आज उसे भी आपको भेंट कर दिया है। देखें क्या कद्र होती है।

योग--गोदन्ती हड़ताल उत्तम लेकर ७ दिन पर्यन्त गाय के दूध में भिगोएँ। दूध प्रति दिन ताजा बदलते रहें। फिर साफ करके दहकते हुए कोयलों की आंच पर रख दें। ठण्डा होने पर फूले हुए टुकड़े तोल कर खरल में बारीक पीसलें। उसमें ४ रत्ती संखिया भस्म प्रति ५ तोला के हिसाब से मिला कर खूब खरल करके शीशी में भरलें। यदि मीठी कुनैन जैसी बनानी हो, तो थोड़ी सी सैक्रीन मिलादें। और २ रत्ती से ४ रत्ती तक दिन में ३ बार दें। चढ़े हुए ज्वर को उतारती है, और उतरे हुए को चढ़ने से रोक देगी।

(२१६) तिजारी की चमत्कारी वटी

शाहजहांपुर में एक साधू तिजारी की चिकित्सा में प्रख्यात हैं। किन्तु वह दवा किसी को देते नहीं हैं, अपने सामने खिला देते हैं। और २।) ले लेते हैं। विष्णुदयाल नामक एक व्यक्ति ज्वर ग्रस्त होने पर उनके पास गया और गोली को जीभ के नीचे छुपा कर दूध पी गया। उसने वह गोली लाकर एक वैद्य जी को दी, जो उसे जानने को उत्सुक थे। उन्होंने विश्लेषण द्वारा उसके द्रव्य ज्ञात कराए जो इस प्रकार निकले।

योग—कुनीन सल्फ २० ग्रेन, एक्सट्रैक्ट नक्सवोमिका १ ग्रेन, एलावीज २० ग्रेन। सबको पीसकर गोंद के पानी से ४ गोली बनालें।

मात्रा—१ गोली प्रातः दूध के साथ व दूसरी ज्वरागमन से २ घण्टे पूर्व खिलादें। उसी दिन ज्वर रुक जाएगा। अन्यथा दूसरे दिन पुनः सेवन करने पर निश्चय ही रुक जाएगा।

(२१७) अनुभूत ज्वर नाशक औषधि

(डा० विशेश्वर दास कपूरथला द्वारा प्रदत्त)

योग—पिप्पली २ तोला, शिंगरफ १ तो०, पीपरामूल ३ मा०, शिवलिंगी के बीज १ तो०, सब को मिला

कर नींबू के रस में पीस कर २ रत्ती की गोलियाँ बनालें और ज्वरागमन से २ घंटे पूर्व १ गोली ठंडे जल से खिलादें। सेवन काल में रोगी को केवल मूंग की दाल खाने को दें बड़ी ही लाभदायक गोलियाँ हैं।

(२१८) ज्वरान्तक भस्म

(सर कृष्णकपूर हकीम हाजिक़ द्वारा प्रदत्त)

सेलखड़ी, हीरा कसीस, बराबर २ लेकर घृतकुमारी के रस में खरल करके सराव सम्पुट करें और उसे उपलों की आग में फूंक लें। ठन्डी होने पर लाल रंग की भस्म प्राप्त करके पीसलें और २ रत्ती भस्म पानी या उचित अर्क के साथ दें। खांसी के लिए १ रत्ती मात्रा पान में रख कर खिलाएँ।

(२१९) उत्तमोत्तम आयुर्वेदिक योग

इस औषधि से रोगी को २-३ दस्त आकर ज्वर उतर जाता है। किन्तु यह दवा नए ज्वर वाले रोगी को ही सेवन करानी चाहिये। जीर्ण ज्वर वालों को न दें।

योग—शिंगरफ शुद्ध, जयपाल शुद्ध; दोनों बराबर २ लेकर नींबू के रस में इतना खरल करें कि जयपाल की चिकनाई सूख जाय। फिर एक २ रत्ती की गोलियाँ बनालें। यदि इसमें समभाग सुहागा भी मिला दें तो और भी गुणकारी हो जाय।

मात्रा—ज्वरागमन से कुछ घण्टे पूर्व १ से दो गोली तक मधु के साथ दें।

(२२०) तूतियायुत शुक्ति भस्म

तूतिया २ तो०, छोटी शुक्ति ४ तो०, घीकुवार के रस में खरल करके शोष्ण करादें। फिर गोला बना कर २० सेर उपलों की आग दें। ठण्डा होने पर निकाल लें। मात्रा २ रत्ती मक्खन या खांड में रख कर दें।

(२२१) सिनकोना का प्रतिनिधि

(डा० दोस्त मुहम्मद सा० मुल्तानी द्वारा प्रदत्त)

सर्व सम्मत है कि सिनकोना ज्वरों और दर्दों के लिए अक्सीर है। इसका योग व सेवन विधि पीछे कहीं लिख चुके हैं। चूँकि सिनकोना विलायती वस्तु है, अतः हम उसी का प्रतिनिधि एक उत्तम देशी योग लिखते हैं।

योग—रसौंत शुद्ध २ तो०, आक का दूध १ तोला, दोनों को मिला कर इमाम दस्ते में खूब कूटें। जब नितांत सूख जांय तो बारीक पीस कर रखलें। चूर्ण रूप में या गोली बना कर इच्छानुसार सेवन करें। इसके गुण सिनकोना के समान ही नहीं अपितु उससे भी बढ़चढ़ कर पाए जाते हैं। सर्वथा हानि रहित भी है।

(२२२) हड़ताल भस्म (फ़िनिस्टीन का प्रतिनिधि)

यह हड़ताल भस्म ज्वर के लिए ही नहीं, अपितु निमोनिया व हर प्रकार की खाँसी के लिये भी परम लाभदायक है। इससे पसीना आकर शीघ्र ज्वर उतर जाता है। इसे यदि फिनिस्टीन का प्रतिनिधि कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं।

योग—गोदन्ती हरताल ८ तो०, अजवायन देशी ४ तो०, नौशादर १ तो०, फिटकरी १ तो०, घृतकुमारी का गूदा ४ सेर। मिट्टी की हाडी १, उपले १६ सेर।

निर्माण विधि—पहिले हाँड़ी में २ सेर घृतकुमारी का गूदा डाल कर उस पर अजवायन बिछादें। फिर नौशादर और फिटकरी के टुकड़े करके रखें। तदनन्तर गोदन्ती हरताल के टुकड़े करके रखें और ऊपर से शेष अजवायन डाल कर अवशिष्ट २ सेर घृतकुमारी का गूदा रखदें और हांडी का मुँह कपरोटी करके १६ सेर उपलों की गजपुट की आंच दें। ठण्डा होने पर हरताल के टुकड़े फूले हुए नितान्त श्वेत निकलेंगे। उन्हें बारीक पीस कर सुरक्षित रखें।

सेवन विधि—१ से २ रत्ती तक अर्क सौंफ या अर्क पोदीना के साथ दें। हर प्रकार के ज्वर, निमोनिया

घ कास के लिए परम लाभदायक है। एक बार बना कर परीक्षा करने वाला निश्चय ही भविष्य में फ़िनिस्टीन का नाम तक न लेगा।

महामारी (प्लेग)

यह वह सांघातिक रोग है जिससे प्रति वर्ष वंश के वंश नष्ट हो जाते हैं। भारत के सहस्रों लाड़ले सपूतों को भारत माता से छीन ले जाता है। सुख सम्पन्न घरों में हा हा ! कार मचा कर वह दुष्ट रोग उन्हें नरक तुल्य बना देता है। एक ऐसे सुचरित सज्जन जिन्होंने अनेक मद्य-पान करने व दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों को इन राक्षसी वृत्तियों से छुड़ा कर अपना परम भक्त बना लिया था, वह भी प्लेग से छुटकारा न पा सके। अनेक प्रशंसनीय चिकित्सक भी इस रोग के तूफ़ान में फँस कर दुनिया से दूर चले गए। आधुनिक डाक्टरों के मतानुसार यह रोग एक प्रकार के कीटाणुओं से फैलता है, जो रोगी की गिल्टी और शोथ युक्त ग्रन्थियों में पाये जाते हैं। उनकी रिसर्च है कि मनुष्य को यह रोग प्लेग वाले चूहों के पिस्सुओं के काटने से होता है और इसीलिये स्वास्थ्य विभाग चूहों को मारने का प्रयत्न किया करता है।

महामारी के प्रारम्भिक लक्षण पहिले रोगी के सिर, कमर तथा जाड़ों में हल्का दर्द होने लगता

है। मस्तिष्क थका हुआ सा प्रतीत होता है, निद्रा उचाट हो जाती है, भूख मिट जाती है, शरीर में आलस्य उत्पन्न हो जाता है, और फिर सहसा जाड़ा लग कर ज्वर चढ़ आता है। प्यास अत्यधिक प्रतीत होती है, जी बार २ मिचलाता है, और वमन होने लगती है।

गिल्टी उत्पन्न होने का स्थान व समय

ज्वरागमन के २-३ दिन पश्चात् ग्रीवा, बगल, रान की जड़ अथवा कान की लौ के पीछे, ग्रन्थियों में शोथ होकर गिल्टी निकल आती है, जिसमें अत्यधिक जलन व पीड़ा होती है और २-३ दिन में पीप पड़ जाती है। इसके अतिरिक्त चेहरे पर मुर्दनी सी छा जाती है, आँखें भीतर को धंस जाती हैं, और कई बार शरीर पर नीले २ धब्बे भी पड़ जाते हैं।

(२२३) प्लेग रक्षक गोलियां

इस रोग से बचने के लिए समस्त नियम वर्णन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है, अतः यहां एक उत्तम योग अंकित किया जाता है, जिसे महामारी के दिनों में सेवन करते रहने से ईश्वर की अनुकम्पागत आप बचे रहेंगे।

योग--सत गिलोय, वंश लोचन, छोटी इलायची के बीज, जहर मोहरा खताई प्रत्येक १-१ तो०, कपूर १ मा०

कुनैन ३ मा० । सबको कूट पीसकर ईसबगोल के लुआब से चने बराबर गोलियां बनालें । मात्रा २ गोली प्रातः व सायं ठण्डे पानी या अर्क केवड़ा से प्रति दिन खिलाएँ । ईश्वर की कृपा से इन गोलियों को सेवन करने वाला व्यक्ति महामारी के आक्रमण से बचा रहेगा । प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि महामारी (प्लेग) के दिनों में इन्हें बनाकर पास रखें ।

(२२४) प्लेग की अक्सीर औषधि

पिप्पली २० तो०, शोरा ४० तो० । दोनों को बारीक पीसकर मिलालें, और कढ़ाई में डालकर ऊपर १०-१५ आक के पत्ते रखकर ढक दें । फिर नीचे आग जलाएँ । जब कि मण्डूरवत् हो जाय, तो नीचे उतार कर बारीक पीस लें और इसके बीच में १ तो० संखिया की डली रखकर नीचे आग जलाएं । यदि बीच में से धुआँ निकले तो इसी दवा की चुटकी डाल कर उसे बन्द करदें । इस कार्य के लिए थोड़ी सी दवा बचाकर रख लेनी चाहिए । जब धुआं निकलना बन्द हो जाय, तो उतार लें और २ तो० चोआ सज्जी मिलाकर खूब बारीक पीसलें ।

सेवन विधि—प्लेग की गिल्टी पर हल्का सा नश्तर लगाकर थोड़ी सी दवा उस पर मलदें । इसी प्रकार दिन में तीन बार मलें । इससे गिल्टी के अन्दर से पानी

सा निकलेगा, और रोगी को चेतना आकर स्वास्थ्य लाभ हो जायगा।

सूचना--यह एक विशेष गुप्त सन्यासी योग है, जो प्लेग के अतिरिक्त सांप काटने अथवा पागल कुत्ते के काटे को भी ठीक कर देता है।

(२२५) प्लेग की अक्सीर मलहम

(ह० सैय्यद सफेद रियाज़त हुसैन साहब द्वारा प्रदत्त)

योग--संखिया सफेद १ तो०, विशुद्ध अफ़ीम १ तोला, दोनों को रगड़कर लहसुन के रस में गूँधकर ६ भागों में बांट लें। और रोगी के पास दो टोकरे प्याज तथा अंगीठी में कोयलों की आग रखलें। इस काम के लिए २-३ आदमी होने चाहिए। पहिले उपरोक्त दवा एक कपड़े के टुकड़े पर लगाकर शोथ पर चिपका दें, फिर प्याज़ को आग पर गरम करें और पिलपिला होने पर उसे समोष्ण सा शोथ पर बांधें। फिर इसी प्रकार दूसरा प्याज़ गर्म करके पहिला ठंडा होने पर बदल दें और एक एक करके बदलते रहें। २ घण्टे पश्चात् पहिला फाया भी छुड़ाकर दूसरा फाया लगादें और फिर २ घन्टे उसी प्रकार प्याज़, बदल २ कर बांधें। इसी प्रकार लगातार करते रहने से ६ फ़ायों तक या कुछ पूर्व ही शोथ पककर

नरम पड़ता जायगा और उधर रोगी के ज्वर सन्निपात मूर्छा आदि व्याधियों को आराम होता जायगा। इस क्रिया से प्रायः शोथ स्वतः ही फूट जाया करता है, अन्यथा तनिक सा नश्तर की नोंक से छेड़ दें।

पुरुषों के गुप्त रोग

यौवन ही संसार में समस्त सुखों का मूल है, और यौवन सत्व (वीर्य) को हस्तमैथुन, अप्राकृतिक मैथुन अथवा मैथुनाधिक्य द्वारा नष्ट कर देने वाला व्यक्ति नर्क तुल्य जीवन के घोर कष्ट भोगता है। आज यह बताने की आवश्यकता नहीं रह गई, कि इन कुकृत्यों के क्या २ दुष्परिणाम होते हैं, आप स्वयं अपनी आंखों से सहस्रों व्यक्तियों को खून के आंसू रोते देख सकते हैं। जरा उनसे पूछें, कि आज वे क्या सोच रहे हैं, अब क्यों रो रहे हैं, तो देखिए कि किस प्रकार रो रो कर वे अपनी दुःख भरी कहानी आपको सुनाते हैं। इसलिए भाइयो! मैं तो यहां समयाभाव के कारण इतनी ही चेतावनी देकर चुप हो जाता हूं कि अभी समय है, आंखें खोल कर उनकी दुर्दशा को देखो और संभल जाओ। एक बार गढ़े में गिर जाने के बाद फिर रोने से क्या लाभ होगा? इस विषय का थोड़ासा

वर्णन प्रथम भाग में किया जा चुका है, और उससे यदि ५ भाइयों ने भी अपने जीवन को इस घोर कष्ट रूपी गढ़े में गिरने से बचा लिया है, तो हमारा परिश्रम सफल हुआ। यहां हम केवल कुछ भयङ्कर रोगों से बचने के लिए उत्तमोत्तम योग लिख कर आपकी सेवा करना चाहते हैं और आपके कल्याण की कामना करते हैं।

प्रमेह रोग

इस रोग का विस्तृत वर्णन प्रथम भाग में हो चुकने के कारण पुनरुक्ति की आवश्यकता नहीं। पाठक गण प्रथम भाग में देखने का कष्ट करें। यहां इस घातक रोग के कुछ नवीन योग वर्णन किए जाते हैं।

(२२६) प्रमेह व प्रदर की चमत्कारी दवा

(ह० शेर मुहम्मद साहब द्वारा प्रदत्त)

योग—सीसा शुद्ध १२ तो, इलायची छोटी, वंश-लोचन, गुलाब पुष्प, सफ़ेद मूसली १-१ तो०, मिश्री १० तो०। प्रथम सीसे को अहरन पर रख कर इतना कूटें कि कण २ हो जाय। फिर इलायची मिला कर पत्थर के कूंडे में डाल कर खूब जोर से घोंटें और एक के पश्चात् एक दवाई मिलाते व रगड़ते जांय और टुइल के कपड़े में से छानते भी रहें और जो कच्चा सीसा निकले उसे यथापूर्व

रगड़ते रहें। जब सीसा सुरमे की भाँति बारीक और कोमल हो जावे और चूर्ण का रंग काला सा हो जावे तो शीशी में सुरक्षित रख लें।

मात्रा--१ माशा से २ माशा तक गाय के मक्खन में मिला कर खिलावें। ऊपर से आधा सेर गाय या बकरी का दूध पिलावें। पहिली मात्रा ही चमत्कारी प्रभाव दिखाएगी।

सूचना--यदि रोगी को कोष्टबद्धता हो, तो प्रथम उसे दूर कर देना चाहिये अन्यथा लाभ न होगा।

(२२७) प्रमेह व स्वप्नदोष नाशक चूर्ण

प्रतक्षतः यह योग सामान्यसा है, किन्तु गुणों में अपूर्व है। विशेषता यह है कि सस्ता और सरलता से बनने वाला है।

योग--विधारा, असगंध नागौरी, शतावर, तीनों को बराबर २ लेकर बारीक चूर्ण बनालें और फिर चूर्ण के बराबर मिश्री पीस कर मिलालें।

मात्रा--२ मा० से तीन मा० तक शक्ति अनुसार) दूध या पानी के साथ सेवन कराएँ। प्रमेह व स्वप्न दोष नाशक व वीर्य पौष्टिक है।

(२२८) सुखदेव वटी

(दीवान बोधाराम जी द्वारा प्रेषित)

आपने लिखा है कि मुझे बड़े यत्न व खोज से यह अक्सीरी योग प्राप्त हुआ है, जो प्रमेह व स्वप्नदोष के लिए अपूर्व गुणकारी है। इसकी दो तीन मात्राएँ ही जीर्ण से जीर्ण रोगी को भी अपने प्रभाव से चमत्कृत कर देती हैं। अमृतसर के एक प्रसिद्ध वैद्य की यह लोक-प्रिय औषधि है।

योग—बंगभस्म २॥ तो०, आमला, भंग के पत्ते, शिलाजीत, हल्दी, रसौंत प्रत्येक १॥ तो० कपूर व एलुआ १-१ तो०, वच ६ मा०, रजत भस्म ६ मा०, अफीम १ मा०। सबको बारीक पीस कर पानी की मदद से ३-३ रत्ती की गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं व सोते समय दूध या पानी से दें।

लाभ—प्रमेह व स्वप्नदोष के लिए महौषधि है। हमारी स्वयं की शतशोनुभूत अनुभूत है। हम इसे दीर्घ काल से प्रयोग कर रहे हैं।

(२२९) प्रमेह नाशक वटिका

(ह० मुहम्मद अब्दुलग़नी साहब द्वारा प्रदत्त)

ये गोलियां तनिक परिश्रम से बनती हैं, किन्तु जो

महाशय औषधियाँ सेवन करते २ निराश हो चुके हों वे इनका चमत्कार देख लें।

योग--चिंचा बीज, वट सत्व, बबूल सत्व, दूधी छोटी, मथल बूटी पीले दूध सहित, मूसली, सालब मिश्री शलगम के बीज ४-४ तो०, कीकर की फलियों द्वारा निर्मित फौलाद भस्म, बंग भस्म, पारा भस्मशोरा वाली, प्रवाल भस्म भंग वाली प्रत्येक १-१ तो०। सबको सूक्ष्म पीस कर वट के दूध में ७ दिन तक खरल करें और जंगली बेर के बराबर गोलियां बनालें। १-१ गोली प्रातः सायं गाय के दूध से निरन्तर एक मास सेवन कराएँ। गुड़, तेल, खटाई, व देर से पचने वाली वस्तुओं से परहेज आवश्यक है। सेवन काल में रोगी को कोष्टबद्धता न होने दें।

(२३०) कीकर व वट सत्व की निर्माण विधि

वट वृक्ष के पीले पत्ते जो स्वतः टूट कर भूमि पर आ गिरे हों यथावश्यक लेकर पानी के घड़ों में ठूंस कर भरदें और पानी से घड़ों को भरदें। ३-४ दिन उपरान्त जल सहित कढ़ाही में पकावें और आधा पानी जल जाने पर उतारलें तथा पत्तों को हाथों से मल कर छानलें। फिर छने हुए पानी को पुनः कड़ाही में डाल कर पकावें। और जब अफीम जैसा गाढ़ा हो जाय तो उतारलें। यही

वटसत्व है। इसी विधि से कीकर सत्व बनालें। यदि उपरोक्त औषधि के लिए वट का दूध न मिले, तो वट की कोंपलों के क्वाथ से काम लें। किन्तु यह गुणों में उससे कुछ कम रहेगी।

(२३१) असाध्य प्रमेह के लिए हितकर अपूर्व वटी

यह वटी प्रमेह नाशक होने के साथ हृदय व मस्तिष्क को शक्ति देने वाली भी है। ऐसे योग कम ही प्राप्त होते हैं, जो प्रमेहनाशक, वीर्यवर्द्धक और शक्तिदायक भी हों। यह योग तीनों गुणों से सम्पन्न उन्हीं में से एक है।

योग--रौप्य भस्म १ तो०, स्वर्ण भस्म ५ माशा, मण्डूर भस्म ६ मा०, मुक्ताशुक्ति भस्म ६ मा०, प्रवालभस्म ६ माशा, अकीक भस्म ३ माशा, तालमखाना १ तोला। सबको मिश्रित करके पहिले १० तोला अर्क केवड़ा में, फिर १० तोला अर्क वेद मुश्क में बारी २ से खरल करके चने के बराबर गोलियां बनालें और एक गोली मुरब्बा आंवला या मक्खन में लपेट कर खिलाया करें। तथा गरम वा खट्टी वस्तुओं से परहेज रखना आवश्यक है। विपुलता से बहते हुए वीर्य को भी अपने दिव्य गुणों से बन्द कर देता है। हृदय, मस्तिष्क आदि को शक्ति देकर शरीर को पुष्ट बनाती है।

विशेष सूचना—भस्मों की निर्माण विधि प्रथम भाग में लिखी जा चुकी है।

(२३२) बिना औषधि के प्रमेह व स्वप्नदोष नाशक अत्युत्तम यौगिक विधि

योगियों ने रोग निवृत्ति के अनेक ऐसे अभ्यास निर्धारित किए हैं, जिनसे बिना औषधि सेवन के ही रोग दूर हो जाते हैं। शीर्षासन भी उनमें से एक है, जो प्रमेह व स्वप्नदोष को मिटा देता है।

शीर्षासन करने की विधि—स्वच्छ हवादार कमरे में प्रातः सायं शौचादि से निवृत्त होकर शरीर के सब कपड़े उतारदें, केवल लंगोटी बांधे रहें, और दीवार के निकट कोई नरम गद्दी रख कर उस पर सिर रखकर दीवार के सहारे पांव ऊपर को करदें। अभ्यास होजाने पर दीवार का सहारा लेना छोड़दें और वैसे ही खड़े रहें। पहिले दिन आधा मिनट या सरलता से जितनी देर खड़े रह सकें उतनी देर खड़े रहें। फिर प्रतिदिन आधा मिनट

बढ़ाते जायं, यहां तक कि १५ मिनट तक बढ़ादें। फिर जब तक इच्छा हो जारी रखें। इस अभ्यास के करने से प्रमेह व स्वप्नदोष का नाममात्र न रहेगा। शरीर में बल, स्फूर्ति व मोटापा उत्पन्न होगा। चेहरे पर रक्त की आभा दमकने लगेगी। इस आसन के और भी अनेक लाभ हैं।

(२३३) कामवर्धक वटी

मेरे मित्र ह० मुहम्मद याकूब साहब को यह योग एक ऐसे वैद्य से प्राप्त हुआ जो केवल इसके कारण ही प्रांत भर में विख्यात था। उक्त सज्जन योग के साथ मुझे कुछ गोलियां भी दे गए थे, जिन्हें परीक्षा करने पर मैंने अद्भुत गुणकारी पाया। परीक्षणार्थ मैंने एक दमा के जीर्ण रोगी को भी ५ मात्राएँ दीं और कुछ दिनों पश्चात् उसे पूर्ण स्वस्थ देख कर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

योग—संखिया सफेद दूधिया ३ मा०, विशुद्ध अफीम ३ मा०। दोनों को पृथक २ सूक्ष्म पीसलें और फिर परस्पर मिलाकर एक शीशी में बन्द करके कूड़े के ढेर में दवा दें। ४० दिन पश्चात् उसे निकालें दोनों वस्तुएं मिलाकर मोम की भाँति हो जायेंगी। उसे निकाल कर बाजरे के दाने से कुछ बड़ी गोलियाँ बनालें और एक गोली संध्या समय मलाई में लपेट कर खिलाएँ।

१४ मात्राएं सेवन कर लेने पर आप इसका चमत्कारी लाभ देखेंगे।

(२३४) आनन्दवर्धक वटी

चेहरे की पीतता दूर करके लालिमायुक्त बनाने और खोई हुई पुंसक शक्ति को पुनः उत्पन्न करने में ये जादूई असर गोलियां अपना जवाब नहीं रखती हैं। हृदय, मस्तिष्क व यकृत की दुर्बलता को दूर करके उन्हें बलवान बनाना इनका प्रथम गुण है। यह योग हमारे मित्र डा० त्रिलोकनाथ ने प्रकाशनार्थ प्रदान किया है। उनके यहां इन गोलियों की बिक्री अत्यधिक बढ़ी चढ़ी है।

योग—फेरीयर कुनीन साइट्रास २ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट नक्स वोमिका ½ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट डामियाना १ ग्रेन, पिलफास्फोरस १ ग्रेन, गोल्ड क्लोराइड ⅙ ग्रेन, मोहम्शीन हाइड्रोक्लोर व एक्स्ट्रेक्ट कोका ¼ ग्रेन, एक्स्ट्रेक्ट जनशन यथावश्यक। पहिले कुनीन व गोल्डक्लोराइड को खरल में डालकर बारीक पीसें, फिर एक्स्ट्रेक्ट नक्स को मिला डाल कर पीसें। फिर सारी दवाएं मिला कर ३-४ घन्टे लगातार पीसें। यह परिमाण एक गोली का है, इसी हिसाब से जितनी अधिक चाहें उतनी गुनी दवाएं मिला कर बनालें और ऊपर सोने के वर्क लगादें। चूंकि

इसमें मूल्यवान औषधियां पड़ती हैं अस्तु मंहगी अवश्य पड़ेगी, किन्तु इसके गुण अकथनीय हैं।

(२३५) अनुपम सुगंधित वटी

ये गोलियां भी अपने गुणों में अनुपम और प्रभाव में अक्सीर हैं। इन्हें कुछ दिन सेवन करके दुर्वल से दुर्वल व्यक्ति भी पुनः शक्ति प्राप्त कर सकता है।

योग—सत शिलाजीत, सत लोबान, कस्तूरी, अम्बर, अनबिंधा मोती, केशर शुद्ध, स्वर्ण पत्र, रजत पत्र, अब रेशम कतरा हुआ, सबको बराबर लेकर बारीक पीसकर पान के रस में घोटें और बाजरे के दाने बराबर गोलियाँ बनालें तथा ऊपर से स्वर्ण पत्र लपेट कर रखलें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः सायं हलुवा में लपेट कर खिलाएं और ऊपर से आधा सेर दूध पिलादें। कुछ ही दिनों के सेवन से नपुंसक भी पुंसक बन जायगा।

(२३६) हिंगुल रक्त वटी

इसका योग प्रथम भाग में लिखा गया है, वहां देखलें। हां कुछ समय से हमने इसमें मिलाने वाली शिंगरफ भस्म बनाने की विधि परिवर्तित कर दी है, जो आगामी पृष्ठों पर अङ्कित की जायगी।

(२३७) कामवर्धक व स्तम्भक वटी

योग—कबाबचीनी, दारचीनी, अकरकरा, रेगमाहीनर, खुलंजा, केशर, जायफल, ७-७ माशे, अफीम शुद्ध ५ मा०, कस्तूरी ३ मा० । सबको अर्क गुलाब में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनालें । ऊपर से सोने या चांदी के वर्क लपेट दें ।

सेवन विधि—दो गोलियां सोते समय दूध से खिला दिया करें । ऊपर से पान का पत्ता बांध दें । अपूर्व बाजीकरण व स्तम्भक हैं । देहली के विख्यात हकीम अजमलखाँ के औषधालय में बहुत प्रयुक्त होती हैं ।

(२३८) कामोद्दीपक वटी

जिसे एक सन्यासी १०) प्रति गोली बेचा करते थे ।

हमारे मित्र दीवान बोघारामजी टांक निवासी के पास एक सन्यासी आते थे, जो कि प्रायः इन गोलियों को अपने पास तैयार रखते थे । राजा-रईसों से मिल कर उन्हें १०) प्रति गोली बेचा करते थे, बड़ी कठिनता से योग प्राप्त करके भेंट कर रहे हैं ।

योग—केशर, कस्तूरी, अफीम, बरना के बीज, १-१ तो० लेकर आधा सेर वट के दूध में खरल करके काली मिर्च के बराबर गोलियां बनालें । और एक गोली दो घंटे पूर्व खिलाने से अपूर्व उत्तेजना और स्तम्भन होता है ।

विशेष सूचना—कस्तूरी पौषी पहाड़ की जो रियासत चम्बा के रसियों से फाल्गुण मास में प्राप्त की जाय, वह लें। शर्त कठोर अवश्य है किन्तु जो सज्जन प्राप्त कर सकें, अवश्य बनावें।

(२३६) नपुंसकता की अक्सीर गटी

हमारे प्रान्त के सिकन्दरपुर ग्राम में एक सज्जन नपुंसकता की चिकित्सा में प्रसिद्ध थे और उनकी चिकित्सा ईश्वर की कृपा से कभी असफल नहीं होती थी। उनके जीते जी तो हमें योग प्राप्त नहीं हो सका, किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र अब्दुल क़ादिर ने यह योग हमारे एक मित्र को दे दिया। जो यह है—

योग—चार छुहारे चाकू से चीर कर उनकी गुठली निकाल दें। फिर चार नर चिड़े [illegible] कर उनके पर आदि साफ करदें और उनके पेट में छुहारे रख कर सी दें। फिर आटे में लपेट कर [illegible] बनावें। तत्पश्चात् ८ सेर भैंस का दूध लेकर उसमें आटे के गोलों को डालकर मुंह बन्द करके आग [illegible] पर पकावें। और ठन्डा होने [illegible] व दूध [illegible]
और छुहारे [illegible] गोलियां बनावें। १ [illegible]
प्रति दिन [illegible]
अधिक

(२४०) विलास वटिका

ये गोलियां गुजरात के एक औषधालय से अपने दिव्य गुणों के कारण अत्यधिक बिकती हैं और विशेषता यह है कि सरलता पूर्वक बन जाती हैं।

योग—स्ट्रिकनियां ४ रत्ती, रजत भस्म ४ मा०, फौलाद भस्म ४ मा०, कस्तूरी २ मा०, कुनीन सल्फास १ तो०, गुग्गुल शुद्ध ४ तो०। सबको पीसकर २०० गोलियां बनालें। १ गोली नित्य प्रातः दूध के साथ दें। तत्क्षण प्रभावक और अनुपम कामोद्दीपक हैं।

(२४१) अक्सीर नपुंसकता

जमींकन्द (एक प्रसिद्ध शाक) दो सेर लेकर हाथों को तेल से तर करके चाकू से उसे छील डालें। फिर इनके बारीक टुकड़े २ काट कर घी में भून लें। लाल हो जाने पर बारीक पीस लें। ⅟₈ भाग जायफल बारीक पीस कर मिला दें। फिर इस मिश्रण से चार गुनी मिश्री मिला कर सुरक्षित रखें और १-१ तो० प्रातः सायं समोष्ण दूध से खिलाया करें। वाजीकरण शक्तिवर्धक और प्राकृतिक स्तम्भन पैदा करने में अक्सीर है।

(२४२) वीर्यवर्धक औषधि

असगंधनागौरी, कौंच के बीज, शकाकुल मिश्री, ताल

मखाना सबको बराबर २ लेकर बारीक पीसलें और इन सबके बराबर मिश्री मिला कर रखें। १ तो० प्रातः व १ तो० सायं गाय के दूध से सेवन करें। अपूर्व वीर्यवर्धक व पौष्टिक है।

(२४३) एक और उत्तम योग

अजवायन खुरासानी १ तो०, शुद्ध पारा १ तोला। दोनों को खरल में डाल कर इतना रगड़ें कि काले रंग की कज्जली बन जाय और पारा लुप्त हो जाय। फिर इसमें सालव मिश्री, शकाकुल मिश्री, इन्द्र जौ मीठे, कच्ची हल्दी प्रत्येक दो तो०, जायफल ६ मा० जौ कुट करके मिला दें। बारीक न होने पायें। फिर कुन्दश २ तो०, केशर ६ मा०, कस्तूरी २ रत्ती, अम्बर अशहब २ रत्ती, इन सबको बिना कूटे ही मिला दें। फिर समस्त वस्तुओं को एक सफेद मोटे कपड़े में कस कर पोटली बांधें और फिर खौलते हुए दूध में इस पोटली को १ मिनट लटका कर निकाल लें। यही पोटली सप्ताह भर काम देगी। पहिले दिन १ मिनट, दूसरे दिन २ मिनट, तीसरे दिन ३ मिनट, इसी प्रकार क्रमशः ८ वेंदिन ८ मिनट उबलते दूध में लटका कर उसका दूध पिया करें। एक सप्ताह में ही बाजीकरण शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि सहन करना

दुष्कर हो जाता है। उत्तमांगों को वल देने वाला भी चोटी का योग है।

विशेप सूचना—पारा शुद्ध किया हुआ डालना आवश्यक है। पारा शुद्ध करने की विधि प्रथम भाग में छप चुकी है, वहां देख लें। अशुद्ध पारा हानिकारक सिद्ध होगा। (ह० क़ादिर वख्श सा०)

(२४४) बिच्छू डङ्क का अद्भुत प्रभाव

बिच्छू के डङ्क में इतना तीक्ष्ण विप होता है कि भले चंगे आदमी को भी एक डंक में ही तड़पा देता है। किंतु इसी विष को यदि वैद्यक ढंग से प्रयोग किया जाय तो अमृत तुल्य हो जाता है। जिससे नष्ट प्रायः शक्ति का रोगी पुनः शक्ति प्राप्त कर लेता है। विधि यह है—

काले बिच्छू को एक प्याले में रख कर पान का पत्ता उसके सामने करदें, ताकि वह इस पर डंक मारदे फिर यह पान रोगी को खिलादें। इसी प्रकार दूसरे दिन दो डंक लगवा कर खिलाएं और तीसरे दिन तीन डंक लगवा कर। तीन दिन में ही नपुंसक पुंसक वन जाएगा।

(२४५) बिच्छू भस्म

एक काला बिच्छू लेकर उसे पावभर मांस के कीमा में लपेट कर कपड़मिट्टी करके सेर भर उपलों की आंचदें। भस्म तैयार हो गई।

मात्रा—१ चावल मक्खन में लपेट कर खिलाएँ अधिकाधिक सात मात्रायें नपुंसक को पुंसक बना देंगी।

(२४६) कामवर्धक डाक्टरी योग

इस योग से गिनती के दिनों में वजन बढ़ जाता है, शरीर में रक्त उत्पन्न होकर चेहरा लाल हो जाता है, और काम शक्ति बढ़ जाती है। पूर्ण परीक्षित है।

योग—टिंक्चर फेरीपरक्लोर ५ बून्द, टिंक्चरनक्स-वोमिका ४ बून्द, लाइकर आर्सेनिकेलस २ बून्द, पानी २॥ तोला में मिलाकर प्रातः सायं भोजनोपरान्त आध घंटा बाद पिलाया करें। ८-१० दिन में ही गुण प्रकट हो जायेगा।

(२४७) शक्तिदा (ताक़त)

ह० अब्दुल रहीम साहब जमील के चिकित्सालय से विज्ञापन द्वारा बिक रही है। चूंकि हकीम साहब हमसे निःसंकोच भाव से योग मांग लिया करते थे अस्तु उन्होंने इस योग को बताने में भी कोई हीला हवाला नहीं किया।

योग—एक्सट्रेक्ट डामियानी लिक्विड ½ औंस, आयलफास्फोरस १ ड्राम, टिंक्चरकोका ४ ड्राम, टिंक्चर नक्सवोमिका २ ड्राम, टिंक्चर कैंथेरिडिश २४ बून्द, डायल्यूट फास्फोरिक एडिस ४ ड्राम, टिंक्चर फाइपरक्लोर

१ औंस, सादा शर्बत ३ औंस । सबको एक बोतल में मिला कर खूब हिलालें।

सेवन विधि—चाय वाला एक चम्मच भोजनोपरांत दोनों समय पिया करें। उत्तमांगों को अतीव शक्तिदायक, रक्तोत्पादक, तथा प्रमेह, शीघ्रपतन व स्वप्नदोश नाशक है।

(२४८) रजतावलेह

यह अवलेह देहली के औपधालयों से अत्यधिक बिकता है और अपने अद्भुत गुणों के कारण अद्वितीय माना जाता है। यह काम शक्ति को बढ़ाकर चित्त को प्रसन्न कर देता है।

योग—रजतपत्र ५ तो०, अम्बर शुद्ध १ तो०, कस्तूरी १ तोला, मिश्री २८ तोला, शहद २८ तोला। पहिले मिश्री व शहद का कवाम करके अम्बर और कस्तूरी को किसी अर्क में खूब बारीक घोंटें और उसमें मिलादें। तत्पश्चात् रजतपत्र मिला कर प्रसिद्ध विधि से अवलेह बनालें। और ३ मा० से ५ माशा तक आधा पाव अर्क गावजवाँ के साथ सेवन कराएँ। कामोदीपक, हृदय पौष्टिक, अति स्वादिष्ट एवं सुगन्धित वस्तु है।

(२४६) स्वर्णावलेह

पहिले यह अवलेह बड़े २ धनियों व राजाओं

को बना कर दी जाती थी, अब देहली के अनेक दवा-खानों से विज्ञप्त हो रही है।

योग—स्वर्णपत्र, कस्तूरी, अम्बर प्रत्येक १ तोला, मिश्री, मधु प्रत्येक २८ तो०। उपरोक्त विधि से अवलेह बनालें। और ३ माशा से ५ माशा तक अर्क बेदमुश्क या किसी अवलेह में मिला कर खिलाया करें। उत्तमांगों को पुष्ट कारक है तथा कामोद्दीपक भी है। वात-प्रकृति वालों के लिये विशेष लाभदायक है।

(२५०) अवलेह मोमियाई

असली मोमियाई का यह चमत्कारी गुण है कि मुर्गी की टूटी हुई टांग पर मोमियाई का लेप करके पट्टी बांधदी जाय, तो उसी समय जुड़ जायगी। किंतु आजकल असली मोमियाई कम मिलती है। अस्तु किसी विश्वास पात्र औषधालय से खरीदें। इस अवलेह का आधार उत्तम मोमियाई ही है। इसमें भी वही गुण पाए जाते हैं।

योग—मोमियाई असली ५ तो०, विशुद्ध मोती २॥ तोला, मायाशुत्तर एरावी २॥ तो०, अम्बर अशहब ६ मा०, स्वर्णपत्र ५० नग, मिश्री ३० तोला। मिश्री की चाशनी बना कर प्रसिद्ध विधि से अवलेह बनालें।

मात्रा—३ माशा प्रातः दूध के साथ।

लाभ—उत्तमांगों को बलदायक है, टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है, कमर पीड़ा के लिये विशेष हितकर है। मैथुन के पश्चात् जिन्हें दुर्बलता और थकावट प्रतीत होती है, वे यदि भोगोपरान्त सेवन करलें, तो दुर्बलता नहीं होने पाती।

विशेष सूचना—अवलेह बनाते समय अम्बर, केशर, कस्तूरी आदि किसी अर्क में बारीक पीस कर मिलालें। मोती पिष्टी बना कर और अवलेह बनने पर स्वर्णपत्र १-१ करके मिलाने चाहिये।

कुछेक अक्सीरी भस्में

नीचे कुछेक ऐसी अक्सीरी भस्में वर्णित हैं, जो कि मनुष्य के गुप्त रोगों पर चमत्कारी प्रभाव दिखाती हैं। भस्में बनाना बड़े परिश्रम का काम है। इसमें निरन्तर जुटा रहना पड़ता है। हाँ कुछ बूटियां अवश्य भस्म निर्माण में परिश्रम कम कर देती हैं, किन्तु वे बूटियाँ सन्यासी लोग वर्षों जंगलों पहाड़ों पर फिर कर ही प्राप्त कर पाते हैं। इसी कारण कभी २ उनकी सफलता लोगों को चकित कर देती है। भई परिश्रम का फल है।

अब यहां ऐसे २ प्रभावशाली योग लिखे जाते हैं, जो अथक परिश्रम से बनते हैं। किन्तु अपूर्व गुणकारी हैं :

देखें पाठक हमारी इस भेंट की क्या कदर करते हैं, जो कि किसी अन्य कृपण व्यक्ति से प्राप्त करना असंभव थी।

(२५१) विशेष स्वर्णभस्म

(मौ० अब्दुल वाहिद साहब के गुप्त भेदों का प्रकाशन)

उक्त सज्जन किसी विशेष विधि से स्वर्ण भस्म बनाते थे, जो वाजीकरण के लिए अकसीर थी। किन्तु वह किसी को बताते न थे। यहां तक कि अपने पुत्र को भी नहीं बताया, स्वयं बनाकर दिया करते थे। उनकी मृत्यु-परान्त ज्ञात हुआकि एक व्यक्ति को उन्होंने बतायाथा और उनसे मेरे एक मित्र की सहायता द्वारा मेरे पास पहुंच गया। भेंट करता हूं।

योग--१ तो० सोने का बुरादा किसी न घिसने वाली खरल में डालकर सेहआतशा अर्क गुलाब में खरल करते रहें, यहां तक कि पूरी ३ बोतल अर्क खरल करते करते सुखा दें। एक मास लग जायगा। इसे शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा--१ रत्ती प्रातः मक्खन या मलाई में रखकर खिलाया करें। नपुंसक व सुस्ती वाले को २१ मात्राएं पर्याप्त हैं। हृदय व मस्तिष्क को अपूर्व पुष्टि कारक है। कुछ ही दिन के सेवन से वह लाभ होता है कि मनुष्य चकित हो जाता है। दृष्टि को तीव्र करता है रङ्गत को निखारता है।

(२५२) सेह आतशा गुलाब अर्क

उपरोक्त भस्म में पड़ने वाला सेह आतशा अर्क गुलाब इस विधि से बनता है:—ताजा गुलाब के फूल पत्तों व डण्डी रहित पूरे ९ सेर लेकर ३ भाग करलें और १ भाग में १३ सेर पानी मिला कर भाप के द्वारा अर्क खींच लें। लगभग ८ बोतलें भरेंगी। फिर दूसरा भाग लेकर उसमें यह अर्क डालकर पुनः अर्क खींचें, अब ६ बोतलें भरेंगी। तीसरी बार तीसरा भाग फूलों में यह अर्क डालकर पुनः उसी प्रकार अर्क खींचें। इसबार ३-४ बोतल अर्क प्राप्त होगा। बस यही अर्क मिलाकर भस्म बनाएं।

(२५३) आग्नेय स्वर्ण भस्म

स्वर्ण का चूरा ६ मा०, किसी उत्तम खरल में डाल कर गुलाब पुष्प के ५ तो० रस में खरल करें फिर उसकी टिकिया बनाकर मिट्टी की दो कुठालियों में बन्द करके १ सेर उपलों की आंच दें। ठंडा होने पर निकाल कर फिर उसमें ५ तो० गुलाब पुष्प का रस खरल करते हुए सुखादें और आंच दें। इसी प्रकार १६ बार में पूरा १ सेर रस सुखादें और १६ आंचें दें। अंतिम आंच बजाय १ सेर के ५ सेर उपलों की दें। बस उत्कृष्ट लाल रङ्ग की भस्म बन जायगी। १ चावल से २ चावल तक मात्रा

१ तो० मधु के साथ चटाया करें। अत्यन्त वाजीकरण व पौष्टिक है।

विशेष सूचना--गुलाव पुष्पों का रस निकालने के लिए ताजा फूल लकड़ी के हमाम दस्ते में कूटकर मलमल के कपड़े से निचोड़ लें। वही रस प्रयोग में लाएं।

(२५४) स्वर्ण-द्रव

चिकित्सा शास्त्रों में स्वर्ण के अगणित गुण लिखे हैं। विशेष कर मस्तिष्क हृदय व यकृत को अति बल-दायक है। अस्तु वर्क और भस्म के रूप में प्रायः प्रयोग होता है। किन्तु द्रव रूप में इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। क्योंकि कण्ठ से उतरते ही रक्त में मिलकर अपना प्रभाव दिखाता है। शरीर के लिए अतीव पौष्टिक और क्षय रोगी के लिए अक्सीर है।

योग--सोने के वर्क ६ मा०, नमक का तेजाब ६ मा०, शोरे का तेज़ाब ४ मा०, किसी बोतल में सबको डाल कर हिलाएं। पड़े २ कुछ दिन में सोना पिघल जायगा। अब इसमें १० तो० अर्क गुलाब मिलावें। स्वर्ण द्रव तैयार हो गया। मात्रा ७ बून्द से १० बून्द तक अर्क गावज़वाँ में डालकर पिलाएं। दुर्बलता दूर करने को अक्सीर है।

चिकित्सा संसार में अपूर्व अद्भुत आविष्कार

(२५५) स्वर्ण शर्वत

शर्वत बादाम, सेव, अंगूर आपने बहुत पिए और सुने होंगे, किन्तु सोने का शर्वत कभी सुना भी न होगा। लीजिए हम आपको इसकी विधि बताते हैं। यह शर्वत वाजीकरण व पौष्टिक औषधियों में सर्वोपरि है और अद्वितीय गुणकारी है।

योग—टिंक्चर नक्सवोमिका १ तो०, फाइसल्फास १ तो०, उपरोक्त स्वर्ण-द्रव १ तो०, चीनी आधा सेर, पानी आधा सेर। पहिले चीनी और स्वर्ण-द्रव को पानी में मिलाकर मन्द २ आंच पर चाशनी बनाएं। फिर उसमें अन्य औषधियां डालकर उतार लें और ठन्डा करके शीशी में रख लें। नित्य भोजनोपरांत २ घन्टे बाद ४ मा० पिलावें।

(२५६) स्वर्ण क्वाथ

यह भी एक विलक्षण योग है, जो कि परम लाभ-दायक है। यह विधि किसी पुस्तक में नहीं पाई गई, अपितु एक हकीम मुहम्मद, यूसुफ साहब का आविष्कार है सोने की डली लेकर उसे पानी में जोश दें। जब आधा पानी जल जाय तो उतार कर ठन्डा करके पिलावें। और अद्भुत लाभ प्राप्त करें।

(२५७) अनुपम रजत

यह योग ह० अब्दुल अज़ीज़ साहब का है। इसका गुण यह है कि ७ मात्राएं सेवन कर लेने से आजन्म बाल सफेद नहीं होते। अन्य भस्मों से अधिक महत्वपूर्ण और गुणप्रद है।

योग—१ तो० चांदी की डली लेकर कूट २ कर ढले पैसे जैसी बनालें और उसे काले साँप के मुँह में रख कर सीं दें। फिर साँप की लम्बाई के बराबर गढ़ा खोद कर उसे सीधा लिटा दें और उस पर थोड़ा २ कीचड़ डाल कर ढांप दें। फिर भेड़ और बकरियों की मेंगनियों की आच ३ मन की इस प्रकार दें कि दुम की ओर कम और सिर की ओर अधिक। सांप की आकृति अनुसार मेंगनी डाल कर आग दें और ठन्डी होने पर चांदी निकाल लें। जो फूल कर खील बन गई होगी।

मात्रा—१ चावल मलाई में लपेट कर खिलाएँ। ७ मात्राओं से ही पर्याप्त लाभ होगा। नपुंसकता व कुष्ट की एकमात्र औषधि है। बालों को आजन्म श्वेत नहीं होने देगी।

विशेष सूचना—सर्प ऐसा हो जिसका सिर न कुचल गया हो, क्योंकि सर्प विष ही प्रमुख वस्तु है। दूसरे

अग्नि निर्जन स्थान में दी जाय, क्योंकि इसका धुआँ विषैला होता है।

(२५८) रौप्य सत्व

शायद रौप्य सत्व बनाने का योग आपने कभी न सुना होगा, यह अति उत्कृष्ट वस्तु है, जिसमें चांदी को इतना कोमल बना दिया जाता है कि सत्व बन कर उड़ जाता है। यह योग स्व० ह० अजमलखां साहब की हस्त लिखित संचिका से प्राप्त किया गया है। योग बड़ा ही गुणप्रद और अद्वितीय है।

योग—रौप्यपत्र १ तो०, शुद्धपारा १ तो०। दोनों को खरल में डाल कर असली अंगूरी सिरका में इतना खरल करें कि मक्खन के समान हो जाय। फिर ३ माशा नौशादर मिला कर खरल करें। और सराव सम्पुट करके प्रसिद्ध विधि से सत्व उड़ालें। फिर जो द्रव्य तली में शेष रह जाय, उसे सत्व में मिला कर पुनः अंगूरी सिरके में खरल करें और पूर्ववत् सत्व उड़ावें और इसी प्रकार ७ बार करें। सब सत्व उड़ कर सराव में जा लगेगा।

मात्रा—२ से ४ चावल तक मक्खन में खिलाएं। अत्यधिक वाजीकरण और शक्तिदायक सिद्ध होगा।

(२५९) रजत-द्रव्य

चांदी के वर्क ३ माशा, तेजाब शोरा ६ माशा, दोनों को शर्वती रंग की शीशी में भर कर रख दें। कुछ ही देर में हल हो जायेंगे अब इसमें १२ छटांक अर्क गुलाब मिलाकर रखलें।

मात्रा—१० बूँद १ तोला पानी में मिला कर पिलाएँ। स्नायु व हृदय को पुष्ट करता है और नपुन्सक शक्ति को बढ़ाता है।

(२६०) रजती फौलाद भस्म

चांदी का बुरादा २ तोला, फौलाद का बुरादा ३ तोला उत्तम खरल में डाल कर खटकल बूटी के रस में ८ घन्टे निरन्तर बलवान हाथों से खरल करें और सराव सम्पुट करके १० सेर उपलों की आँच दें। इसी प्रकार हर बार निकाल कर ८ घन्टे खटकल बूटी के रस में खरल करके आँच देते रहें। यहां तक कि मक्खन जैसी कोमल भस्म हो जाय। यदि खरल अच्छी तरह करते रहें तो ८ या १० आंचों में बन जायगी। तत्पश्चात् उपरोक्त विधि से कन्धारी अनारों के रस में खरल करके ७ बार अग्नि और दें। अपूर्व भस्म तैयार हो जायगी।

मात्रा—आधी से एक रत्ती तक मक्खन या मलाई

में दें। उत्तम अवचवाँ और यकृति को बल देती है। चेहरे को गिनती के दिनों में लाल कर देगी। जो सेवन करेगा, इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करेगा।

(२६१) ताम्र-भस्म (तामेश्वर)

एक प्रसिद्ध औषधालय से ६६) तो० विक रहा है। यह पुन्सक शक्ति को जागृत करके वाजीकरण शक्ति को बढ़ाने में अद्वितीय औषधि है।

योग—एक दवा पैसा लेकर ऊपर ३ माशा कलई का बारीक पत्र लपेटदें फिर दूब की जड़ की पाव भर लुगदी बना कर उसके मध्य में रख कर २५ सेर उपलों की आंच दें। भस्म हो जायगी। इस भस्म को खरल में डाल कर ३ माशा संखिया मिला कर घीक्वार के अर्क या दूध में ३ घण्टा खरल करते और आंच देते जावें। इस प्रकार कम से कम १४ आँचें अवश्य दें।

मात्रा—१ से २ चावल मक्खन या मलाई में दिया करें। सेवन काल में दूध घी खूब खिलायें। अपूर्व स्तम्भक औषधि है। गया बीता नपुन्सक भी मर्द बन जाता है।

शिंगरफ (हिंगुल) की भस्में

शिंगरफ की भस्म यदि उचित विधिवत् बनाई जाय, तो इससे बढ़ कर बाजीकरण औषधि अन्य नहीं। किन्तु

सरल विधियों से बनी शिंगरफ़ भस्म इतनी गुणकारी नहीं होती। यहां वे सन्यासी विधियाँ अंकित की जाती हैं, जो बहुत कम लोगों को ही सुनने को मिली होंगी।

(२६२) स्थाई स्वर्णिम शिंगरफ भस्म

इस भस्म को नागपुर के हाफ़िज रुक्नुद्दीन बनाते थे। यह अत्यधिक कामोदीपक और सुनहरी रंग की होती थी। आप रूढ़िवादी होने के कारण किसी को योग बताते न थे। १०० वर्ष की आयु हो जाने पर एक व्यक्ति के आग्रह से उन्होंने बता दिया और उन से प्राप्त करके वही योग पाठकों को भेंट किया जाता है।—

योग——शिंगरफ़ रूमी १ तोला की डली लेकर आधा सेर बारीक पिसे नमक के मध्य में रख कर कढ़ाई के नीचे आग जलावें। यहां तक कि नमक पर तिनका रखते ही जल उठे। तब आग बन्द करदें। और ठंडा होने पर सावधानी से नमक तोड़ कर शिंगरफ भस्म निकाल लें तथा पीस कर सुरक्षित रखलें।

मात्रा——१ रत्ती मक्खन में लपेट कर खिलायें। अपूर्व बाजीकरण व स्तम्भक है। रंग निखारती है, कटि पीड़ा के लिए लाभप्रद है।

२६३ स्वरंग शिंगरफ भस्म

यह भस्म शिंगरफ के रंग की ही बनती है। किन्तु

गुणों में बढ़ चढ़ कर ही है। गए बीते नपुंसक भी पुन्सक बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त अर्धाङ्ग, अर्दित और आमवात के लिए भी लाभकारी है।

योग—शिंगरफ की लगभग १५ तोला की डली लेकर चारों ओर कच्चे धागे से लपेट दें। फिर निम्न औषधियों की लुगदी बनावें—काले तिल १ सेर, भिलावा १ सेर, गूँजा सफेद आधा सेर, अखरोट की गिरी आधा सेर कनेर सफेद के जड़ की छाल पावभर, कुचला चूर्ण १ तो०, बच्छनाग ५ तोला, संखिया १ तोला। पहिले तेल वाली चीजों को कूट कर लुगदी बनाएँ, फिर सूखी औषधियों को पीस कर मिलादें और सारी औषधि के ३ भाग करें। एक भाग के बीच में शिंगरफ की डली रखकर नीचे तेज आँच जलाएँ। ताकि तेल को आग लग जाय और तेल व लुगदी बिल्कुल जल जायं। जब धुवाँ निकलना बन्द हो जाय, तो ठंडा करके शिंगरफ की डली निकालें और लुगदी के दूसरे भाग के नीचे रखकर उपरोक्त विधि से अलसी के तेल में रख कर आग जलाएँ। इसी प्रकार तीसरी बार भी करें। हिंगुल भस्म बन जाएगी किंतु रंग में अन्तर न पड़ेगा। इस भस्म को ३दिन रूह बेदमुश्क में घोंट कर शीशी में रखलें और २ से ४ चावलतक मात्रा

मलाई में लपेट कर खिलाएँ । कतिपय मात्राएं ही नपुंसक को पुन्सक बना देंगी ।

(२६४) शिंगरफ भस्म की सर्वोत्तम विधि

यह भस्म की विधि एक मित्र से प्राप्त करके मैंने कई रोगियों पर अनुभव की । एक वृद्ध अर्दित रोगी जो चलने फिरने से भी विवश था और उनके चिकित्सकों ने असाध्य कह कर छोड़ दिया था, मेरे पास आया, और ईश्वर कृपा से इसी भस्म से एक सप्ताह में ठीक होकर घर चला गया अब यह हमारी फार्मेसी की प्रचलित भस्म है । जो कि ५) माशा के भाव बिक रही है । बाजीकरण और स्मरणशक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है ।

योग—गाय का दूध ५ सेर, आक के पत्ते का रस २ सेर, लाल अरंड के पत्तों का रस २ सेर, धतूरे के पत्तों का रस २ सेर, आम्बा हल्दी का चूर्ण आधा सेर, भिलावे का तेल ६ छटाँक, मालकंगनी का तेल ६ छटाँक, घी २ सेर, गेहूं की मैदा ३ सेर, ईंधन आवश्यकतानुसार ।

निर्माण विधि—शिंगरफ की २ तोला की डली लेकर ५ सेर गौ दुग्धमें लटका कर नीचे मन्द २ आँचदें । यहाँ तक कि दूध की रबड़ी बन जाए । फिर शिंगरफ की डली को निकाल कर आक के पत्तों के रस में पकावें । यहां

तक कि बिल्कुल गाढ़ा हो जाय। फिर लाल अरण्ड के पत्तों के रस में पकावें। फिर धतूरे के पत्तों के रस में पकावें यहां तक कि पानी सूख जाय (डली कढ़ाई को न छू सके) अब डली को निकाल कर रेशम के तार लपेट कर छुपादें और फिर उसे भिलावे के तेल में तर करके आम्बा हल्दी के चूर्ण में लथपथ करदें और गेहूं के गून्दे हुए मैदे में गोला सा बना कर कड़कड़ाते हुए घी में छोड़ दें। जब आटे का रंग लाल हो जाय, तो गोले को निकाल कर गर्म २ ही तोड़ कर शिंगरफ की डली निकाललें और माल कंगनी के तेल में डुबोदें। फिर आंबा हल्दी के चूर्ण में डालदें। इसी प्रकार बारी २ से एक बार भिलावे के तेल में और एक बार मालकंगनी के तेल में तर करके आँबा हल्दी का चूर्ण लपेट कर मैदे के गोले में रख कर १२५ बार घी में पकावें। अत्यन्त उत्कृष्ट भस्म बन जाएगी।

सेवन विधि—२ चावल से ४ चावल तक मक्खन या मलाई में दिया करें। अत्यन्त बाजी करण स्तम्भक, पौष्टिक तथा लकवा फालिज आदि के लिये बहुत ही लाभदायक है।

(२६५) बाजीकरण अक्सीर शिंगरफ भस्म

यह भस्म एक विशेष सन्यासी विधि से ऊपाकेंण की

बनती है। और इसकी एक मात्रा ही आजन्म के लिए वाजीकरण औषधियों से मुक्त कर देती है। ह० डासूराम जी डेरागाजी खाँ वालों ने १०० वर्षीय वृद्ध सन्यासी जो देखने में १८ वर्षीय युवक और ४ स्त्रियों व २४ बच्चों का बोझ उठा रहा था, से प्राप्त करके हमें सानुग्रह प्रदान किया है। इस योग में विशेषता यह है, कि जब सारी इन्द्रियाँ शिथिल हो जायँ, वृद्धावस्था का अधिकार छा जाए, तभी इसे सेवन करना चाहिये। इसकी एक ही मात्रा बिजली की भांति नस २ में दौड़ कर शक्ति उत्पन्न कर देती है। और वृद्धों को पुनः युवक बना देती है। इसके सेवनोपरान्त कोई रोग पास भी नहीं फटक सकता। आपने सैकड़ों योग पढ़े लिखे होंगे, किन्तु ऐसा उत्तम योग कहीं न मिला होगा। अकेला ही लाख रुपये का योग है।

किन्तु सन्यासी जी के कथनानुसार ५ सेर दूध और ५ सेर घी अपने पास रख लेना आवश्यक है अन्यथा यह औषधि अपनी उग्रता से सेवन करने वाले को मार देगी।

योग--शिंगरफ रूमी १ तो० की डली लेकर १ सेर गाय के दूध में दोला यंत्र से निधूम मन्द २ आंच दें अर्थात् एक छोटा सा गढ़ा खोदकर उसमें थोड़ी सी बकरी की मेंगनी डालकर जलादें। जब धुआँ बन्द हो जाए, तो उस पर दोला यंत्र से पकावें। जब आग ठण्डी हो जाय,

तो दूसरा गढ़ा खोदकर उसी विधि से पकावें। यह क्रिया ४ पहर तक करें। फिर पोटली निकाल कर दूसरे वस्त्र में बांधें और दूसरे दिन पुनः उसी प्रकार ४ पहर पकावें। पहला दूध भूमि में गाड़ दें। यदि बर्तन मिट्टी का हो, तो नया बदलें। यदि पीतल का हो, तो नया कलई किया हुआ लें। दूसरे दिन उसे खूब साफ कर लिया करें। इसी प्रकार १० दिन तक नित्य करें और दूध भूमि में गाड़ते रहें। इसके बाद पी लिया करें, अत्यन्त पौष्टिक होगा। इसी प्रकार ४० दिन तक यह क्रिया करें। तत्पश्चात् शिंगरफ निकाल कर एक कपरोटीकी हुई चीनी की प्याली में रखें और कपरोटी सूखने पर कोयलों की आँच पर रखें, तथा खरगोश के गले के रक्त का चोया दें। इसी प्रकार ४० खरगोशों के गले के रक्त का चोया देने से शिंगरफ का रङ्ग सूर्योदय जैसा हो जायगा। यही तैयार शुदा अक्सीर है।

सेवन विधि--आधा चावलमात्रा मक्खन में लपेटकर निगल लें। थोड़ी देर बाद गर्मी व शुष्कता प्रतीत होगी। तभी पाव भर दूध पीलें। दूध पचते ही फिर गर्मी बढ़ेगी. तब पावभर घी पी जावें, फिर जब खुश्की प्रतीत हो तो पावभर दूध पीलें। इसी प्रकार क्रमशः दूध व घी पीते रहें और ५ सेर दूध व ५ सेर घी समाप्त कर दें। और उसका

कोई अंश भी मलमूत्र बने बिना शरीर का अंश बन जायगा और साथ ही ऐसा प्रतीत होगा कि शरीर में अपूर्व शक्ति बढ़ गई है।

(२६६) बहुमूल्य शिंगरफ भस्म

यह योग बाबा शोभाराम जी द्वारा प्रदत्त है। इसकी तीन मात्राएं सेवन कर लेने से ही आजन्म शक्ति नहीं मिटती। अति सुगम योग है।

योग--शिंगरफ रूमी २ तो० की डली लेकर काले सर्प के मुख में रखकर उसके मुँह को धागे से सीं दें और मुख पर कपरोटी कर दें। फिर एक लम्बी खाई खोदकर उसमें कण्डे चुन कर सर्प को ऊपर से बिठा दें। किन्तु उसके सिर के नीचे ऊपर कोई उपला नहीं होना चाहिए। फिर सर्प के ऊपर भी उपले चुन कर आग लगा दें, ताकि सांप बिल्कुल जल जाय। किन्तु आग सिर तक न पहुंचे। दूसरे दिन निकाल कर दूसरे सर्प के मुख में रख कर आग दें। और ऐसे ही तीसरे दिन भी। फिर शिंगरफ को निकाल कर सुरक्षित रखें। मात्रा—१ चावल मक्खन में रख कर खिलाएं। यदि नशा प्रतीत हो, तो घी खूब खिलाएं। तीन मात्राएं आजन्म के लिए पर्याप्त होंगी

विशेष सूचना—यह क्रिया आबादी से कहीं दूर करनी चाहिए, क्योंकि इसका धुआँ बड़ा विषैला होता है।

(२६७) शिंगरफ तैल

शिंगरफ ५ तो०, संखिया लाल ३ मा०, वीर बहूटी २ तो० मुर्गी के अण्डे २० । पहिले संखिया व वीर बहूटी को खरल करके अण्डों की पीतता मिला कर लोहे की कड़ाही में डालें और नीचे आग जलाते रहें। किन्तु चम्मच से दवा को जल्दी २ उलटते पुलटते रहें। थोड़ी देर में तेल अलग होना प्रारम्भ होगा। जब तेल निकल आए, तो कड़ाही उतार कर ठण्डी होने पर तैल निथार कर शीशी में भर लें और कड़ाही में बची हुई दवा की १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

सेवन विधि—१ गोली प्रातः दूध से खिलाया करें। परम लाभप्रद है। तेल १ सींक पान पर लगाकर खिलाएं, और तिला की भांति मालिश भी करके ऊपर से पान का पत्ता बांध दिया करें। कतिपय दिनों के प्रयोग से ही अत्यधिक लाभ होगा। मृत नसों में शक्ति का पुनः संचार हो जायगा।

(२६८) अपूर्व पारद भस्म

अद्भुत कामोद्दीपक तथा कुष्ठ रोग के लिए अक्सीर है। (ह० महबूब आलम साहब Ist Class Magistrate द्वारा)

योग--शुद्ध पारा १ तोला, आमलासार गंधक ऊँट के रङ्ग की २ तो० । पहिले एक मिट्टी के प्याले का पेंदा कपड़मिट्टी करके उसमें पारा डाल कर ऊपर गंधक पीस कर रखें । उसके ऊपर नौशादर देशी २॥ मा० पीसकर रखें । जब गंधक गलने लगे, तो प्याला आग से अलग करके पत्थर से घोटें और पुनः आग पर रखें । जब गंधक गलने लगे तो फिर आग से उतार कर पत्थर से घिसें । इसी प्रकार ७ बार करें । नौशादर केवल पहिली बार डालना ही काफी है । सातवीं बार जब कि प्याला गर्म ही हो, तो दवा निकाल कर शीशी में डाल दें अन्यथा ठण्डी होने पर दवा प्याले से चिपट जायगी । दवाई काले रङ्ग की तैयार होगी ।

सेवन विधि-इलायची दाना, बादाम की गिरी, प्रत्येक १ तो०, उपरोक्त औषधि २ मा०, मिश्री कूजा ३ तो०, सबको पीस कर चूर्ण बनाकर १५ पुड़ियां बनालें । और १ पुड़िया दूध के साथ बासी मुँह प्रातःकाल सेवन करें ।

पथ्यापथ्य--केवल खटाई से परहेज करें । ४० दिन में अपूर्व कामशक्ति बढ़ जायगी, कुष्ठ के रोगी को ४० दिन नमक बिल्कुल नहीं खाना चाहिए । इसी प्रकार संधिवात आदि रोगों को भी लाभदायक है ।

नपुंसकता की बाह्य चिकित्सा

गत पृष्ठों में नपुंसकता के खाद्य योग लिखे जा चुके हैं, अब कुछेक बाह्य चिकित्सा के योग लिखे जाते हैं, जो हस्तमैथुन आदि के रोगियों के लिए अत्युत्तम सिद्ध होंगे।

(२६९) तिलाए वाजिद अली

(बिना छाला पड़े नसें जीवित करने वाली अपूर्व तिला)

रीछ की चर्बी, शेर की चर्बी, साण्डे की चर्बी, चिड़िया के सिर का मग़ज, जङ्गली कबूतर की बीट, मूली के बीज प्रत्येक २ तो०, लेकर सब को बारीक पीसलें और १० तो० तिली के तेल में मिला कर खूब घोंटें, यहां तक मक्खन के समान कोमल हो जाय। बस तिला बन गया। उसे चौड़े मुँह की शीशी में रखलें। रात के समय गुप्त अंग पर अच्छी तरह मालिश करके सो जाएँ। इससे बिना किसी कष्ट के कुछ ही दिनों में मुर्दा रगों में जान पड़ जाती है।

(२७०) अनुपम तिला

पारा ५ तो०, पान नग १०० का रस। पारे को खरल में डाल कर थोड़ा २ पान का रस शामिल करके यहां तक खरल करें कि सारा रस सूख जाय। फिर आवश्यकतानुसार शहद उसमें मिलालें। और मलमल की एक पट्टी पर लेप करके गुप्ताङ्ग पर लपेट कर कच्चा धागा

बांध दें। इससे जल बहुत निकलता है, किन्तु छाला आदि नहीं पड़ता। उत्तेजक अत्यधिक है। विना किसी कष्ट के ही १० दिन में ठीक कर देता है।

(२७१) तिला संखिया

यह योग बाबू दुर्गाप्रसाद जी डि० स्टेशन मास्टर द्वारा प्रदत्त है।

योग—संखिया सफेद १ तोला, संखिया काला २ तोले; दोनों को बारीक पीसकर १० तो० आक के दूध में खरल करें। जब गोली बांधने योग्य हो जाय तो उसमें ओटोमुश्क फ़ोस्फ़ोस एल्कोहोल १ तो०, लौंग का तेल, २ तो०, मालकङ्गनी का तैल १० तो० मिला कर तीन दिन निरंतर खरल करते रहें, फिर शीशी में भरकर धूप में रखदें। २४ घन्टे में निथर कर तेल ऊपर आ जायगा। उसे छानकर दूसरी शीशी में बन्द करदें। यही तिला संखिया है। नीचे जमा हुआ द्रव्य डिबिया में बन्द करके उस पर नं० २ की चिट लगादें। यह बहुत तेज होता है।

यदि रोगी की दशा अधिक खराब न हो तो नं० १ प्रयोग करना उचित है। प्रति दिन सींवन और सुपारी को छोड़कर मालिश करें और अरण्ड का पत्ता बांध दिया करें। यदि दशा रद्दी हो तो नं० २ में से थोड़ी सी दवा लेकर सींवन और सुपारी को छोड़ कर मालिश करें और

ऊपर पान का पत्ता बांध दें। इस प्रकार नं० २ का ३ दिन प्रयोग करके फिर नं० १ का ७ दिन प्रयोग करें। इससे गया बीता नपुँसक भी पुँसक बन जाता है।

(२७२) एक रात में पुन्सक बना देने वाला चमत्कारी तिला

यह तो नहीं कहा जा सकता कि इससे हर प्रकार का नपुँसक भी मर्द बन जाता है, किन्तु अधिकांश व्यक्तियों को एक ही रात में लगाने से लाभ हो जाता है। दवा बनाने का भी कष्ट नहीं है। किसी अँग्रेजी औषधि विक्रेता से 'लाइकर एसीसेप्टीक्स' खरीद लें। सस्ती ही मिल जाती है, इसकी फुरेरी भिगोकर इन्द्रिय के ऊपर सुपारी को छोड़ कर लगादें। लगाते ही लगाते सूख जायगी। इसी प्रकार पुनः लगादें। वह भी सूख जायगी। फिर तीसरी बार भी लगाएं और सो जाएं। प्रातः एक दो छाले उठे हुए होंगे, उन्हें सुई से छेद कर पानी निकालदें और बारीक मलमल का कपड़ा लपेट दें। ताकि शेष पानी को सोखले। फिर ८-१० दिन तक जला हुआ घी या वैसलीन लगाते रहें। ठीक हो जायगा। इससे प्रथम रात्रि में ही उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है।

नोट—पहिले अहानिकर तिलाओं के योग लिखे

गए हैं, जिनसे न तो फुन्सियां ही उत्पन्न होती हैं और न छाला ही पड़ता है, अपितु बिना किसी कष्ट के गुप्तांग में शक्ति उत्पन्न हो जाती है। प्रथम उन्हीं योगों को प्रयोग में लाना चाहिए, यदि उनसे सफलता न मिले तो छाला डालने वाली तिलाएं प्रयोग करें। प्रारम्भ में ही तेज तिलाएं प्रयोग करना हानिकारक होता है।

(२७३) बिजली के समान प्रभावकारी विद्युत तिला

योग--मीठा तेलिया १ तो०, अकरकरा ६ माशे, सिन्दूर ३ माशे, आक का दूध ४ तोले, गाय का घी ४ तो०, पहिली दोनों वस्तुओं को बारीक पीस कर फिर सबको मिलाकर एक लोहे की कढ़ाई में डालें, फिर नीम के एक ऐसे डण्डे से, जिसके सिरे पर तांबे का पैसा लगा हो, निरन्तर १२ घन्टे घोंटें, फिर किसी डिबिया में संभाल कर रखलें। सींवन व सुपारी छोड़कर ६ रत्ती दवा इन्द्रिय पर लगावें और ऊपर पान का पत्ता बांधदें। प्रातः खोलदें, ३-४ दिन लगाने से फुन्सियां दृष्टिगत होंगी, उसी दिन से लगाना बन्द करदें और चमेली का तेल या जलाभया घी लगाते रहें। प्रथम बार में नहीं, तो दो बार के प्रयोग से गया बीता नपुन्सक भी निश्चय ही मर्द बन जाता है।

(२७४) यौवनदात्री तिला

यह तिला अपने अद्भुत गुणों के कारण अक्सीर समझी जाती है। एक सप्ताह के लगाने से ही रगों का फूलना, पट्ठों की कमजोरी आदि दोष मिट जाते हैं।

योग—दार चिकना, रस कपूर, संखिया काला, गुंजा सफेद, १-१ तो०, सबको बारीक पीस कर कपड़े में बांधलें, और कलईदार देगची में ४ सेर गौ दुग्ध के मध्य लटका कर मन्द २ आंच पर पकावें। पकते २ जब आधा दूध रह जाय, तो उतारलें और जामन लगाकर दही बनावें तथा बिलो कर मक्खन निकाल कर उसका घी बनालें। यह घृत तिला है। रात को सोते समय सींवन सुपारी छोड़ कर मालिश करें। इसी प्रकार एक सप्ताह सेवन करते रहें। इसके सेवन से ऐसी शक्ति उत्पन्न होगी कि सहन करना दुष्कर हो जायगा। पान का पत्ता बांधने की आवश्यकाता नहीं है।

———

स्त्रियों के विशेष रोग

सृष्टि में स्त्री जाति का क्या महत्व है, आदि विषय छेड़ना तो समय नष्ट करना होगा, अस्तु यहां केवल स्त्रियों के उन विशेष रोगों का वर्णन किया जाता है, जिनसे उनका सौन्दर्य और स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। एक प्रदर रोग ही ले लीजिए, जो कि घुन की भांति उन्हें अन्दर ही अन्दर खाया करता है, प्रत्यक्षतः तो वे घर में चलती फिरती रहती हैं; किन्तु उनके चेहरे की चमक, सुन्दरता और त्वचा का रंग नष्ट हो जाता है। इसके अतिरिक्त ऋतु दोष, हिस्टीरिया आदि अनेक ऐसे कष्टप्रद रोग हैं, जो प्रायः उनके जीवन-सुख को नष्ट कर देते हैं। उनमें से अधिकांश रोगों का वर्णन प्रथम भाग में किया जा चुका है। कुछेक यहां लिखे जाते हैं।

(२७५) प्रदर नाशक अक्सीर

इस रोग के चिन्ह, कारण आदि प्रथम भाग में पढ़ें।

योग—दक्षिणी सुपारी १ छटाँक, कीकर की सूखी छाल आधा सेर। पहिले छाल को कुतर कर आधा सेर जल में भिगोदें और सुपारियों को साबत ही उसमें डालदें फिर ४ पहर उपरांत उबालें, जब थोड़ा सा पानी शेष रह जाय,

तो सुपारियों को निकाल कर छाया में सुखालें। और फिर बारिक पीस कर समभाग धायपुष्प का चूर्ण करके मिलादें और दोनों के बराबर मिश्री मिला कर रखलें। ६-६ मा० प्रातः सायं गौ दुग्ध के साथ दें।

(२७६) प्रदर नाशक वटी

यह योग, चाहे रोगिणी की दशा कैसी ही निराशा-जनक क्यों न हो, अतीव लाभ दिखाता है।

योग--हरे मांजू जिनमें छेद न हो, ६ छटाँक लेकर साबत उड़दों के साथ कढ़ाही में पानी डाल कर पकावें। पकते २ जब मांजू नरम हो जाएं, तो निकाल कर छाया में सुखालें, और उड़दों को जमीन में दबादें। क्योंकि उनमें विष उत्पन्न हो जाता है। मांजू सूखने पर बारीक पीस कर शीशी में भरलें। १ रत्ती मात्रा मक्खन या मलाई में खिलाया करें। कुछ दिनों में ही आराम हो जाता है।

(२७७) सुखदायक वटी

(ह० वजीरचन्द नन्दा पैंशनर जम्मू द्वारा प्रदत्त)

यह विशेष गुप्त योग अति सरल है, और कभी भी निष्फल नहीं जाता। मासिकधर्म के कष्टों के लिये अक्सीर है, और अनेक वार का परीक्षित है।

योग--जंगली अखरोट की मिंगी यथावश्यक लेकर बारीक करलें, और आवश्यकतानुसार पुराना गुड़ मिला कर चने के बराबर गोलियां बनालें। गुड़ अधिक पुराना न हो। और गोलियाँ बनने योग्य भरको मिलाएं। यदि मासिक धर्म की पीड़ा अत्यधिक हो, तो २ गोली घी मिले हुए गर्म दूध के साथ दें। दूध में चीनी मिलालें। इससे आराम तो उसी समय हो जायगा, किन्तु ३ दिन तक दोनों समय सेवन करना उचित है।

(२७८) सुगम औषधि

रेवन्द चीनी १ तो०, नौशादर ६ मा०, शोरा ३ मा० सबको पीस कर रखलें।

मात्रा--२ रत्ती गरम पानी से १-१ घन्टे अन्तर से आराम होने तक देते रहें। ३-४ मात्राएँ ही पर्याप्त आराम देंगी। इसके अतिरिक्त यह वृक्क शूल की भी उत्तम औषधि है।

(२७९) रजस्राव जारी करने की औषधि

शिंगरफ रूमी और नमक लाहौरी बराबर २ लेकर खरल करें। २ से ४ रत्ती तक गरम दूध या गर्म पानी से दिन में २ बार दें। और दूध या खीर के सिवा और कुछ खाने को न दें। शीघ्र ही बन्द मासिकधर्म खुल जाता है।

(२८०) ऋतु स्त्रावक शर्वत

सोया के वीज, मूली के वीज, काशनी के बीज, काशनी की जड़, सौंफ, सौंफ की जड़, वीज अजमोद, जड़ अजमोद, खरबूजा के बीज, पालक के बीज, कुल्थी के वीज प्रत्येक २-२ तोला। सवको तीन सेर पानी में पकाकर ३ पाव पानी शेष रहने पर छान लें और ३ पाव मिश्री मिलकर विधिवत् शर्वत वनालें।

मात्रा---५ तो० शर्वत गर्म जल में मिलाकर १ मा० शोरा की पुड़िया मुँह में डाल कर ऊपर से शर्वत पिलादें। मासिकधर्म जारी करने और कष्ट से आना दूर करने की अक्सीर है।

(२८१) तुऋ स्त्रावक बत्तियां

इन बत्तियों से १ घन्टे में बन्द मासिकधर्म खुल जाता है।

योग---खाने का तम्बाकू, एलुआ, नौशादर, सीप का चूना, सबको बारीक पीस कर लम्बी २ बत्तियाँ बनालें और आवश्यकता के समय कॉस्ट्रायल में तर करके योनि में अन्दर रखें। आशा है कि ईश्वर कृपा से १ घंटे के अन्दर ही मासिक धर्म जारी हो जायेगा।

हिस्टीरिया Hysteria

इसे वायुगोला भी कहते हैं, क्योंकि इसकी रोगिणी एक गोला सा उठता हुआ अनुभव करती है। प्रायः अशिक्षित लोग इसे भूत-प्रेत की बाधा समझ कर झाड़-फूंक कराते रहते हैं। इसके चिह्न अपस्मार (मृगी) से मिलते जुलते हैं, अतः दोनों में अन्तर जानने के लिए चिन्ह लिखे जाते हैं।

हिस्टीरिया और मृगी में अन्तर

मृगी के दौरे में बिल्कुल होश नहीं रहता, अतः दौरे के समय की बातों का उसे कोई ज्ञान नहीं रहता, किन्तु हिस्टीरिया की रोगिणी को दौराकाल की सब बातों का ज्ञान रहता है। किन्तु वह मुँह से उन्हें कह नहीं सकती। हां दौरा दूर हो जाने पर सब बातें बता देती है।

मूल कारण

जीर्ण कोष्टबद्धता, पेट का अफरना, रंज और चिंता ग्रस्त रहने या किसी हानि के कारण घोर चिन्ताग्रस्त रहना, मासिक-धर्म का बन्द हो जाना, कष्ट से आना या काम-काज न करने वाली स्त्रियां प्रायः इसमें ग्रसित हो जाती हैं। अश्लील कहानियां पढ़ने या बुरे सिनेमा खेल देखने वाली जवान लड़कियां प्रायः इन रोगों में फँस जाती हैं।

पहिचान--प्रायः यह रोग १२ से ४० वर्षीय युवतियों में ही पाया जाता है। किसी को दौरा कुछ मिनटों का आता है और कईयों को घंटे का और किसी २ को कई २ दिन तक पड़ी रहना पड़ता है। विशेष कर मासिक धर्म होने के दिनों में अधिक होता है।

दौरे के चिन्ह--दौरा आने के पूर्व रोगिणी कूल्हे में पीड़ा अनुभव करती है, सिर में दर्द और नेत्रों से पानी जारी हो जाता है, चित्त सुस्त हो जाता है, आंखों के सामने अँधेरा सा छा जाता है।

पड़े हुए दौरे के लक्षण--पेट में एक गोला सा उठता है और ऊपर की ओर चढ़ कर गले में अटका हुआ सा प्रतीत होता है। जिसे रोगिणी बार २ निगलने की कोशिश करती है। किन्तु वह उसी प्रकार अटका हुआ सा प्रतीत होता है। क्षण-प्रतिक्षण दम घुटने सा लगता है। ग्रीवा अकड़ी सी हो जाती है। डकार अधिक आती है, हृदय धड़कने लगता है और रोगिणी चीख मार कर रोने लगती है, यदिखड़ी हो तो गिर पड़ती है, जी बहुत घब-ड़ाता है, अपनी बेचैनी दूर करने के लिए उठती है, कभी बैठती है, कभी लेटती है। गला रुँध जाता है। श्वांस-गति तीव्र हो जाती है, हाथ पैर ठन्डे हो जाते हैं, रोगिणी

जो मुँह में आए बके चली जाती है। सारांश यह कि बड़ा ही दुखदाई रोग है।

(२८२) हिस्टीरिया का डाक्टरी योग

(बाबू देवीदयाल गुप्ता अध्यक्ष गुप्ता एण्ड कं० टोहाना द्वारा)

उक्त सज्जन का यह विज्ञापित योग है, जो कि बड़ा ही लाभकारी है। इस रोग के लिए यह योग रामबाण है।

योग—पोटाशियम ब्रोमाइड ५ ग्रेन, टिंक्चर स्टील ३० बूंद टिंक्चर मसक ५ बूंद, टिंक्चर आसीफोटिडा ३० बूंद, । यह सब मिला कर १ मात्रा है। १ मात्रा नित्य सेवन कराएँ। पड़े हुए दौरा की दशा में दो बार सेवन कराएं। १० दिन में शर्तिया आराम हो जायगा।

(२८३) गर्भक योग

(प्रे०-ह० गुरवचनसिंह मु० जयसिंह वाला)

उक्त सज्जन लिखते हैं कि उनके औषधालय का यह दर्प्य योग है, जो शतप्रतिशत सफल और परीक्षित है। मैं इस योग को कदापि प्रकट न करता, किन्तु आपकी उदारता प्रथम भाग में देख कर मेरी कृपणता दूर हो गई, अस्तु, योग सेवार्पित है।

योग—शिवलिंगी के बीज १ तो०, कौंच के बीज २तो०, विदारीकंद १ तो०, हाथी दांत का बुरादा १ तो०,

केशर असली १ तो, अफीम शुद्ध १॥ तो० सबको पीस कर जल द्वारा चने के बराबर गोलियां बना कर रखलें।

सेवन विधि——मासिकधर्म आने के बाद प्रति दिन प्रातः दूध में घी और जलेबी डाल कर खिलाया करें और १ से २ गोली तक प्रातः सायं दूध के साथ दिया करें। इसी प्रकार ७ दिन सेवन कराएँ और सात दिन ही ऋतु दानलें। आशा है, प्रथम मास ही आशा पूर्ण हो जायगी। अन्यथा दूसरे मास में तो निश्चय ही।

(२८४) गर्भपात रोकने वाली अपूर्व औषधि

चन्दन पाऊडर

इस योग से ह० नूरुद्दीन कादियानी ४० साल से प्रयोग करके लाभ उठा रहे हैं। उनके चिकित्सालय का यह बहुप्रयुक्त योग है।

योग——लाल चन्दन, सफेद चन्दन, निम्बपत्र, हिना-पत्र, मुलहठी के पत्ते, मजीठ, नर कचूर, हिरमची, गेरू। सबको समभाग लेकर पाऊडर बनालें और १ से २ रत्ती तक पानी के साथ प्रातःकाल देते रहें। जो स्त्री गर्भावस्था में इसे बराबर सेवन करेगी उसे कभी गर्भपात न होगा और ईश्वर कृपा से पुत्र ही जन्माएगी।इसके अतिरिक्त रक्तदोष, फोड़ा, कण्डु आदि के लिए अकसीर है।

प्रसव-दुःख

प्रसवकाल स्त्री के लिए बड़ा ही कष्टप्रद व भयङ्कर होता है उस समय की तनिक सी भूल का दुष्परिणाम मृत्यु होता है आए दिन अशिक्षित दाइयों के हाथों सैकड़ों बच्चों व उनकी मातायें स्वर्ग सिधार जाती हैं। खेद है कि यह कार्य जितना ही आवश्यक है उतना ही इसमें लापरवाही बढ़ती जाती है। ग्रामीण लोगों में प्रसव के समय किसी व्यक्ति का डाक्टर, लेडी डाक्टर या नर्स की सहायता लेना गाँव भर की स्त्रियों की चर्चा का विषय बन जाता है। यहाँ प्रसव कष्ट से बचने के उत्तम योग लिखे जाते हैं।

(२८५) प्रथम योग

(श्री मोहनलालजी जैन इंजीनियर विजय नगर द्वारा प्रदत्त)

जब प्रसवकाल में घोर वेदना हो, और प्रसव न हो तो एपीका क्वाना का खालिस पाउडर १ मा० ठंडे पानी से दें। १५ मिनट में ही बालक का प्रसव हो जायगा। यदि न हो, तो १५ मिनट पश्चात् १ पुड़िया और दें। 'एपीका क्वाना' किसी भी Chemist अंग्रेजी औषधि विक्रेता से खरीद

...ीय शाही योग

... व्यक्ति का

केवल यही चिकित्सा करता था। चूंकि योग बड़ा ही प्रभावक था, अस्तु राजा महाराजा और नवाब उसे बुलाया करते थे और वह इसी योग से सुखमय जीवन बिताता था। डा० जे० ऐस० राय के सौजन्य से यह योग आज इन पृष्ठों की शोभा बन रहा है। मैं उनका चिर कृतज्ञ हूँ।

योग—कलमी शोरा ३ माशा, केशर ३ माशा, गुलाब जल ५ तो० में घोंट कर गर्म करके पिलाएं। आशा है तुरन्त सफलता मिलेगी। अन्यथा १५ मिनट पश्चात् पुनः दें। निश्चय ही सुख पूर्वक प्रसव हो जायगा। साथ ही इससे प्रसूति का ज्वर भी उतर जाता है और गर्भाशय के मल को तुरन्त निकाल देता है।

(२८७) सौन्दर्य दाता

प्रायः स्त्रियों के चेहरे पर छोटी २ फुन्सियां निकल कर काले दाग़ पड़ जाते हैं। निम्न योग को उपयोग करने से वे दाग़ दूर होकर त्वचा रेशम के समान निकल आती है।

योग—ग्लिसरीन ४ ड्राम, यूडी कोलन ४ ड्राम, सिम्पल टिंक्चर ऑफ़ बेन्ज्वाइन आधा ड्राम। सब औष-धियों को एक शीशी में भर कर हिलाएं और नित्य प्रातः मुख पर मला करें।

शिशु-रोग

शिशु रोगों के सम्बन्ध में प्रथम भाग में पर्याप्त लिखा जा चुका है। चूंकि बच्चे न अपने कष्ट को बोल कर ही बता सकते हैं और न ही किसी प्रकार समझा सकते हैं। इसलिए प्रथम भाग में बच्चों के रोगों को पहिचानने की कुछेक उत्तम बातें लिख दी गई थीं। उन्हें यहां पुनः लिखना अनावश्यक है। हां, कुछ नवीन उत्तमोत्तम योग भेंट करता हूं, जो निस्सन्देह अनमोल हैं।

(२८८) बाल शर्बत

यह शर्बत गुप्ता एण्ड कम्पनी टोहाना से अत्यधिक बिक रहा है। हमारा स्वयं का अनुभूत है। मेरे मित्र बाबू देवी दयाल ने अपना व्यापारिक हानि लाभ न देखते हुए मुझे यह योग भी प्रदान कर दिया।

योग—बांसा १ सेर, गावजवाँ पाव भर, गुलनीलोफर १ पा०, खूबकलां १० तो०, मुलहटी १० तोला, सरतान नहरी ३ तो०। सब को साफ करके चौगुने पानी में २४ घंटे भिगो रखें, फिर भबके से अर्क खींचलें, ताकि जो गर्म २ अर्क गिरे, वह कपूर से प्रभावित होकर बोतल में गिरे। ४ बोतल अर्क खींचकर बन्द करदें, फिर निम्न विधि से शर्बत तयार करें।

एक सेर जल में १ तो० अनबुझा चूना ४ घण्टे भिगो कर रखें, और फिर निथार कर इस पानी को बोतल में रखें।

उपरोक्त अर्क १ तोला, चूने का पानी १ बोतल, मिश्री १।। सेर, मिला कर प्रसिद्ध विधि से शर्बत तैयार करलें। और ठण्डा होने पर रोज कलर की कुछ बून्दें मिला कर बोतलों में भरलें। और १ मा० से ४ मा० तक आयु अनुसार दिया करें। नित्यः प्रातः सायं सेवन कराने से अजीर्ण, दूध डालना, हरे पीले दस्तों का आना, खाँसी, डब्बा, काली खांसी, सूखा रोग और दुर्बलता को मिटा कर गिनती के दिनों में बालक को हृष्ट पुष्ट बना देता है।

(२८६) लाल शर्बत

यह तब्बेजदीद वालों का विशेषातिविशेष योग है जिसे उन्होंने 'मकशूफ़ात' में प्रकट कर दिया। आप उदार व्यक्ति हैं, योग छुपाए नहीं रखते। भारत में बनने वाली बच्चों की रोग-रक्षार्थ अनेक टानिक औषधियां बन चुकी हैं, किन्तु लालशर्बत सर्वोत्तम है। आप यदि अपने बच्चों को फलते-फूलते और हृष्ट पुष्ट देखना चाहते हैं, तो इसे बना कर सेवन कराइए। बालकों को दूध उलटना, अति-सार, पेट अफरना, अपच, चुन्ने पड़ना, ज्वर, सूखा रोग

दांत निकलने के कष्टों आदि को दूर करने में यह अपना जवाब नहीं रखता।

योग—गुलनीलोफ़र, गावजवाँ के पत्ते, प्रत्येक ५ तो०, सफेद चन्दन का बुरादा १० तो०, अड़ूसा १० तो० चूने का पानी आधा सेर, नागफनी के फलों का रस पाव भर। पहिले अन्तिम दो वस्तुओं को छोड़ कर शेष को २ सेर जल में रात भर भिगो रखें। प्रातःकाल कलईदार देगची में डाल कर पकावें। आधा पानी जल जाने पर छान कर उसमें चूने का पानी मिला कर प्रसिद्ध विधि से शर्बत बनालें। ठण्डा होने पर नागफनी के फलों का रस तनिक गर्म करके मिलादें। इसके मिलते ही लाल रंग का शर्बत बन जायगा इसके गुण बता ही चुका हूँ। बस अपूर्व लाभदायक है।

नागफनी के फलों का रस—इस छत्तर थोहर, कफ चामार, नागफनी आदि विविध भागों से सम्बोधित किया जाता है। इसके लाल रङ्ग के पके हुए फल लेकर मलें और कपड़े से छान कर रस निकाल लें।

(२९०) सर्वश्रेष्ठ बाल पाल घुटी

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि बाल पाल घुटी १ से १२ वर्ष तक के शिशुओं को असंख्य रोगों में अमृतवत् है। इसीलिए देशभर में यह सुविख्यात है। जो

मनुष्य एक बार परीक्षा करता है वह अपने हर बच्चे को बाल पाल घुटी से स्वस्थ और निरोग रखता है। ज्वर, खांसी, दूध पटकना, पेट फूलना, पसली चलना, हरे पीले दस्त, खून पीप के दस्त, पेट के कीड़े, तृष्णा, रक्त-दोष, फोड़े फुन्सी आदि सभी शिशु रोगों के लिए अतीव लाभदायक है। दांत निकलने के समय के कष्टों से भी रक्षा करता है। आप भी अपने बच्चों को हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ रखने के लिए इसकी दो चार शीशियाँ अपने घर में रखें।

योग—सनाय की पत्ती ५ तो०, गुलबनफशा, गुलाब-पुष्प १-१ तो०, मगज अमलतास ५ तो०। सबको साफ करके ५ सेर पानी में जोश दें, और चौथाई जल शेष रहने पर निथार लें और गाद फेंकदें। फिर निथरे हुए क्वाथ को छान कर उसका आधा भाग शहद मिलादें, और शीशियों में भर लें।

सेवन विधि—१ दिन से १ वर्ष तक के शिशु को २०-२५ बून्द ५ से १२ वर्ष तक को ३० बून्द प्रातः सायं गर्म पानी में मिला कर पिलाएं। यदि दस्त आते हों तो ठन्डे पानी में मिला कर पिलाएं। विबन्ध के लिए दूनी मात्रा दें और थोड़ी दवा मसूड़ों पर मल देने से दांत आसानी से निकल आते हैं। सारांश यह कि हर रोग के

लिए रसायन है। ६ दिन दवा पिला कर ४ दिन बन्द रखें, ताकि बालक का स्वस्थ्य और भी बढ़े।

(२६१) शीतल पुड़िया

जब कि बच्चों के दाँत निकल रहे हों, तो यह पुड़िया उनके लिए चमत्कारी सिद्ध होती है। दूध पीते शिशुओं और बड़ी उम्र के बालकों के आमाशय सम्बन्धी रोगों यथा दूध उलटना, हरे पीले दस्त होना, आदि को भी लाभप्रद है। खसरा, ज्वर, काली खांसी आदि के आक्रमण से बचाने और रक्त को ठण्डा रखने के लिए प्रति तीसरे दिन १ पुड़िया देनी चाहिये।

योग–पोटाशियम क्लोरेट ७ भाग, मुलहठी चूर्ण ३ भाग, मिला कर ६-६ रत्ती की पुड़िया बनालें। तीन वर्ष से छोटे बच्चों को १ पुड़िया पानी में दें। जब दाँत निकल रहे हों, और अजीर्ण प्रतीत हो, तो तत्क्षण १ मात्रा दे देनी चाहिए। इंगलैण्ड की एक कम्पनी विज्ञापनद्वारा इसी पुड़िया का बड़ा बक्स २) ६८ नए पैसा में बेच रही है, जिसमें ४८ पुड़ियाँ होती हैं, और लागत अधिकाधिक ६ नए पैसे होती है।

—:०:—

विविध उत्तम योग

(२९२) दृष्टिवर्धक शर्बत

यह शर्बत नेत्र रोगों के लिए नितान्त लाभकारी है। सुंडी बूटी के पाव भर फूल लेकर रात को दो सेर पानी में भिगो दें और प्रात आग पर पकावें। ३ पाव पानी रह जाने पर छान कर ३ पाव मिश्री मिलाकर शर्बत बनालें और नित्य प्रातः सेवन किया करें।

(२९३) अहानिकर रेचन

(ह० हरीसिंह वैद्यराज द्वारा प्रेषित)

यह योग वमन, घबराहट या गर्मी बिल्कुल नहीं करता और तीनों दोषों को निकालता है। ज्वर में भी हितकर है।

योग—शुद्ध जयपाल २ तो०, आमला २ तो० दोनों को मिला कर बारीक करें। और हरे आंवलों के रस में खरल करते हैं। कम सेकम ४-५ दिन पीसें। पीसने में यदि कमी रही तो मिचलाहट उत्पन्न करेगी। खरल करके चने बराबर गोलियां बनालें। १ गोली से १ और २ से २ दस्त आयेंगे। जितने दस्त लेने हों, उतनी ही गोलियां लें।

(२९४) दमा के लिए अक्सीर

(ह० मुहम्मद अब्दुलगनी साहब 'कैसर' द्वारा प्रदत्त)

योग—धतूरे का वृक्ष, आक का वृक्ष, बांसा जंगली, तम्बाकू, केले के पत्ते, मकई के अनाज का तुक्का। जो दाने निकालने पर सफेद रह जाता है। अपामार्ग, कटेरी प्रत्येक १ सेर लेकर उनमें नौशादर ८ तो०, नमक लाहौरी ८ तो०, मुलहटी १ तो० मिलाकर एक बड़े मटके में बन्द करके मन भर उपलों में फूँक दें और ठण्डा होने पर उसकी राख से विधि पूर्वक क्षार बनालें।

उपरोक्त क्षार ४ मा०, सकमोनिया ६ मा०, निंजीव मुनक्का ६ मा० काकड़ा सिंगी १ तोला, लोबान ३ मा०। इन सबको बारीक पीस कर कपड़ छान करके शीशी में भरलें एक से दो रत्ती तक मक्खन या मलाई में लपेट कर खिलाएँ। सप्ताह भर में ही आराम हो जाता है। कम से कम १ मास निरन्तर सेवन कराएँ।

(२९५) वायु गोला की अद्भुत औषधि

(ह० शाहनवाज व अल्ला दादसां द्वारा प्रदत्त)

लीद १ लेडा, हल्दी १ मा० दोनों को खूब घोटें और २॥ तो० पानी मिलाकर घोंट छान कर रोगिणी को

बताये बिना प्रातःकाल पिला दें। तत्काल वायुगोला रुक जाता है।

(२६६) जल परिवर्तन से बचने की विधि

प्रायः भिन्न देशों में भ्रमण करने वाले जल परिवर्तन के कारण विविध रोगों व कष्टों में फँस जाते हैं। यहाँ हम उनके लिए एक हितकर विधि लिखते हैं।

यात्रा को जाते समय अपने देश की २ सेर मिट्टी साथ ले जावें। और दूसरे स्थान पर पहुँचकर मिट्टी पात्र में पानी लेकर उसमें वह मिट्टी घोल दें और निथार कर उस पानी को पीएं। जभी पानी समाप्त हो तभी और डाल लिया करें। यही मिट्टी २-३ मास काम दे जायगी।

(२६७) कमर पीड़ा का उत्तम योग

(हि० चौ० मुहम्मद अब्दुल्ला साहब द्वारा प्रदत्त)

कमर की पीड़ा भी ऐसी कष्टप्रद होती है कि चलने फिरने से भी विवश कर देती है और इसको निरन्तर धारण करने वाली औषधियाँ बहुत कम हैं, हम यहाँ एक अक्सीर योग लिखते हैं।

एक व्यवहृत हांडी में मिट्टी की एक टिकिया बना कर रखदें। और उस टिकिया पर एक चीनी की प्याली रख दें तथा १ छटाँक लोबान बारीक पीस कर टिकिया

(२६६) उदर पीड़ा नाशक अर्क

भयंकर उदरशूल के दौरे से छटपटाते व्यक्ति के लिए अक्सीर

योग—कीकर के कांटे १ सेर, काला नमक सेर भर एक बड़े देग में डाल कर १४ सेर पानी डालें और चूल्हे पर चढ़ादें। आधा पानी जल जाने पर छान लें और बोतलें भरलें। शोरा पड़ने पर १-१ छटाँक दिन में ६ बार दें। फिर प्रतिदिन १ छ० प्रातः पिलाते रहें। १ बोतल सेवन से ही रोग मिट जायगा।

(३००) उदर शूल व कोष्ठबद्धताहारी चूर्ण

(डा० त्रिलोक नाथ अरोड़ा द्वारा प्रदत्त)

यह योग ही उदर रोगों में अतीव लाभदायक है।

योग—तिनकों रहित सनाय के पत्ते २ तो०, शुद्ध आंवलासार गन्धक १ तो०, सौंफ १ तो०, चीनी ७ तो० सबको चूर्ण बनालें।

मात्रा—४ से ८ मा० तक सोते समय रात को गर्म दूध से खिलाएँ। इससे बिना पीड़ा या मरोड़ के प्रातः २ दस्त खुलकर आ जायेंगे।

(३०१) बिच्छू दंश की अद्भुत टिकिया

आज मैं डा० रोधाराम जी के सौजन्य से डा०

सुन्दरसिंह मुल्तानी की विख्यात टिकिया का गुप्त योग प्राप्त करके आपको भेंट कर रहा हूँ।

योग—फिटकरी सफेद २ सेर, नौशादर ठीकरी ५-तोला, तूतिया, १० तो० पानी ३ छटांक। मिट्टी के पात्र में सबको डालकर पकावें। आग कोयलों की हो। लग-भग ३ घन्टे में सब चीजें पककर जमने योग हो जायंगी फिर हथेली पर तेल लगा कर टिकिया बनालें और चाहें तो मोहर भी लगाते जायं। आवश्यकता के समय टिकिया पानी से भिगोकर बिच्छू काटे स्थान पर लगादें। ५ मिनट में विष दूर हो जायेगा। भिड़, ततैया आदि के काटे को भी तत्काल आराम कर देती है। आँख दुखने पर आँख में लगाने से भी लाभ पहुँचाती है।

(३०२) बिच्छू का तात्कालिक अगद

यह दवा बाबू मनोहरलाल जैन इंजीनियर वर्षों मुफ्त बांटते रहे हैं। वही अपूर्व योग मैं आपको बताता हूँ।

योग—पोटाशियम परमैंगनेट, साइट्रिक एसिड, दोनों को आधी रत्ती लेकर दंशित स्थान पर रख कर ऊपर से पानी डालें। बूँद पड़ते ही उबाल आयेगा बस उसी समय धो दें, वरना छाला पड़ जायगा। तत्काल लाभकारी है।

(३०३) भस्म हरताल वरकिया

यह योग ह० डासूराम द्वारा प्रदत्त और २६ वर्ष से परीक्षित है । प्रत्येक ज्वर तथा कभी २ तो दिक के रोगी को सेवन कराने पर पूर्ण सफल हुआ । कभी निष्फल नहीं गया । इसका मूल्य स्वर्ण भस्म के बराबर होता है ।

योग—आध सेर फिटकरी का चूर्ण बनालें । फिर उसमें से १ छटांक फिटकरी कढ़ाई में डाल कर निर्वात स्थान पर आग रखें । जब फूल कर शुष्क हो तो उस पर हरताल वरकिया की १ तो० डली रखकर ऊपर से फिटकरी चूर्ण डाल कर डली छुपा दें । और नीचे तेज आग जलाएँ । जब ऊपर का चूर्ण पिघल कर बहने लगे तो और चूर्ण डाल दें ताकि डली खुलने न पाए । इसी प्रकार सारी फिटकरी समाप्त कर दें और आग तेज से तेज जलाते रहें और हवा भी बिल्कुल न होनी चाहिए । वरना भस्म कच्ची बनेगी । जब तमाम फिटकरी फूल कर शुष्क हो जाय तो ऊपर जलती हुई लकड़ी रखदें और यदि फिटकरी और न फूले तो उतार कर नीचे रखलें । ऊपर की फूली हुई फिटकरी चाकू से हटाकर भस्म निकाल लें जो सुखयाकूत से भी उत्तमवर्ण की होगी । उसे खरल करके शीशी में भर लें । ज्वर रोगी को एक तिनका भर

मक्खन में रखकर खिला दें, निश्चय ही आराम हो जायगा।

विशेष सूचना—यदि आँच की कमी या हवा के कारण कुछ भाग कच्चा पीत वर्ण का रह जाय तो उसे पृथक् करके पुनः उसी विधि से भस्म बनावें। लालभस्म शुद्ध होगी।

(३०४) ब्लेयर साहब की अद्भुत वटी

इंगलैंड की ये १४ गोलियाँ ॥।)॥ में मिलती हैं और आमवात् कटि पीड़ा आदि रोगों के लिए अचूक है।

मात्रा—२-२ गोलियाँ दिन में भोजनोपरान्त दें। अधिक कष्ट हो तो रात को भी दें। जब तक सूजन रहे बराबर देते रहें। जीर्ण ज्वर में २ सप्ताह सेवन कराएँ। सेवनकाल में कोष्टबद्धता न होने दें, एक गोली का योग यह है—काली त्रीकम पाउडर $2\frac{1}{20}$ ग्रेन, जली हुई फिट-करी $\frac{7}{20}$ ग्रेन। इसी हिसाब से चाहे जितनी गोलियाँ बनालें।

(३०५) सन्धिवात नाशक तैल

सरदार किशनसिंह पाकपटनी ने बताया कि मेरी भाभी २॥ वर्ष से इस रोग में ग्रस्त थी और चलने फिरने में भी असमर्थ थी। एक महाशय ने यही तेल दिया जिसके सप्ताह भर प्रयोग करने से ही वे स्वस्थ हो गईं।

अब तो वे पानी भरा घड़ा ऊपर छत पर ले जाया करती हैं। हमने तेल देने वाले सज्जन से बड़ी कठिनता पूर्वक १००) देकर उसका योग प्राप्त किया। और अनेक रोगियों पर परीक्षा करके सफल पाया।

योग—मेथीदाना १ सेर लेकर २४ सेर पानी में २४ घन्टे भिगोएँ फिर आग पर पकावें और ३ सेर पानी रह जाने पर कम्बल या बोरी के टुकड़े से छानलें। इस पानी में ३ पाव तिल का तेल और कुट कड़वी, सोंठ, बबूना का तेल प्रत्येक १-१ छटाँक जौ कूट करके मिलादें। तथा पुनः आग पर पकाएँ। और चम्मच से चलाते रहें, ताकि किनारों पर जल न जाय फिर तेल मात्र शेष रहने पर छान कर रखलें और रातके समय निर्वात् स्थान में आध घन्टा तक इस तेल की मालिश करें। ओढ़ कर सो जायं। मालिश के ४ घन्टे बाद तक पानी नहीं पीना चाहिए।

(३०६) भगन्दर नाशक चूर्ण

(स्व० ह० मुहम्मद साहब देवरिया)

रस कपूर ५ मा०, मुर्दासंग ६ मा०, सेलखड़ी १ तो० माजू १ नग, पपड़िया कत्था ४ मा० सबको बारीक पीस कर चूर्ण बनालें और भगन्दर पर लगाकर मल दिया करें।

(३०७) भगन्दर नाशक वटी

तीनों अजवाइन ३-३ मा०, अकरकरहा, छोटी इलायची, मैदा लकड़ी प्रत्येक ३-३ मा०, भिलावा २ नग, मोती ३ मा० सबको एक पोटली में बांधकर पाव भर मकोय-पत्र के रस में पकाओ। जब तमाम पानी जल कर गाढ़ा सा हो जाय तो निकाल कर पीस लो और निम्न विधि से शिंगरफ सत्व तैयार करके १॥ माशा मिलावें।

(३०८) सिंगरफ सत्व

३ तोला शिंगरफ बारीक पीसकर सराव में रखें और ऊपर चीनी का प्याला औंधा दें तथा कपरौटी करके प्रसिद्ध विधि से सत्व उड़ालें। २ पहर अग्नि देने से सत्व उड़ कर ऊपर जा लगेगा। इसमें से १॥ मा० सत्व लेकर उपरोक्त औषधियों में मिलालें और थोड़ा सा पुराना गुड़ मिलाकर बेर बराबर गोलियाँ बनालें। तथा १ गोली मलाई में लपेट कर खिलावें। अवश्य लाभ हो जायगा। बाहर से पूर्वोक्त चूर्ण मलते रहें तो अतिशीघ्र लाभ होगा।

(३०९) मलहम सुलेमानी

यह मलहम फोड़ा फुन्सी और बिवाई के लिए अति लाभकारी है, और कम पैसों में ही बन जाता है।

योग-राल ५ तो०, मुर्दासंग ३ मा०, तूतिया ३

मा०, छोटी इलायची का दाना ३ मा०, सबको अलग २ पीस कर मिलालें। फिर थोड़ा २ कड़वा तेल मिला कर खरल करते रहें, यहाँ तक कि १ छटाँक तेल समाप्त कर दें। फिर ठण्डा पानी मिलाकर खूब घोटें। जो फालतू पानी बचे, उसे गिराते जाएँ, और घोंटते जाएँ। मलहम फूल कर हरापन लिए सफेद हो जाएगी। यही मलहम तैयार है। मलहम को कपड़े पर लगाकर फोड़ों पर चिपकादें। तत्क्षण चिमट जाएगी। अत्युत्तम मलहम है।

(३१०) बसहरी

नख के पास निकलने वाली फुन्सी इतनी पीड़ा जनक होती है कि खाना पीना भी हराम कर देती है। इसके लिए तालावों के किनारे पाई जाने वाली इन्द्रायण बूटी पीस कर लेप करदें, ५ मिनट में चैन पड़ जायगा। किंतु फुन्सी में पीप पड़ने से पूर्व लगाने पर ही लाभ होता है।

वन गोभी को छाया में सुखाकर उसका क्षार बनालें, और आवश्यकता के समय १ रत्ती क्षार गर्म पानी से खिलादें और फिर इसका चमत्कार देखें। अनमोल योग है।

(ह० सैयद याक़ूब अली सा०)

(३१२) शोथ नाशक बटी

रेवन्द खताई मिर्च काली, सौंठ, पीपल, नौशादर, सुहागा, चिरायता, मकोय के बीज, गोखरू [illegible] मा०, अजवायन ६ मा० को बारीक पीस कर और [illegible] जने के पानी में खरल करके रत्ती २ की गोलियाँ बनावें।

मात्रा——एक से दो गोली [illegible] गावजवां व सौंफ ५ तो० के [illegible] । [illegible] शोथ दूर होकर पूर्ण लाभ हो जायगा।

(३१३) हिचकी का [illegible]

एक बड़ी इलायची को छिलके सहित [illegible] आधा पाव जल में उबालें। जब आधा पानी रह जाय, तो ठंडा करके पिलाएँ। पीते ही हिचकी बन्द हो जायेगी।

(३१४) विषम ज्वरहारी सन्यासी [illegible]

यह योग हमारा सैकड़ों बार का अनुभूत है। पसीना लाकर उसी दिन ज्वर उतार देता है।

(३१५) गर्भ रक्षक वटिका

योग---कस्तूरी १ मा०, वंशलोचन ३ मा०, केशर ४ मा०, गुलाबपुष्प का जीरा ४ मा०, सफेद जीरा ४-मा०, तुलसीदल २ तो०, जावित्री २ तो०, धतूरे के बीज १ नग, सहदेई पत्र ४ तो०, सबको बारीक पीस कर रत्ती २ की गोलियाँ बनालें और छाया में सुखाकर रख लें।

सेवन विधि—गर्भ स्थापना का निश्चय हो जाने पर नित्य २-२ गोली प्रातःकाल पानी के साथ ४० दिन तक खिलायें, फिर बालक जन्म तक १-१ गोली खिलाते रहें। और बालक को आधी गोली प्रति दिन जल में पीस कर तब तक खिलाते रहें। जब तक वह माँ का दूध न छोड़े। २॥ साल में ६ तो० गोलियाँ व्यय होती हैं, किंतु सन्तान रक्षा के लिए कोई बड़ी बात तो नहीं।

लाभ—गर्भपात कदापि न होगा, बालक स्वस्थ रहता है। जिनके बालक अठरा के कारण मर जाते हैं, उनके लिए अमृत है।

(३१६) अकसीर रेचन-वटी

(डा० गणपति सिंह वर्मा जर्नलिस्ट द्वारा प्रदत्त)

आजवायन, हरड़ की छाल, तिरकी, सनाय प्रत्येक ५ तो०, सैंधा नमक २ तो०, सबको कूट कर कून्डे में

डालें और ५ सेर इन्द्रायण का रस खरल करके सुखा दें। फिर जंगली बेर बराबर गोलियाँ बनालें। तथा एक गोली रात को गर्म पानी से दें। एक गोली से दो और दो से चार दस्त प्रातः खुलकर आयेंगे।

(३१७) भारतीय केश-कल्प

(अ० सहजसिंह, कलकत्ता द्वारा प्रेषित)

योग—बिना छिद्र के माजूफल ३ छटाँक, संगरासख ५ तोला, कमरकश २ तोला, नौशादर ८ माशा, शिलाजीत ४ माशा, पहले माजू गर्म रेत में भूनलें यहाँ तक कि कोयला हो जावें। फिर रेत छानकर माजुओं को बर्तन में बन्द करदें और ठन्डे होने पर पीसलें। शेष चीजों को भी अलग २ पीस कर मिलालें। बस खिजाब बन गया।

सेवन विधि—बालों को साबुन से धोकर सुखालें और खिजाब को पानी में लेई सी बनाकर बालों पर लगावें। सूखने पर पुनः साबुन धोकर तेल लगालें। बाल काले भंवरे जैसे हो जायेंगे। शरीर पर कहीं दाग़ नहीं पड़ेगा। इसके जैसा उत्तम खिजाब भारत में दूसरा नहीं है।

(३१८) फिनायल बनाने की विधि

जिसे बनाने की फीस विलायत वाले १०००) रु० लेते थे, एक योग प्रथम भाग में भी लिखा गया था, किंतु उसके कुछ द्रव्य हमारे देश में कम मिलते हैं अतः लोगों को विशेष लाभ न हुआ। इस योग की वस्तुएँ सर्व प्राप्य हैं।

योग—साधारण राल १८ पौंड, सोडा कास्टिक ४ औं०, कार्बोलिक एसिड ७ गैलन, पानी २॥ गैलन।

पहिले सोडाकास्टिक व पानी को लोहे के बर्तन में डाल कर हल करलें, फिर उसमें राल पीस कर डाल दें और उबालते जायें, जब तक कि तमाम हल न हो जाय। ध्यान रहे कि आग बहुत अधिक न हो और बर्तन भी बड़ा लेना चाहिये कि जिससे उबल कर नीचे न गिरने पावे, क्योंकि झाग अधिक निकलता है। अतः इस कार्य के लिए सतर्कता की आवश्यकता है। जब राल हल हो जावे तो नीचे उतार कर उसमें ४ गैलन कार्बोलिक एसिड डाल दें और खूब हिलादें। फिर मन्द २ आग पर रखदें और गाढ़ा होने दें। जैसी फिनायल बनाना हो वैसा ही गाढ़ा रहने दें। फिर नीचे उतार कर शेष ३ गैलन कार्बोलिक और मिलादें और ठण्डा करके दूसरे दिन बोतलों में या टीन में भर कर लेबिल लगादें। यही उत्तम कोटि का फिनायल है।

सूचना–पानी Coalgas कोलगैस का लेना चाहिए। उसके टैंक के ऊपर जो पानी भरा रहता है, उसमें गैस हल होती है और व्यर्थ समझ कर गिरा दिया जाता है। इस पानी के मिलाने से क्रियाजूट मिलाने की आवश्यकता नहीं रहती।

चिकित्सा मञ्जूषा

इसमें ऐसे २ योग अंकित किए जाते हैं, जिनका जवाब मिलना कठिन है। हर साधारण व्यक्ति केवल इन्हीं योगों के सहारे अपूर्व ख्याति प्राप्त कर सकता है।

(३१६) लाल शर्बत

यह फ्रांस के सुप्रसिद्ध लाल शर्बत का योग है जो कि गांव २ में प्रशंसित और प्रचलित है।

योग–कैल्शियम हाई पोस्फास्फेट ८० ग्रेन, टिंक्चर कोचनील ३० बूंद, सादा शर्बत ४ औंस। सबको मिश्रित करके भली भांति हिलायें।

मात्रा–१-१ चम्मच प्रातः सायं भोजन के पश्चात् यह न केवल खाँसी वरन छाती और फेफड़े के प्रत्येक रोगों को अद्भुत लाभ पहुँचाता है। चिरकाल तक सेवन करने से धीरे २ लाभ होता है।

(३२०) अकसीर मोमयायी

यह वस्तु भी अनेक औषधालयों से प्रचुर मात्रा में निकल कर अपने तत्कालिक प्रभावों से प्रशंसित हो चुकी है।

योग—शिलाजीत असली ५ तो०, घी १० तो० दोनों को ८ घन्टा लगातार खरल करके डिब्बों में भरलें और ४ रत्ती से १ मा० तक दूध के साथ सेवन करायें। प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, कटि पीड़ा व चोट आदि के लिए अक्सीर है। शिलाजीत विस्वस्त स्थान से लें नकली में ये गुण नहीं होते।

(३२१) चमत्कारी वटी

हमारे प्रान्त के एक हकीम जी के पिता शाही हकीम और सन्यासी थे, वे ही इन गोलियों को बनाते थे जिनसे आप १८ सेर दूध पचा सकते हैं। बड़ी ही शक्तिवर्धक और रक्तोत्पादक गोलियाँ हैं। ८ गोलियों के सेवन से ही अत्यधिक रक्त उत्पन्न होकर पुंसक शक्ति बढ़ जाती है। हकीम जी २) प्रति गोली देते थे। पहिले इनमें पड़ने वाले तेजाब और तेल की निर्माण विधि लिखते हैं।

(३२२) तेजाब साबुन

देशी साबुन को बारीक कुतर कर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। तेजाब निकालने की विशेष प्रकार की

शीशी होती है, वह लें। साबुन देशी विधि से सज्जी आदि से बना हुआ लें।

(३२३) कुचले का तेल

यथावश्यक कुचले लेकर ५-६ दिन पानी में भिगोएँ रख कर बारीक करके पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। यही तैल इन गोलियों में डाला जाता है।

शिंगरफ की २ तो० डली लेकर उस पर रेशम के तार लपेट दें और फिर एक इन्द्रायण फल लेकर उसमें एक छोटा सा टुकड़ा चाकू से काट कर जुदा कर लें और शिंगरफ की डली उसमें रखकर ऊपर वह कटा हुआ टुकड़ा उसमें लगाकर बन्द करदें। फिर पाव भर उपलों के चूरे में उस फल को रखकर निर्वात् स्थान में आग दें। इसी प्रकार १०० इन्द्रायण के फलों में रख २ कर पाव २ भर चूरे की आग देते रहें। फिर उस डली को निकाल कर पीतल की कटोरी में और कटोरी कढ़ाई में रख कर चूल्हे पर रखें और हरे पोदीने के रस का चोया देते जायं। यहाँ तक कि पूरा सेर भर रस शुष्क हो जाय।

फिर शिंगरफ २ तो०, अफीम २ तो० को साबुन के तेजाब में हल करके मलहमवत् करके उक्त शिंगरफ के टुकड़े पर लेप करदें और उस पर गुंदा हुआ आटा चढ़ा कर गोला सा बनालें, और गोले को किसी तार से बाँध

कर मिट्टी की हांडी में पाव भर तिल तैल डालकर उसमें लटकावें और हांडी को मन्द २ आँच पर पकावें। इसी प्रकार ३ बार करें, गोला पकने पर निकाल लिया करें। अब यह शिंगरफ भस्म हो गई।

इस भस्म को भली भांति साफ करके समभाग असली, हींग, दारचीनी, पुराना गुड़, बड़ी इलायची के बीज, कुचले का तेल मिलाकर खरल करें और छोटे बेर के समान गोलियाँ बनालें।

मात्रा—१ गोली दूध के साथ। जितना भी दूध पियेंगे, सब पच जायेगा। एक बार में २ सेर दूध पिलायें। थोड़ी देर में जब फिर प्यास लगे, तो फिर पिलायें। इसी प्रकार बार-बार पिलाते रहें। सेवन काल में घी भी खूब खाएँ अत्यधिक वाजीकरण, श्वास रोग हारी, व आमवात नाशक वटी है।

(३२४) सुधा सिन्धु का योग

लीजिए आपको हम इस सुविख्यात औषधि का योग भी बताये देते हैं, जिसे भारत में १८००० एजेण्ट बेच रहे हैं। भला लाखों रुपये का फायदा पहुँचाने वाली दवा का योग प्राप्त कर लेना कोई खेल है, लेकिन ईश्वर की लीला कि हमें किसी प्रकार सफलता मिल ही गई और वही योग आपको भेंट करता हूँ।

योग–स्प्रिट ईथरनाइट्रोसी १० बूँद, क्लोरोडीन २८ बूँद, टिंक्चर कार्डीमय १५ बूँद, स्प्रिट कैम्फूर ५ बूँद। सबको एक शीशी में मिश्रित करके रखलें। दवा बन गई।

मात्रा–१ से ३० बूँद तक आयु के अनुसार। खाँसी, दमा उदरशूल विशूचिका आदि के लिए परम गुणकारी है।

(३२५) शारीरिक रसायन

यह औषधि पक्वाशय की क्रिया को सुधार कर भूख को बढ़ाती है। घी, दूध, मक्खन खाने की इच्छा होती है। और भोजन को भली भांति पचाकर रक्त बनाती है हृदय मस्तिष्क व पट्ठों को शक्ति देती है और गिनती के दिनों में ही दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति को भी पुष्ट बना देती है।

योग–कुचला कटुता रहित व घी में भुना हुआ ३ तो०, सोंठ, पीपल, काली मिर्च, तज, सुहागा, १-१ तो० सबको सूक्ष्म करके चूर्ण बनालें और उससे ६ गुना शहद मिलाकर अवलेह बनालें और ४ से ६ माशा तक दूध के साथ दें। सेवन काल में दूध घी खूब खायें। वजन बढ़ जाएगा, चेहरे की रंगत निखर जाती है। अशक्तता दूर करके शक्तिशाली बनाती है, पाचन शक्ति को बढ़ाती है। स्त्री पुरुष सबके लिए समान लाभकारी है।

कुचला कटुता रहित करने की विधि

यथावश्यक कुचला कुएँ के जल में भिगोदें, और प्रति दिन नया पानी बदल दें। नरम होने पर कैंची से चावल जैसे छोटे-छोटे टुकड़े काट कर पुनः भिगोदें, ४० दिन में इसकी कटुता दूर हो जायेगी।

(३२६) असंख्य रोगों के लिए रसायनिक तेल रोगन दफली

यह तेल अंजुमन खादिमुल हिकमत वालों का दर्प्य आविष्कार है। इसकी एक शीशी अनेक रोगों के लिए अक्सीर है। मात्रा भी अल्प है, बाह्य व आन्तरिक दोनों प्रकार से प्रयोग की जाती है। हर व्यक्ति को पास रखनी चाहिए। कम से कम चिकित्सकों की मंजूषा में तो होनी परमावश्यक है। हमारी शत शौ अनुभूति और अत्यधिक लाभकारी है।

योग—श्वेत कनेर की जड़ की छाल, रक्त कनेर की जड़ की छाल, १-१ छटांक ताजा लेकर कुचल कर ११ सेर दूध में पकायें और फिर दही जमा कर मक्खन निकाललें। फिर इस मक्खन को थोड़ा-थोड़ा आक का दूध मिलाकर खरल करते रहें। यहाँ तक कि १० तोला दूध मिलादें। इसके बाद धतूरे के पत्तों का रस १० तोला, तिल तेल १०

तो० में मिलाकर आग पर पकावें; और तेल मात्र शेष रहने पर छान कर इस तेल को मक्खन वाली दवा में मिला कर पुनः आग पर रखें और तेल मात्र शेष रह जाने पर ठन्डा करके व छान कर शीशी में भर लें। इसकी सेवन विधि भिन्न-भिन्न रोगों के अनुसार लिखी जाती है।

(३२७) मस्तिष्क रोगों के लिए

जैसे कि अपस्मार, सूर्यवर्त, बन्द नजला, आदि के लिए कायफल के सूक्ष्म चूर्ण में मिलाकर या वैसे ही नस्य देने से लाभ हो जाता है।

(३२८) नेत्र रोग

—इस तेल को दीपक में भर कर बत्ती जलाएँ और उससे काजल तैयार करके आँखों में डालें। गुहाँजनी व पलकों के बाल उगाने में अति लाभप्रद है।

(३२९) कान के रोगों में

—जैसे कि कर्ण पीड़ा, पीप आना, बधिरता आदि में थोड़ा सा तेल गर्म करके २-२ बूँद कानों में डाला करें।

(३३०) रक्त-विकारों के लिए

यथा दद्रु, फोड़े-फुन्सी आदि के ऊपर लगावें और १ से ३ बूंद तक चीनी या हलुवे में मिलाकर खिलाएँ। कुछ दिनों तक सेवन करने से रक्त शुद्ध होकर रोग मिट जायगा। कुष्ट तक के लिए लाभदायक है।

(३३१) उदर-रोगों में

यथा प्लीहा यकृतोदर, शोथ, वायुगोला, पेट के कीड़े विशूचिका आदि के लिए २ से ३ बूँद बताशे में खिला कर ऊपर से शर्बत पिलादें। या यकृत में अर्क मकोय अथवा कासनी। हैजे में अर्क पोदीना से दें।

(३३२) अर्द्धाङ्ग व अर्दित में

मालिश करें और खिलावें।

(३३३) अर्श (बवासीर) में

दो बूँद औषधि प्रति दिन मक्खन या मलाई में खिलावें और मस्सों पर लगाते रहने से शीघ्र ही आराम हो जाता है।

(३३४) ज्वरों में

यथा कम्प ज्वर, तृतीयक, चौथिया आदि ज्वरों में ज्वरागमन से २ घन्टा पूर्व खिला देने से ज्वर शर्तिया रुक जाता है।

(३३५) घाव में

रोगन दफली १ भाग, तिल तैल ३ भाग। दोनों को मिश्रित करके घावों पर कुछ दिन लगाते रहें। बिगड़े से बिगड़े घाव भी भर जाते हैं।

(३३६) हर प्रकार की पीड़ा व सूजन को भी लाभदायक है। सूजन पर मालिश करने से या तो दब जायगी या फूट जाती है।

(३३७) विषैले डंक के लिए

भिड़, ततैया, मधुमक्खी व बिच्छू आदि के डंक मारे स्थान पर इसे मल देने से पीड़ा तुरन्त दूर हो जाती है और सूजन भी नहीं होने पाती।

(३३८) उत्तम तिला

हस्त मैथुन वाले के लिए यह उत्तम तिला भी है। रात को सींवन सुपारी छोड़ कर शेष इन्द्रिय पर मालिश करके पान का पत्ता बांध दें और प्रातः खोलकर गर्म पानी व साबुन से धो डालें। इसी प्रकार मालिश करते रहें अपूर्व शक्ति आ जाती है।

(३३९) पथरी

पथरी चाहे वृक्क में हो चाहे मसाने में, इसकी २-३ बूँद यवक्षार में रखकर खिलाने से व ऊपर मालिश करते रहने से कुछ ही दिनों में टूट कर निकल जायगी।

(३४०) योगराज गुग्गुल विशेष

यह आयुर्वेद का दर्प्य योग है, जो कि समस्त वात रोगों के लिए अचूक रामबाण है। चिकित्सा ग्रन्थों में इसके भिन्न २ योग मिलते हैं, किन्तु हम अपने दृष्टि-कोण के अनुसार सर्वोत्तम योग लिखते हैं। यह इतनी उत्तम वस्तु है कि हर वैद्य के पास इसका होना परमावश्यक है।

योग—सौंठ, पीपल, पीपलामूल चित्रक के मूल की छाल, काला जीरा, सफेद जीरा, सरसों सफेद, अजमोद, भुनी हुई हींग, संभालू के बीज, वायविडिङ्ग, इन्द्र जौ मीठे, गज पीपल, कुटकी, अतीस, वच, भांडगी, मरोड़फली, प्रत्येक ९ माशा। त्रिफला सब औषधियों के बराबर। सब औषधियों को अलग २ कूट-छानकर मिलालें। इस चूर्ण में समभाग शुद्ध गुग्गुल लेकर हवन दस्ते को घी से चुपड़कर उसमें डालकर कूटें। यहां तक कि १ लाख चोटें मारें, अन्यथा ५० हजार चोटें तो अवश्य ही मारें। फिर पिसी हुई दवाइयों का चूर्ण डाल कर कूटते जावें। चूर्ण थोड़ा २ डालें, जब सब दवा एक जान हो जाय तो निम्न भस्में मिलाकर पुनः कूटें। खूब मिल जाने पर १० हजार चोटें और मारें और तब १-१ रत्ती की गोलियां घृत से हाथ चुपड़ कर बनालें, इसमें पड़ने वाली भस्में:—वंग भस्म,

रजत भस्म, फौलाद भस्म. नागभस्म, मंडूर भस्म, कृष्णाभ्रक भस्म, रस सिंदूर प्रत्येक ८ तोला।

यह औषधि वातरोगों के अतिरिक्त नपुंसकता के लिए भी अक्सीर है। प्रत्येक वैद्य उचित अनुपान से सेवन करा सकता है, अन्यथा २-२ गोली प्रातः सायं जल या दूध से दें। आमवात, रींघनवाय, निमोनिया, कटि पीड़ा, खाँसी, श्वास, प्रतिस्याय, अर्द्धाङ्ग अर्दित, अजीर्ण, शिर शूल, प्रमेह आदि के लिए अपूर्व लाभदायक है।

अनुपान स्वयं भी निश्चय कर सकते हैं--आमवात आदि में २ तो० गिलोयक्वाथ से प्रमेह में वट कोंपलों या दूध से, रक्त दोष में मुंडी बूटी या चिरायता अथवा निम्ब छाल के क्वाथ से। उदर शूल में गुलकन्द पोदीना सौंफ आदि के क्वाथ से इत्यादि २

गुग्गुल का शुद्धिकरण

एक सेर त्रिफला १६ सेर पानी में उबालें और ४ सेर पानी शेष रहने पर छानकर उसमें १ सेर गुग्गुल साफ कपड़े में ढीली पोटली बाँधकर त्रिफला क्वाथ के बीचोंबीच लटका कर मंद-मंद आँच पर पकावें। कुछ देर में गुग्गुल छनकर क्वाथ में चला जायगा। उस समय पोटली को दबाकर निचोड़ दें। ऐसा करने से खराब गुग्गुल पोटली में रह जायगा। उसे फेंक दें और नीचे बराबर आग जलाते

रहें, जब सारा पानी जलकर गुग्गुल मात्र रह जाय तो निकालकर रख लें। यही विशुद्ध गुग्गुल है किन्तु उसमें पानी का अंशमात्र नहीं रहना चाहिए।

विशेष सूचना-१-भस्में बनाने की विधियाँ 'देहाती अनुभूत योग संग्रह' प्रथम भाग व इस द्वितीय भाग में लिखी जा चुकी हैं, वहाँ देखने का कष्ट करें। रस सिंदूर बनाने की विधि तनिक कठिन है, अस्तु किसी विश्वस्त औषधालय से खरीद लें।

२—प्रथम भाग में वर्णित 'ठंडक' औषधि समस्त गर्मी के रोगों की एक मात्र रसायन है। उसे तथा उक्त गुग्गुलवटी पास रखने वाला व्यक्ति सैकड़ों रोगों की सफल चिकित्सा कर सकता है। चाहें तो दोनों औषधियाँ हम से मंगा लें।

पाउडर ऑफ आर्सेनिक की समकक्षीय औषधि 'पाउडर ऑफ कोटन'

प्रथम भाग में वर्णित 'पाउडर आफ आर्सेनिक' जिन्होंने बनाकर प्रयोग किया होगा, उसकी अपूर्व सफलता से निश्चय ही मुग्ध हो गए होंगे। लीजिए पाठको! हम आपको उस जैसा ही चमत्कारी एक योग इस भाग में भी भेंट करते हैं। विषों को भी यदि वैद्यक विधि से उपयोग

किया जाय तो अमृत की भांति लाभप्रद सिद्ध होते हैं, और हम तो चिरकाल से संखिया आदि विषों को प्रयोग कराने के अनुभव कर रहे हैं। यहां हम जयपाल का एक उत्तम और अनुभूत योग पेश कर रहे हैं।

(३४२) पाउडर ऑफ क्रोटन नं० १

जयपाल ३ मा०, छोटी इलायची के बीज १ तो०। दोनों को मिलाकर खरल में बारीक पीसें। जब सूक्ष्म हो जाय, तो १ तो० दानेदार चीनी मिलाकर ६ घंटे लगातार खरल करें यह नं० १ होगा। इस प्रकार जयपाल शुद्ध भी हो जाता है, यह अत्युत्तम जुलाब है। वमन, घबराहट, बेचैनी, मरोड़, प्रवाहिका आदि कुछ नहीं होता। आराम से दस्त आ जाया करते हैं। मात्रा—१ से २ माशा तक। समोष्ण जल के साथ दें।

(३४३) पाउडर ऑफ क्रोटन नं० २

पाउडर आफ क्रोटन नं० १ एक माशा को ५ तो० दानेदार चीनी में मिलाकर ८ घंटे बारीक पीसें, और अति सूक्ष्म हो जाने पर शीशी में सुरक्षित रखें। यह नं० २ सेवन नहीं कराया जाता। इस पर नं० २ की चिट लगा कर रख दें।

(३४४) पाउडर ऑफ क्रोटन नं० ३

पाउडर ऑफ क्रोटन नं० २ एक रत्ती, को सफेद

बोतल डालकर उसको अर्क गावजवां से भर दें और २-३ मिनट तक खूब जोर से हिलाएँ, ताकि भली प्रकार मिल जावे।

सेवन-विधि—यह अर्क अनेक रोगों पर परम लाभदायक है। जो महाशय होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति की फिलास्फी को नहीं समझते, वे इसके लाभों से वंचित रहेंगे। उनकी दृष्टि में जयपाल जैसी रेचक वस्तु अतिसार व प्रवाहिका को रोकने के लिए लाभदायक कैसे हो सकती है। चूंकि इस प्रस्ताव का विषय फिलास्फियों को समझाने की आज्ञा नहीं देता अस्तु इशारा ही काफी है कि वस्तु बड़े काम की है।

(३४५) अतिसार और प्रवाहिका

जिन रोगियों के अतिसार व प्रवाहिका की ऐसी दशा हो कि बार २ इच्छा होकर दस्त पानीवत् आना, अथवा रक्त आता हो, तो इस अर्क की ३-३ माशा की मात्रा ३-३ घन्टे के अन्तर से देते रहें, ईश्वर कृपा से तत्काल आराम हो जायगा। अनेक बार का अनुभूत है।

(३४६) उदर शूल में

यदि उदर में नाभि के नीचे दर्द हो और किसी प्रकार भी दूर होने में न आता हो, उपरोक्त विधि से सेवन करने पर निश्चय ही आराम हो जायगा।

(३४७) वमन में

हर १५ मिनट उपरान्त १ माशा अर्क पिलाने से वमन बन्द हो जायगी और जी मिचलाना भी दूर हो जायगा।

(३४८) विषम ज्वर में

जबकि मलेरिया ज्वर में वमन आती हो, जी घब-राता हो, तो उसे दूर करने के लिए विशेष औषधि है।

(३४९) बारी ज्वर में

ज्वरागमन से पूर्व १-१ घन्टे के अन्तर से ३ मात्राएँ दें। बारी का ज्वर रुक जाता है। अनेक बार का परीक्षित है।

(३५०) दुर्बलता

ज्वर के पश्चात् रोगी की दुर्बलता दूर करने के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल ३ मा० सेवन कराते रहें, कुछ ही दिनों में शरीर पुष्ट व शक्ति सम्पन्न हो जायगा।

(३५१) आमाशय की दुर्बलता

भूख न लगना, कोष्ठबद्धता आदि के लिए भी अति लाभकारी है। इसके गुणों का पूरा परिचय तो परीक्षा करने पर ही आप जान सकेंगे।

(३५२) भीमसेनी कपूर नं० १

यह योग प्रथम भाग में लिखने से रह गया था। अतः यहाँ एक के बजाय दो विधियाँ लिखी जाती हैं। बनाकर लाभ उठावें।

योग—चन्दन सफेद, अगर, समुद्र झाग, कंकोल, केशर, बड़ी इलायची के बीज, इतर चमेली असली, इतरखस प्रत्येक ४ तो०, नागरमोथा १ तो०, शीतल चीनी, जीरा सफेद, बालछड़, लौंग, कस्तूरी, नैपाली जायफल, जावित्री, इत्र गुलाब प्रत्येक दो माशा, देशी कपूर ८ माशा।

निर्माण विधि—समस्त द्रव्यों को कूटकर सूक्ष्म पीस लें और इत्रों में मिलालें और इसमें से ५ तो० की टिकिया बनाकर कांसे की थाली में रखें और उसपर कांसे का कटोरा उलटा रखकर उसका मुँह गेहूँ के आटे से बंद करके थाली को चूल्हे पर चढ़ाएँ और घृत का दीप नीचे जलाएँ। दीपक में अंगुली के बराबर मोटी बत्ती हो। इस प्रकार ४ घंटे तक दीपक जलाएँ। फिर बुझाकर थाली ठंडी होने पर कटोरे को उतार कर उसमें सफेद २ लगे हुए सत्व को इकट्ठा करके शीशी में रखें। यही भीमसेनी कपूर है। यह योग नेत्र रोगों में सबसे अधिक हितकर है।

सूचना—बाजारू भीमसेनी कपूर कदापि न लें वह सस्ता किन्तु नकली होता है।

(३५३) भीमसेनी नं० २

यह दूसरे नम्बर का है, किन्तु बाजारू भीमसेनी कपूर से चौगुना उत्तम है। गुणों में किसी भांति कम नहीं।

योग—कपूर ३ तो०, चन्दन सफेद घिसा हुआ, शीतल चीनी, शोरा, नौशादर प्रत्येक ३-३ तोला। सब को दिन भर केले की जड़ के रस में खरल करके उपरोक्त विधि से सत्व उड़ालें।

॥ समाप्त ॥

वी० पी० द्वारा पुस्तक मंगाने का पता
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : २००३०

नाड़ी ज्ञान तरंगिणी——अनुपम तरंगिणी सहित [भाषा टीका]

इस पुस्तक की मदद से हर एक मनुष्य नाड़ी को देखकर कह सकता है कि बीमार को क्या रोग है और उसने कैसी चीज सेवन की। नाड़ी परीक्षा के बगैर वैद्य और हकीम भी कुछ नहीं बता सकते। पुराने जमाने में आयुर्वेद एवं चिकित्सा-शास्त्र सीखने से पहले नाड़ी ज्ञान सिखाया जाता था। इसलिए हमारे भारत में बड़े धुरन्धर चिकित्सक हो चुके हैं। मूल्य केवल १।।) रु० डाक महसूल १) अलग।

व्यायाम शिक्षा [सचित्र]

हमारी पुस्तक में ऐसे व्यायाम बतलाए गये हैं जिनके द्वारा मनुष्य न तो थक सकता है और न ही उसे कुछ भार मालूम होता है। सभी व्यायाम केवल शरीर के भिन्न २ भागों के संचालन से ही होते हैं।

(२) इन तमाम व्यायामों में समय भी कम लगता है हर एक मनुष्य नित्य केवल २०-२५ मिनट करके अपने शरीर को यथेष्ट व प्रभावशाली बना सकता है। (३) इस पुस्तक में शरीर के सभी अङ्गों के लिए व्यायाम दिए गए हैं। (४) इन व्यायामों के करने से छोटे छोटे सभी रोग दूर हो जाते हैं। पाचन शक्ति तो स्वप्न में भी खराब नहीं रहती। सारांश यह है कि सारे व्यायाम सुगम और कम समय तथा कम परिश्रम कम स्थान और सरलता के साथ किए जाने वाले हैं, ११० चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल २।।) डाक खर्च १) अलग।

योग आसन——[सम्पादक—रामकुमार प्रभाकर साहित्य].

इस पुस्तक में व्यायाम के ८४ आसनों के कायदे, कौन २ आसन किस अवस्था में करने चाहियें और व्यायाम करने से क्या क्या लाभ होते हैं और कौनसा आसन कौनी बीमारी को दूर करता है, यह सब बातें ८४ आसनों के चित्र देकर बहुत ही सरल रीति से बताई गई है। हम डंके की चोट से कह सकते हैं कि रोजाना योग आसन करने से मनुष्य कभी बीमार नहीं हो सकता। मू० २) डाक खर्च सहित

पता——देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६